Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24 website- www.dvpnews.in रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 264 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शनिवार 12 अप्रैल 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रुपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

आज युग अर्थमय हो गया है, इसलिये विकास का क्रम रुक गया है।

This era has become money-oriented hence its sequential.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

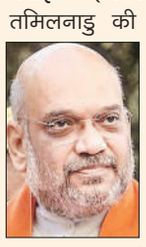

तमिलनाडु में बीजेपी-एआईएडीएमके गठबंधन का ऐलान, अमित शाह बोले- एनडीए को मिलेगी मजबूती

चेन्नई (विश्व परिवार)। तमिलनाडु की राजनीति में बड़ा फेरबदल होते हुए नजर आ रहा है.भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई को पद से हटाए जाने के तुरंत बाद, राज्य की प्रमुख क्षेत्रीय पार्टी AIADMK (अन्नाद्रमुक) के राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (NDA) में वापसी का ऐलान भी हो गया है केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, आज AIADMK और भाजपा के नेताओं ने मिलकर तय किया है कि आने वाला तमिलनाडु विधानसभा चुनाव ,द्भष्टस्न्न, भाजपा और सभी साथी दल मिलकर NDA के रूप में एक साथ लड़ेंगे। तमिलनाडु विधानसभा चुनावों के लिए एनडीए गठबंधन पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, ये चुनाव राष्ट्रीय स्तर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में और राज्य स्तर पर ,द्भष्टस्न्न नेता एडप्पादी के. पलानीस्वामी के नेतृत्व में लड़े जाएंगे। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, NEET और परिसीमन का मुद्दा ये(विपक्ष) लोग ध्यान भटकाने के लिए खड़ा कर रहे हैं। तमिलनाडु विधानसभा चुनावों के लिए NDA गठबंधन पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा, AIADMK की कोई शर्त और मांग नहीं है।

मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने प्रदेश के पहले सेमीकंडक्टर यूनिट का किया भूमिपूजन

1,143 करोड़ रुपए की लागत से संयंत्र होगा स्थापित, सैकड़ों लोगों को मिलेगा रोजगार का अवसर

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज नवा रायपुर में देश की प्रसिद्ध सेमीकंडक्टर निर्माता कंपनी पोलीमैटेक इलेक्ट्रॉनिक्स प्राइवेट लिमिटेड के प्लांट की आधारशिला रखी। यह कंपनी सेमीकंडक्टर चिप बनाने वाली अग्रणी कंपनियों में से एक है, जो छत्तीसगढ़ में 1,143 करोड़ रुपये की लागत से एक बड़ा कारखाना स्थापित करेगी। डेढ़ लाख वर्ग फीट में बनने वाला यह प्लांट वर्ष 2030 तक 10 अरब चिप्स तैयार करेगा, जिनका उपयोग टेलीकॉम, 6जी/7जी, लैपटॉप और पावर इलेक्ट्रॉनिक्स में किया जाएगा। इस प्लांट की स्थापना से स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर मिलेंगे।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने अपने संबोधन में कहा कि यह हम सभी के लिए गर्व का क्षण है कि छत्तीसगढ़ में पहले सेमीकंडक्टर संयंत्र की स्थापना का भूमिपूजन हुआ है। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ की नई औद्योगिक नीति में सेमीकंडक्टर उद्योग को

● एनआरडीए ने 45 दिनों के भीतर सेक्टर-5 में डेढ़ लाख वर्ग फीट भूमि का किया आबंटन

विशेष प्रोत्साहन दिए गए हैं, जिससे निश्चित रूप से कंपनी को यहां निवेश में सफलता मिलेगी। उन्होंने कहा कि विश्व के जो भी देश विकसित हुए हैं, उन्होंने तकनीक के क्षेत्र में मेहनत की है, अनुसंधान किया है और ऐसा वातावरण बनाया है जिससे तेज़ी से तकनीकी प्रगति संभव हो पाई। अब 6जी और 7जी तकनीक भी आ रही है और मुझे खुशी है कि इनके लिए आवश्यक चिप्स हमारे देश में ही तैयार होंगे, और नवा रायपुर, अटल नगर में हमारे इंजीनियर इन्हें बनाएंगे।

मुख्यमंत्री ने बताया कि पिछले वर्ष दिसंबर में दिल्ली में आयोजित एक इंवेस्टर्स कनेक्ट प्रोग्राम में राज्य के अधिकारियों की मुलाकात पोलीमैटेक के प्रबंधन से हुई थी और उसी समय कंपनी ने छत्तीसगढ़ में निवेश की इच्छा जताई थी।

उन्होंने कहा कि बहुत कम

● पोलीमैटेक कंपनी ने 10 हजार करोड़ रुपए के अतिरिक्त निवेश का दिया छत्तीसगढ़ को प्रस्ताव

समय में उद्योग विभाग और एनआरडीए ने कंपनी के लिए नवा रायपुर के सेक्टर-5 में डेढ़ लाख वर्ग फीट भूमि उपलब्ध कराई। एनआरडीए ने 45 दिनों में टेंडर प्रक्रिया पूरी कर भूमि आबंटित की और 25 दिनों से कम समय में लीज डीड पंजीकरण का कार्य भी सम्पन्न हुआ।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह पहल विकसित भारत के सपने को साकार करने हेतु विकसित छत्तीसगढ़ के निर्माण की दिशा में अत्यंत कारगर साबित होगी। उन्होंने कहा कि नवा रायपुर निश्चित ही छत्तीसगढ़ की सिलिकॉन वैली के रूप में उभरेगा, और इसकी शुरुआत आज के भूमिपूजन से हो चुकी है। इस दौरान मुख्यमंत्री ने इस संयंत्र में कार्य करने वाले युवाओं को नियुक्ति पत्र भी अपने हाथों से प्रदान किए।

भूमिपूजन अवसर पर

नई औद्योगिक नीति से नई संभावनाओं का निर्माण, नवा रायपुर को बनाएंगे छत्तीसगढ़ की सिलिकॉन वैली : साय

पोलीमैटेक कंपनी के एमडी श्री ईश्वर राव ने मुख्यमंत्री श्री साय को राज्य सरकार की तत्परता और सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने छत्तीसगढ़ में पॉवर मॉड्यूल फेब्रिकेशन प्लांट स्थापित करने के लिए 10,000 करोड़ रुपये के निवेश का भी प्रस्ताव दिया। इस संयंत्र के माध्यम से ट्रांजिस्टर, पावर इलेक्ट्रॉनिक्स और इलेक्ट्रिक व्हीकल्स के क्षेत्र में नई ऊँचाई प्राप्त होगी। इससे राज्य में 5,000 से अधिक युवाओं को रोजगार मिलेगा।

इस अवसर पर वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन, आवास एवं पर्यावरण मंत्री श्री ओ. पी. चौधरी, विधायक गुरु खुशवंत साहेब, सीएसआईडीसी के अध्यक्ष श्री राजीव अग्रवाल, मुख्य सचिव श्री अमिताभ जैन, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव श्री सुबोध कुमार सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव श्री पी. दयानंद, उद्योग विभाग के सचिव श्री रजत कुमार, एनआरडीए के सीईओ श्री सौरभ कुमार, सीएसआईडीसी के एमडी श्री विश्वेश कुमार सहित कई वरिष्ठ अधिकारी और पोलीमैटेक कंपनी के कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रधानमंत्री मोदी ने काशी को दी 3884.18 करोड़ रुपए की सौगात, विपक्षी दलों पर साधा निशाना

पीएम ने कहा- परिवार का विकास ही उनका सिद्धांत

वाराणसी (विश्व परिवार)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक दिवसीय दौरे पर आज अपने संसदीय क्षेत्र वाराणसी पहुंचे। यहां उन्होंने 3884.18 करोड़ की परियोजनाओं की सौगात दी। साथ ही तीन बुजुर्गों को आयुष्मान कार्ड प्रदान किए। इस दौरान उन्होंने विपक्षी दलों पर निशाना साधा और कहा कि जो लोग सत्ता हथियाने के लिए दिन-रात खेल खेलते रहते हैं, उनका सिद्धांत है, परिवार का साथ-परिवार का विकास।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि महात्मा ज्योतिबा फुले जी जैसे त्यागी, तपस्वी, महापुरुषों की प्रेरणा से ही देशसेवा का हमारा मंत्र रहा है- सबका साथ-सबका विकास। हम देश के लिए उस विचार को लेकर चलते हैं, जिसका समर्पित भाव है- सबका साथ-सबका विकास। जो लोग सत्ता हथियाने के लिए दिन-रात खेल खेलते रहते हैं, उनका सिद्धांत है, परिवार का साथ-परिवार का विकास। उन्होंने कहा कि बीते 10 वर्षों में बनारस के विकास ने एक नई गति पकड़ी है। काशी ने आधुनिक समय को साधा है, विरासत को संजोया है और भविष्य को उज्जवल बनाने की दिशा में मजबूत कदम रखे हैं। आज काशी सिर्फ पुरातन नहीं, प्रगतिशील भी है। पीएम मोदी ने कहा कि आज सामाजिक चेतना के प्रतीक महात्मा ज्योतिबा फुले की जयंती भी है। महात्मा ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले जी ने जीवन भर नारी शक्ति के हित, उनके आत्मविश्वास और समाज कल्याण के लिए काम किया। आज हम उनके विचारों को, उनके संकल्पों को, नारी सशक्तिकरण के उनके आंदोलन को आगे बढ़ा रहे हैं, नई ऊर्जा दे रहे हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि कल हनुमान जन्मोत्सव का पावन दिन है और आज मुझे संकटमोचन महाराज की काशी में आपके दर्शन का सौभाग्य मिला है। हनुमान जन्मोत्सव से पहले काशी की जनता आज विकास का उत्सव मनाने यहां एकत्र हुई है। उन्होंने कहा कि पूर्वांचल के आर्थिक नक्शे के केंद्र में काशी है। काशी के स्वयं महादेव रखवाले हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि पूर्वांचल के अनेक हिस्सों में जुड़ी ढेर सारी परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास हुआ है। कनेक्टिविटी को मजबूती देने वाले अनेक इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट, गांव-गांव, हर घर नल से जल पहुंचने का अभियान, शिक्षा, स्वास्थ्य और खेल सुविधाओं का विस्तार और हर क्षेत्र, हर परिवार, हर युवा को बेहतर सुविधाएं देने का संकल्प। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि हमने पशुपालकों को किसान क्रेडिट कार्ड की सुविधा दी है, उनके लिए लोन की सीमा बढ़ाई है।

प्रधानमंत्री ने रेप मामले में अधिकारियों से ली जानकारी, दिए सख्त कार्रवाई के निर्देश

इसके पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने शहर में कुछ दिन पूर्व घटी सामूहिक बलात्कार की घटना पर गंभीर चिंता जताते हुए त्वरित और कड़ा रुख अपनाया है। प्रधानमंत्री ने पुलिस आयुक्त, मंडलायुक्त और जिलाधिकारी से इस मामले में विस्तृत जानकारी ली। प्रधानमंत्री मोदी ने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि इस जघन्य अपराध के सभी दोषियों को चिन्हित कर उन पर कड़ी से कड़ी कार्रवाई सुनिश्चित की जाए। साथ ही, उन्होंने भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए व्यापक और प्रभावी व्यवस्थाएं करने पर जोर दिया।

देश में एक बिलियन टन कोयला उत्पादन का लक्ष्य प्राप्त करने में छत्तीसगढ़ की भूमिका अग्रणी : जी. किशन रेड्डी

मुख्यमंत्री साय और केंद्रीय कोयला ने खनिज विभाग के कामकाज की समीक्षा की

केंद्र सरकार के साथ समन्वय कर खनन क्षेत्र में छत्तीसगढ़ की भागीदारी को बनाएंगे अधिक प्रभावशाली : सीएम विष्णुदेव साय

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय और केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने आज मंत्रालय महानदी भवन में खनिज विभाग की समीक्षा बैठक ली। बैठक में छत्तीसगढ़ की खनिज संपदा, अन्वेषण कार्यों, तकनीकी नवाचारों और राजस्व उपलब्धियों की विस्तृत समीक्षा की गई। केंद्रीय मंत्री श्री रेड्डी ने खनन क्षेत्र में छत्तीसगढ़ की उपलब्धियों पर प्रसन्नता व्यक्त की और देश की प्रगति में राज्य की अग्रणी भूमिका की बात कही। उन्होंने देश में वर्ष 2024-2025 में कोयला उत्पादन में 1 बिलियन टन का लक्ष्य हासिल करने पर खुशी जाहिर की और इसे पाने में छत्तीसगढ़ के योगदान को सराहा। इस मौके पर मुख्यमंत्री और केंद्रीय मंत्री ने देश के पहले लिथियम ब्लॉक के कंपोजिट लाइसेंस अनुबंध दस्तावेज सफल बोलीदाता के प्रतिनिधि को सौंपे। साथ ही दंतेवाड़ा जिले के तीन और कांकेर जिले के एक लौह अयस्क ब्लॉक के प्रीफर्ड बिडर आदेश प्रदान किए।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज की यह समीक्षा बैठक प्रदेश में कोयला एवं खनन के क्षेत्र के लिए लाभदायक होगी। हम केंद्र सरकार के साथ आवश्यक समन्वय करते हुए खनन क्षेत्र में छत्तीसगढ़ की भागीदारी को और अधिक प्रभावशाली बनाएंगे। विकसित भारत के निर्माण में हमारा राज्य खनिज क्षेत्र के माध्यम से एक मजबूत स्तंभ बने, यही हमारा लक्ष्य है। श्री साय ने बताया कि छत्तीसगढ़ खनिज संसाधनों से परिपूर्ण राज्य है और संसाधनों का समुचित व सतत उपयोग सुनिश्चित करने की दिशा में अनेक नवाचारी पहल की गई हैं।

चंडीगढ़ पहुंचे भूपेश बघेल, मुंबई हमले के मास्टर माइंड के प्रत्यर्पण पर बोले

चंडीगढ़ (एजेंसी)। मुंबई हमले का मास्टर माइंड तहव्वुर राणा भारत लाया जा चुका है। एनआईए अदालत ने उसे 18 दिनों की कस्टडी में भेजा है। राणा को कल विशेष विमान से अमेरिका से दिल्ली लाया गया था। राणा को भारतीय अधिकारियों को यूएस मार्शल ने सौंपा था।

तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण पर छत्तीसगढ़ के पूर्व सीएम और पंजाब कांग्रेस प्रभारी भूपेश बघेल ने कहा कि तहव्वुर राणा के भारत प्रत्यर्पण के लिए मूल काम यूपीए सरकार ने किया था। यही वजह रही कि राणा को अमेरिका से भारत प्रत्यर्पित किया गया है। बघेल का कहना है कि कांग्रेस ने जो बेसिक काम किए हैं। उसी के आधार पर एनआईए मुंबई हमले के मास्टर माइंड तहव्वुर राणा को भारत लाने में सफल रही है।

बता दें कि पंजाब कांग्रेस प्रभारी भूपेश बघेल आज चंडीगढ़ में पहुंचे हैं। इस दौरान उनके साथ पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वड़िंग भी मौजूद रहे। लुधियाना पश्चिमी उप चुनाव को लेकर चंडीगढ़ में कांग्रेस नेताओं की बैठक हो रही है। कांग्रेस के उपचुनाव के लिए भारत भूषण आशु को उम्मीदवार बनाया है। उपचुनाव को लेकर चर्चा और जीत की रणनीति तैयार करने के लिए यह बैठक की जा रही है।

दुर्ग दुष्कर्म और हत्या को लेकर कांग्रेस निकालेगी न्याय यात्रा, सरकार से सीबीआई जांच की मांग

रायपुर (विसं)। एक बार फिर कांग्रेस ने राज्य सरकार पर जोरदार हमला बोला. इस बार कांग्रेस ने दुर्ग में मासूम से हुई बलात्कार और उसके बाद उसकी हत्या के मामले को लेकर सरकार को घेरा है. इस इस मामले को लेकर कांग्रेस ने दुर्ग से रायपुर तक न्याय पदयात्रा निकाले जाने का ऐलान किया है. साथ ही मुख्यमंत्री निकास घेराव की भी घोषणा की है. इतना ही नहीं कांग्रेस देश पूरे मामले की सीबीआई जांच की मांग की है. कांग्रेस का आरोप है कि राज्य में बीजेपी सरकार बनने के बाद से बेटियां बहने माताएं सुरक्षित नहीं है.

'सरकार अपने आप में मस्त है'- दीपक बैज ने कहा कि नवरात्रि के समय जब पूरे देश में कन्याभोजन हो रहा था. तब छत्तीसगढ़ के दुर्ग में एक मासूम बच्ची के साथ अनाचार हो गया, उसकी हत्या हो गयी.अबोध बच्ची के साथ जो दरिंदगी हुई उसे सुनकर रूह कांप जाती है. राज्य में बीजेपी सरकार बनने के बाद बेटियां, बहनें, मातायें सुरक्षित नही है.लगातार दुराचार की घटनाएं बढ़ रही है.अपराधी बेलगाम हो गए हैं. उनमें कानून का भय नही है. सरकार अपने आप में मस्त है, मुख्यमंत्री और गृहमंत्री को कानून की चिंता नही है, रोज हत्याएं, लूट, बलात्कार हो रहे है.

बैज का आरोप है कि ये सरकार महिलाओं को सुरक्षित वातावरण देने में नाकाम रही है. सरकार और पुलिस से लोगों का भरोसा उठ गया है. इसी कारण दुर्ग में इस घटना के बाद संदिग्ध आरोपी के घर आगजनी की गयी. बलौदाबाजार में एसपी और कलेक्टर कार्यालय जला दिए गए. प्रशासन की नाकामी के चलते लोहारीडीह, बलरामपुर, सूरजपुर के बाद अब दुर्ग में जनता खुद ही न्याय करने सड़क पर उतर गई, जो बेहद चिंताजनक स्थिति है. दुर्ग की यह घटना राज्य की बिगड़ती कानून व्यवस्था का उदारण है. जबसे राज्य में बीजेपी की सरकार बनी है तब से महिलाएं, बच्चियां असुरिक्षत हैं.

बेहतर बुनियादी ढांचा, बेहतर तकनीक, बेहतर ट्रेनें- उपनगरीय नेटवर्क में सेवाओं को बढ़ावा देने के लिए भारतीय रेल तैयार

मुंबई (विश्व परिवार)। आज मुंबई के जियो वर्ल्ड कन्वेंशन सेंटर में आयोजित एक प्रेस वार्ता में महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने संयुक्त रूप से महाराष्ट्र में रेलवे अवसंरचना में हो रहे परिवर्तनकारी विकास पर प्रकाश डाला। बेहतर बुनियादी ढांचा, बेहतर तकनीक, बेहतर ट्रेनें विषय पर आधारित इस कार्यक्रम में भारतीय रेलवे की आधुनिकरण, बेहतर यात्री अनुभव और क्षेत्रीय संपर्क को सशक्त बनाने की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया, विशेषकर मुंबई उपनगरीय रेलवे नेटवर्क पर विशेष जोर दिया गया।

रेल मंत्री श्री वैष्णव ने बताया कि उपनगरीय सेवाओं में वृद्धि के लिए अवसंरचना विकास एक आधारशिला है। लगभग 17,000 करोड़ रुपए की लागत से 300 किलोमीटर से अधिक नई रेल लाइनों पर कार्य तीव्र गति से चल रहा है। ये परियोजनाएं मौजूदा लाइनों के भीड़भाड़ को कम करने, सेवा की आवृत्ति बढ़ाने और मुंबई के बढ़ते यात्री दबाव को संभालने के उद्देश्य से शुरू की गई हैं। श्री वैष्णव ने बताया कि उपनगरीय सेक्शन के लिए तैयार किया गया अत्याधुनिक सुरक्षा और सिग्नलिंग सिस्टम कवच 5.0 जल्द लॉन्च किया जाएगा। कवच 5.0 इंटर-ट्रेन हेडवे को कम करके ज्यादा ट्रेनें सुरक्षित और दक्षतापूर्वक चलाने में सक्षम होगा।

बेहतर ट्रेनें- यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए मंत्री ने घोषणा की कि 238 नई वातानुकूलित उपनगरीय रेक्स जल्द ही शुरू की जाएंगी। ये ट्रेनें खासतौर से मुंबई के यात्रियों की जरूरतों को ध्यान में रखकर डिजाइन की गई हैं, जो एक अधिक आरामदायक और भरोसेमंद यात्रा अनुभव प्रदान करेंगी।

मुख्यमंत्री श्री फडणवीस ने यह भी बताया कि मुंबई वन कार्ड जल्द लॉन्च किया जाएगा, जो उपनगरीय ट्रेन, मेट्रो, मोनोरेल, बेस्ट बस जैसी सार्वजनिक परिवहन सेवाओं को एकीकृत कर यात्रियों के लिए एक ही कार्ड से भुगतान की सुविधा देगा।

इन सभी अवसंरचना, तकनीकी और ट्रेनों के उन्नयन के साथ, उपनगरीय सेवाओं की संख्या में भारी वृद्धि होगी, जिससे लाखों मुंबईकरों की रोजमर्रा की यात्रा आसान होगी।

महाराष्ट्र में रणनीतिक रेल परियोजनाएं

एक महत्वपूर्ण घोषणा में गोंदिया-बल्लारशाह रेलवे लाइन के दोहरीकरण की बात कही गई, जो कि 240 किलोमीटर लंबा रणनीतिक गलियारा है, जिसमें 4,819 करोड़ रु. का निवेश किया जाएगा। यह परियोजना विदर्भ और मराठवाड़ा को जोड़ने के साथ-साथ आंध्र प्रदेश और छत्तीसगढ़ के साथ महाराष्ट्र की कनेक्टिविटी को भी मजबूत करेगी।

रचनात्मक क्षेत्र को बढ़ावा

इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ क्रिएटिव टेक्नोलॉजी, एक राष्ट्रीय महत्व की संस्था, मुंबई में स्थापित की जाएगी। यह संस्थान भारत की रचनात्मक उद्योग को विश्व स्तरीय अवसंरचना और प्रशिक्षण से सशक्त बनाएगा।

मुख्यमंत्री साय छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम के नवनियुक्त अध्यक्ष राजा पांडेय के पदभार ग्रहण समारोह में हुए शामिल

मुख्यमंत्री साय ने कहा- शिक्षा ही है विकास का मूलमंत्र

रायपुर (विश्व परिवार)। शिक्षा ही विकास का मूलमंत्र है। शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है। एक पढ़े-लिखे व्यक्ति और अनपढ़ व्यक्ति के जीवन में जमीन आसमान का अंतर होता है। स्कूली बच्चों को पुस्तकें उपलब्ध कराने में पाठ्य पुस्तक निगम की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। यह बातें मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने आज राजधानी रायपुर के शहीद स्मारक भवन में आयोजित छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजा पांडेय के पदभार ग्रहण कार्यक्रम में कहीं।

मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष के रूप में पदभार ग्रहण करने पर श्री राजा पांडेय को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। मुख्यमंत्री ने कहा कि पाठ्य पुस्तक निगम का दायित्व है की किताबें समय पर छपें और बच्चों को स्कूल में पुस्तकें समय पर उपलब्ध हों। मुझे पूरी उम्मीद है कि श्री राजा पांडेय पाठ्य पुस्तक निगम के अध्यक्ष के रूप में अपने कर्तव्यों का पूरी ईमानदारी से निर्वहन करेंगे। विकसित छत्तीसगढ़ बनाने में शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। इस लिहाज से पाठ्यपुस्तक निगम के पास एक बड़ी जिम्मेदारी है। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में नई शिक्षा नीति की शुरुआत की गई है, जिसे हमने छत्तीसगढ़ में लागू किया है। नई शिक्षा नीति में शिक्षा के साथ-साथ रोजगार पर भी फोकस किया गया है। प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर हम बच्चों को 18 स्थानीय बोलियों में किताबें उपलब्ध करा रहे हैं। इससे बच्चे अपनी मातृभाषा में शिक्षा प्राप्त कर पायेंगे। नई शिक्षा नीति का लाभ राज्य के बच्चों को मिल रहा है। छत्तीसगढ़ की 25 वर्ष की यात्रा में शिक्षा के क्षेत्र में देश के शीर्ष संस्थान जैसे आईआईटी, आईआईएम, नेशनल लॉ स्कूल और ट्रिपल आईटी छत्तीसगढ़ में स्थापित हुए हैं। आज चिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में छत्तीसगढ़ में 14 मेडिकल कॉलेज हैं। एम्स जैसे राष्ट्रीय चिकित्सा संस्थान का लाभ लोगों को मिल रहा है।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि आज छत्तीसगढ़ हर क्षेत्र में तेजी से विकास कर रहा है। आज नवा रायपुर में हमने प्रदेश के पहले सेमीकंडक्टर यूनिट का भूमिपूजन किया है। ये सेमीकंडक्टर के क्षेत्र में देश का दूसरा यूनिट है। 1143 करोड़ की लागत से इस संयंत्र की स्थापना हुई है। कम्पनी ने 10 हज़ार करोड़ के अतिरिक्त निवेश का प्रस्ताव भी दिया है। इससे सेमीकंडक्टर चिप्स निर्माण में प्रदेश के युवाओं को रोजगार उपलब्ध होगा।

केंद्रीय राज्यमंत्री श्री तोखन साहू ने छत्तीसगढ़ पाठ्य पुस्तक निगम के नवनियुक्त अध्यक्ष श्री राजा पाण्डेय को बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि शिक्षा समाजिक परिवर्तन की धुरी है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, शनिवार 12 अप्रैल 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
2

संक्षिप्त समाचार

स्वस्थ तन-मन स्वस्थ चिंतन- तेयुप

रायपुर (विश्व परिवार)। व्यक्ति यदि स्वस्थ होगा तो एक स्वस्थ समाज की परिकल्पना साकार हो सकती है जिसे ध्यान में रखते हुए तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर ने अपने संचालित उपक्रम आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर, रायपुर के माध्यम से 2624 वें भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव निमित्त नि:शुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर आयोजित किया। जिसमें में तीन जांच Sugar/Thyroid/CBC नि:शुल्क प्रदान करते हुए जांच शिविर का आयोजन किया गया जिसका लाभ 81 समाजजनों द्वारा लिया गया। विशेष सहयोग श्री गजराज जी बाफना व श्री कैलाश जी गौरव जी जैन का रहा। सुषमा साह, प्रीती शर्मा, वीरेंद्र डागा, निकुंज साचला, निर्मल गांधी की सहभागिता रही। -**वीरेंद्र डागा**

भिलाई निगम के कर्मचारियों में खुशी, लम्बे इंतजार के बाद जारी हुआ प्रमोशन लिस्ट

भिलाई (विश्व परिवार)। नगर निगम भिलाई के कर्मचारियों के चेहरे खिल गए लंबे इंतजार के बाद प्रमोशन लिस्ट जारी हुआ। आज आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय द्वारा छानबीन समिति के अनुशंसा पर कर्मचारियों

की पदोन्नति लिस्ट जारी हुई। जिसमें अनिल कुमार मेश्राम राजस्व निरीक्षक को सहायक राजस्व अधिकारी के रूप में पदोन्नति प्रदान की गई है। इसी प्रकार लंबे इंतजार के बाद शशि भूषण मोहंती को मूल पद चौकीदार से पदोन्नति करके सहायक ग्रेड 3 लिपिक बनाया गया को बनाया गया है। संतराम देवांगन एवं दिनेश बेल चंदन पूर्व पद चौकीदार से पदोन्नति करके सहायक राजस्व निरीक्षक पद पर पदोन्नति किया गया है। आदेश जारी होने के 15 दिन के अंदर पदोन्नति पद पर कार्यभार ग्रहण करना होगा अन्यथा पदोन्नति आदेश निरस्त माना जाएगा। सभी कर्मचारी लंबे अवधि से अपने सीनियरिटी का इंतजार कर रहे थे। आयुक्त पाण्डेय ने छानबीन समिति गठित करके समय अवधि के अंदर निर्णय लेने के निर्देश किये थे। समिति के अनुशंसा के बाद अधिकारियों को और कर्मचारियों को पदोन्नति प्राप्त हो गया। इससे कर्मचारियों में बहुत खुशी है। वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन, महापौर नीरज पाल एवं कर्मचारी संघ के पदाधिकारी द्वारा पदोन्नति कर्मचारियों को शुभकामना दी है जनसंपर्क विभाग, नगर पाली निगम, भिलाई।

एनआईटी रायपुर में 14 अप्रैल को भारत रत्न डॉ. बी.आर. अंबेडकर की जयंती मनाई जाएगी, एकता और अधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता

रायपुर (विश्व परिवार)। संस्थान में शांति और सद्भाव का वातावरण बनाने के लिए, एन आई टी रायपुर इसके सभी स्टेकहोल्डर्स, जिसमें छात्र, फैकल्टी और स्टाफ शामिल हैं, के मूल अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है। एकता के इस अनुभव को प्रेरित करने के प्रयासों के तहत, विशेष रूप से उनके जन्मदिन पर संस्थान नियमित रूप से सामाजिक सुधारकों, स्वतंत्रता सेनानियों, विजनरी नेताओं और अन्य की विरासतों को सम्मानित करता है। इस संबंध में, भारत रत्न डॉ. बी. आर. आंबेडकर (बाबासाहेब) का जन्मदिन हर साल 14 अप्रैल को मनाया जाता है। इस वर्ष, एन आई टी रायपुर 14 अप्रैल 2025 (सोमवार) को बाबासाहेब की 134वीं जयंती को बड़े उत्साह और धूमधाम के साथ मनाएगा। छत्तीसगढ़ के रायपुर डिवीजन के डिविजनल कमिश्नर श्री महादेव कावरे (आई ए एस) मुख्य अतिथि के रूप में इस अवसर को सुशोभित करेंगे। आईआईटी दिल्ली के एक तकनीक विशेषज्ञ और पूर्व छात्र श्री कावरे की उपस्थिति और बाबासाहेब की विचारधारा पर उनके विचार निश्चित रूप से एनआईटी रायपुर के छात्रों को एक संप्रभु, समाजवादी, धर्मनिरपेक्ष, लोकतांत्रिक और गणतंत्र राष्ट्र के रूप में भारत के विकास में योगदान देने के लिए प्रेरित करेंगे। इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम में प्रोफेसर एन. वी. रमना राव, निदेशक, एनआईटी रायपुर, जो इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे, और प्रोफेसर नरेंद्र डी. लोंढे, रजिस्ट्रार, एनआईटी रायपुर की प्रतिष्ठित उपस्थिति रहेगी। एनआईटी रायपुर का सम्पूर्ण परिवार इस अवसर पर उपस्थित रहेगा, जो इस आयोजन के महत्व को दर्शाता है।

जवाहर नगर मंडल ने महावीर गौ शाला में सफाई एवं गौ चारा वितरण किया

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय जनता पार्टी द्वारा मनाए जा रहे सेवा पखवाड़ा के तहत जवाहर नगर मंडल की महिला मोर्चा द्वारा सर्वकल्याण की कामना से महावीर गौ शाला में साफ सफाई अभियान एवं गौ चारा वितरण का कार्यक्रम रखा गया। जवाहर नगर मंडल के अध्यक्ष संदीप जंघेल ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी ने 6 अप्रैल को अपना 46 वा स्थापना दिवस मना रही है। इस अवसर पर सेवा पखवाड़ा अभियान की शुरुआत करने का निर्णय लिया है। यह अभियान 15 दिनों तक चलेगा, जिसमें पार्टी के जनप्रतिनिधि, पदाधिकारी और कार्यकर्ता शहर से लेकर ग्रामीण इलाकों तक पहुंचेंगे। इस अभियान के दौरान, जवाहर नगर मंडल के एवं पार्टी के कार्यकर्ता बूथ स्तर पर विभिन्न मोहल्लों में स्थित मंदिरों, शासकीय स्कूलों में सफाई अभियान, गौ शाला सफाई चारा वितरण स्वास्थ्य शिविर, जरूरतमंदों को स्टेशनरी वितरण, मट्ठा वितरण की सेवा प्रदान करेंगे और विभिन्न जनहित कार्यों के लिए श्रमदान भी करेंगे। आज दिनांक 11 अप्रैल को सुबह 9 बजे जवाहर नगर की महिला मोर्चा द्वारा मौदहापारा स्थित श्री महावीर गौ शाला में पहुंच कर मंदिरों की सफाई की साथ ही गौ माता को गुड, चना, खीरा, हरा चारा का वितरण किया गया। इस अवसर पर आज जवाहर नगर के मंडल अध्यक्ष संदीप जघेंल जी पूर्व पार्षद भारती बागल जी सेवा पखवाड़ा सह संयोजक विजय गुप्ता जी महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष वेणुका शुक्ला जी संगीता जैन जी प्रणीत जैन जी विशेष रूप से उपस्थित थे। -**प्रणीत जैन**

दुष्कर्म और हत्या मामला : पीड़ित परिजनों से मिले विधायक देवेंद्र यादव, परिवार ने की सीबीआई जांच की मांग

भिलाई (विश्व परिवार)। भिलाई नगर विधायक देवेंद्र यादव आज दुर्ग में गत दिनों हुए एक मासूम के साथ दुष्कर्म और हत्या के मामले को लेकर बड़ा बयान दिए है। विधायक देवेंद्र, सर्व यादव समाज के प्रमुख पदाधिकारियों के साथ आज पीड़ित परिवार से? मिलने गए। उनसे मिलकर उनका दुख बांटा और उन्हे आश्वासन दिया कि इस दुख की घड़ी में पूरा सर्व यादव समाज उनके साथ है। यादव समाज की ओर से शासन से मांग की गई है कि पीड़ित परिवार को 50 लाख रुपए का मुआवजा दिया जाए।

पीड़ित परिवार से मिलने के बाद मीडिया से बातचीत के दौरान विधायक यादव ने कहा कि यह इतना दुखद घटना है, जिसके बारे में सोंच कर ही रूह कांप जाती है। उस मासूम बच्ची के साथ बड़ी हैवानियत हुई है। परिवार न्याय चाहता है। लेकिन परिवार पुलिस और प्रशासन की अबतक की कार्रवाई से संतुष्ट नहीं है। परिवार ने बताया कि पुलिस ने महिलाओं को रात में उठाकर ले गए। कई लोगों के साथ मारपीट की है। एक बच्ची को खूब डरा और धमकाया भी है। प्रशासन और पुलिस की जिम्मेदारी है कि वे पीड़ित परिवार को अपने कार्रवाई से संतुष्ट करें। उन्हे न्याय दिलाए। विधायक देवेंद्र यादव ने बताया कि परिवार चाहता है कि इस पूरे मामले की जांच सीबीआई करें। इसके लिए परिवार ने पत्र भी शासन प्रशासन को भेजा है। उन्होंने आगे कहा कि यह बहुत दुखद घटना है। पूरा देश आक्रोशित है। इसमें भाजपाइयों को राजनीति नहीं करना चाहिए। यह राजनीति कीबात नहीं है। यह भरोसे की न्याय की बात है। जब पीड़ित परिवार को सीबीआई पर भरोसा है, तो सीबीआई से जांच कराने में क्या परेशानी है।

आयुक्त ने शिविर में उपस्थित लोगों से चर्चा की, आवेदनों का त्वरित निराकरण कर दिए निर्देश

8 अप्रैल से लेकर 11 अप्रैल तक सुशासन तिहार में आये 2928 आवेदन माँग व शिकायत के

दुर्ग (विश्व परिवार)। प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जी के मंशानुरूप सुशासन तिहार 2025 के अंतर्गत जिले में समधान पेटी के माध्यम से आवेदन लिया जा रहा है। जिसे लेकर लोगों में खासा उत्साह देखा जा रहा है। इसी कड़ी आयुक्त सुमित अग्रवाल ने शुक्रवार को शहर क्षेत्र के विभिन्न सुशासन शिविरों का निरीक्षण किया।

उन्होंने लोगों से लिए जा रहे आवेदनों की वस्तुस्थिति की जानकारी ली।वही मौके पर मौजूद अधिकारियों को जनता की शिकायत एवं मागों पर त्वरित एक्शन लेते हुए निकराण करने के निर्देश दिए। साथ ही शिविर में मौजूद व्यवस्थाओं का भी जायजा लिया।

महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने शिविर में आवेदन करने पहुंचे लोगों से चर्चा भी की थी। उन्होंने लोगों से आवेदन करने में कोई समस्या या किसी भी तरह की परेशानी तो नहीं हो रही है, इसकी जानकारी प्राप्त की।उन्होंने कहा कि सुशासन तिहार शासकीय कामकाज में पारदर्शिता लाने तथा शासकीय योजनाओं एवं कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने की दिशा में अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है।

8 अप्रैल से लेकर 11 अप्रैल तक सुशासन तिहार के आवेदन 2928 आवेदन माँग व शिकायत के मिले है।

राज्य शासन के मंशानुरूप इसका समुचित लाभ जिले के आम नागरिकों को सुनिश्चित कराना अत्यंत आवश्यक है।उन्होंने सुशासन तिहार की जानकारी नगर के सभी नागरिकों को हो सके इसके लिए इसका समुचित प्रचार-प्रसार किया गया है।

रिसदा चौक से न्यूविस्टा सीमेंट सयंत्र तक भारी वाहनो का प्रवेश प्रतिबंधित

जनसुविधा एवं सुरक्षा के मद्देनजर कलेक्टर ने जारी किया आदेश

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। बलौदाबाजार नगर से लगे हुए ग्राम पंचायत रिसदा- सुहेला मुख्य मार्ग में भारी वाहनो के आवाजाही से स्कूली बच्चों एवं जनसुविधाओं व सुरक्षा को दृष्टिगत रखते हुए कलेक्टर दीपक सोनी ने ग्राम रिसदा में रिसदा चौक से न्यूविस्टा सीमेंट सयन्त्र के मुख्य गेट तक भारी वाहनो के आवागमन को सायं 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक एक माह के लिए प्रतिबंधित कर दिया है। जारी आदेशानुसार ग्राम रिसदा में रिसदा चौक से न्यूविस्टा सीमेंट सयंत्र मुख्य गेट तक स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के स्कूल छूटने के समय वाहनों की आवाजाही होने तथा जन सुरक्षा व सुविधा के दृष्टिकोण से मोटरयान अधिनियम 1988 की धारा 115 एवं सहपठित छत्तीसगढ़ मोटरयान नियम 1994 के नियम 215 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए कलेक्टर दीपक सोनी के द्वारा ग्राम रिसदा में रिसदा चौक से न्यूविस्टा सीमेंट सयंत्र मुख्य गेट तक की सडक पर आने -जाने वाली भारी वाहन, ट्रक, ट्रेलर का प्रवेश सायं 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक 11 अप्रैल 2025 से 10 मई 2025 तक के लिए प्रतिबंधित कर दिया गया है।

प्रदेश स्तरीय कोर कमेटी बैठक व पदाधिकारियों निर्वाचन/मनोनयन

रायपुर (विश्व परिवार)। आज दिनांक 10 अप्रैल 2025 को छत्तीसगढ़ प्रांतीय अखंड ब्राह्मण समाज छत्तीसगढ़ संगठन का प्रदेश कार्यालय डंगनिया रायपुर में प्रदेशस्तर पदाधिकारियों का निर्वाचन/ मनोनयन हेतु कोर कमेटी की बैठक आयोजित की गयी। जिसमें वर्ष भर के 1.आय व्यय व 2. प्रदेश पदाधिकारी के निर्वाचन/मनोनयन मुख्य एजेंडा के रुप में रखे गये।

जिसमें सभी कोर कमेटी के सदस्य की उपस्थिति रही।आय व्यय लेखा प्रस्तुत किया गया। तत्पश्चात निर्वाचन प्रक्रिया का पालन करते हुए पीठासीन अधिकारी नियुक्त किया गया। निर्वाचन के सभी नियमों से अवगत कराया गया। नाम निर्देशन पत्र आमंत्रित किए गए। सभी पदों हेतु एक-एक अभ्यर्थी के नामपर कोर सदस्यों की सर्वसम्मति बनी।जिससे निर्विरोध निर्वाचन/मनोनयन पद संरचना आधार पर किया गया। जिसमें निम्नलिखित निर्वाचित /मनोनीत प्रदेश पदाधिकारीयों के नाम निम्नानुसार है।

प्रदेश संरक्षक- श्रीमती विजय लक्ष्मी शर्मा जी, प्रदेश संयोजक- श्रीमती डॉक्टर सरिता दुबे जी, प्रदेश अध्यक्ष- श्रीमती भारती किरण शर्मा जी, प्रदेश उपाध्याय- श्रीमती सरिता तरुण शर्मा जी, प्रदेश सचिव- श्री संजय शुक्ला जी, प्रदेश महासचिव- श्रीमती प्रीति शुक्ला जी, प्रदेश कोषाध्यक्ष- श्रीमती सुनीता मिश्रा, प्रदेश संगठन सचिव (मुख्य)- प्रसार एवं विस्तार- श्री ईश्वर प्रसाद शर्मा जी, प्रदेश सचेतक व अतरिक्त प्रभार कार्यकारी अध्यक्ष- श्री कमलेश कुमार शर्मा, प्रदेश अध्यक्ष नारी प्रकोष्ठ- , श्रीमती निशा तिवारी जी, प्रदेश सह सचिव प्रदेश संयोजक विप्र प्रकोष्ठ- श्री मेघराज तिवारी। निर्वाचित/मनोनीत किये गये नियमानुसार तीन वर्ष कार्यकाल सभी सम्मानित सदस्यों की सहमति से निर्धारित किया गया। संगठन नियमावली का पालन करते हुए संगठन हित कार्य करने हेतु सभी को संगठन नियमावली की जानकारी दी गयी।व भविष्य में संगठन को सुदृढ़ करने हेतु संगठन विस्तार का निर्णय लिया गया।

RAIPUR MUNICIPAL CORPORATION
ZONE-07
MANGLAM COMPLEX, AGRASEN CHOWK RAIPUR(C.G.)

Rel. -4/RMC/NNR/Zone **07 / 2025** **Raipur, Date - 7/04/2025**

EXPRESSION OF INTEREST
Ist Notice Inviting Tender (NIT)
---- 00 ----

नगर पालिक निगम रायपुर, जोन क्रमांक 07 अंतर्गत 05 वर्ष हेतु वार्षिक लाईसेंस फीस मॉडल के तहत् स्वामी आत्मानंद वार्ड क्रमांक 38 अंतर्गत स्थित दशहरा मैदान में 6000 वर्ग फीट बॉक्स क्रिकेट स्टेडियम के निर्माण एवं रखरखाव हेतु पात्र निविदाकारों से रूचि की अभिव्यक्ति के तहत् सीलबंध रूचि की अभिव्यक्ति आमंत्रित की जाती है। इस परियोजना में 10X10 कियोस्क, एक प्रीफैब्रिकिटेड शौचालय के साथ-साथ दो मिनी यूनिपोल पर विज्ञापन अधिकार शामिल होगा। उक्त रूचि की अभिव्यक्ति हेतु निविदा शुल्क राशि रूपये 5000 एवं एफ.डी.आर. की राशि रूपये 100000 जोन कार्यालय में जमा कराया जाना आवश्यक होगा। उक्त रूचि की अभिव्यक्ति से संबंधित समस्त दस्तावेज नगर निवेश शाखा कक्ष जोन क्रमांक 07 से प्राप्त किया जा सकेगा। रूचि की अभिव्यक्ति में भाग लिये जाने/लिफाफा जमा कराये जाने की अंतिम तिथि 29/04/2025 होगी। अधिक जानकारी हेतु जोन कार्यालय से संपर्क किया जाना होगा।

घरो से निकलने वाले सूखा और गीला कचरे को सफाई मित्र (वाहन) को देवें।

Zone Commissioner Rusch
Zone No. - 7 Raipur
Municipal Corporation

चरौदा और भिलाई-03 में विगत 04 दिनों से चल रहा सुशासन तिहार शिविर का हुआ समापन

भिलाई (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन नगरीय प्रशासन विभाग से प्राप्त निर्देश एवं जिला प्रशासन दुर्ग के मार्गदर्शन में भिलाई-चरौदा निगम द्वारा सुशासन तिहार शिविरों का आयोजन किया गया। दिनांक 08 अप्रैल 2025 से लेकर दिनांक 11 अप्रैल 2025 तक कुल 04 दिवस निगम कार्यालय के अलावा अन्य 03 स्थानों पर भी यह शिविर आयोजित किया गया।बाजार चौक भिलाई-03, बाजार चौक चरौदा बस्ती वार्ड क्रमांक-21 एवं सामुदायिक भवन सामनी वार्ड-38 में समाधान पेटी के साथ निगम के कर्मचारी सुबह 10 बजे से लेकर 05 बजे तक मौजूद रहे।

इन आवेदनों में सभी प्रकार के विषय शामिल है, जिनमें पानी, बिजली, रोड व नाली, सफाई, राशन कार्ड, पेंशन, पटटा एवं आवास आदि की मांग की गयी है। इसके साथ ही शिकायत संबंधी आवेदन भी प्राप्त हुए है। जिन पर अगले एक माह के अवधि में समाधान/निराकरण करने की नियमानुसार कार्यवाही निगम प्रशासन द्वारा की जायेगी। यह बता दे कि निगम कमिश्नर डी एस राजपूत के द्वारा प्राप्त आवेदनों को शासन द्वारा निर्धारित पोर्टल में इंद्राज करने निर्देश प्रदान किये गये है। साथ ही हर संभव प्रयास कर त्वरित निराकृत हो उन प्रकरणों पर कार्यवाही करने अधिकारियों/कर्मचारियों को चेताया। भिलाई-चरौदा निगम को दिनांक 08 अप्रैल 2025 को प्राप्त हुए कुल आवेदनों की संख्या 81 रही। जिसमें मांग के 56 एवं शिकायत के 25 आवेदन पाये गये।

एनएमडीसी
NMDC

एनएमडीसी लिमिटेड
(भारत सरकार का एक उद्यम)
बैलाडीला आयरन ओर माईन बचेली कॉम्प्लेक्स
प्रशिक्षण, सुरक्षा एवं पर्यावरण विभाग
बचेली-494553, दंतेवाड़ा (छत्तीसगढ़)
Corporate Identity Number : L13100TS1958GOI001674

क्र./उ.म.प्र. (खनन)/प्र.सु.पर्या./एपीपीआर-301-A/भाग-XIII/2025-26/4382A दिनांक:-12/04/2025

अप्रेंटिसशिप प्रशिक्षण रिक्ति अधिसूचना 2025

मेसर्स एन.एम.डी.सी. लिमिटेड, बैलाडीला लौह अयस्क खान, बचेली कॉम्प्लेक्स द्वारा शिक्षु अधिनियम- 1961 के अन्तर्गत स्नातक शिक्षु (सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल तथा माइनिंग इंजीनियरिंग), तकनीकी शिक्षु (मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल, माइनिंग इंजीनियरिंग तथा मॉर्डन ऑफिस प्रैक्टिस मैनेजमेंट) तथा ट्रेड शिक्षु-कोपा (कम्प्यूटर ऑपरेटर एण्ड प्रोग्रामिंग असिस्टेंट), मैकेनिक डीजल, फिटर, इलेक्ट्रीशियन, वेल्डर (गैस एवं इलेक्ट्रीकल), मेकेनिक (मोटर वेहिकल) एवं मशीनिष्ट के लिए अप्रेंटिसशिप प्रशिक्षण हेतु वॉक-इन-इंटरव्यू आयोजित किया जा रहा हैं। अपेक्षित योग्यता रखने वाले योग्य उम्मीदवार संबंधित श्रेणी अनुसार वॉक-इन-इंटरव्यू में भाग ले सकते हैं।

इच्छुक और योग्य उम्मीदवारों को वॉक-इन-इंटरव्यू में भाग लेने से पूर्व सलाह दी जाती हैं, कि वे एन.एम.डी.सी. की आधिकारिक वेबसाईट www.nmdc.co.in पर शैक्षिक योग्यता, पात्रता मानदंडो एवं साक्षात्कार अनुसूची के विवरण के लिये सावधानी पूर्वक पूरा विज्ञापन पढ़ें।

वरिष्ठ प्रबंधक (मैकेनिकल), प्रशिक्षण, सुरक्षा एवं पर्यावरण

राजस्व पखवाड़ा शिविर में आज 50 ग्राम पंचायत होंगे शामिल

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। राजस्व प्रकरणों के निराकरण हेतु जिले में 7 अप्रैल 2025 से राजस्व पखवाड़ा का आयोजन किया जा रहा है। 12 अप्रैल को 9 पंचायतों में राजस्व शिविर आयोजित होंगे जिसमें 50 ग्राम पंचायत के लोग शामिल होकर राजस्व सम्बंधित समस्या के निराकारण हेतु आवेदन दे सकते हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार तहसील बलौदाबाजार अंतर्गत ग्राम पंचायत परसाभदेर शिविर में परसाभदेर, खैरघटा, एवं चरोटी ग्राम पंचायत के लोग शामिल होंगे। इसीतरह तहसील लवन अंतर्गत शिविर ग्राम पंचायत चिचिरदा में ग्राम पंचायत चिचिरदा, पैजनी, क़सियारा, परसाडीह एवं जुडा, तहसील पलारी अंतर्गत शिविर स्थल ग्राम पंचायत अमेरा में केसला, अमेरा, छेरकापुर, बिनौरी, छड़िया, छेरकाडीह छ, , बलौदी, बोइरडीह, खपरी, ब, एवं टीपावन, तहसील भाटापारा अंतर्गत शिविर स्थल ग्राम पंचायत खोखली में गाड़ाडीह, बोडतरा, मज़गांव, सेमरिया, आलेसूर, गोसिया एवं कोड़ापार, तहसील सिमगा अंतर्गत ग़ शिविर स्थल ग्राम पंचायत दरचूरा में मोटियारीडीह, अकलतरा, धीवनपुरी, मांढ़र अ, मानिकचौरी, खरगाडीह, दरचूरा एवं विश्रामपुर, तहसील सुहेला अंतर्गत शिविर स्थल ग्राम पंचायत नवापारा में मुड़पार, बिटकुली एवं नवापरा, तहसील कसडोल अंतर्गत शिविर स्थल ग्राम पंचायत कोसमसरा क, हटोद, सेमरिया, टेमरी एवं कोसमसरा, तहसील टुण्डरा अंतर्गत शिविर स्थल ग्राम पंचायत मटिया में मड़वा, कोटियाडीह, मोहतरा एवं मटिया, तहसील सोनाखान अंतर्गत शिविर स्थल ग्राम पंचायत डुमरपाली में चेचरापाली, रंगोस, रिकोकला, छतवन एवं डुमरपाली के लोग शामिल होंगे।

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 958 दिनांक 11.04.2025
वार्ड का नाम- जवाहर लाल नेहरू वार्ड
वार्ड क्र. 36 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **36** मांग **पंजी क्र. 290 युआईडी 29738** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **लक्ष्मीदास पटेल / पंचांग भाई पटेल** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **भावेश पटेल / लक्ष्मीदास पटेल** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **11-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव, जिला- रायपुर (छ.ग.)
Email :birgaonmcp@gmail.com,
Website : www.nagarnigambirgaon.com

-: निगम अभिलेखों में नामांतरण की सूचना :-
नामांतरण प्रकरण क्र. 959 दिनांक 11.04.2025
वार्ड का नाम- जवाहर लाल नेहरू वार्ड
वार्ड क्र. 36 वर्ष- 2024-25

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि निम्नानुसार भवन/भूमि जो कि निगम के संपत्ति कर मांग पंजी में वार्ड क्रमांक **36** मांग **पंजी क्र. 290 युआईडी 29738** अनुसार अधिभोगी का नाम श्री/श्रीमती **भावेश पटेल / लक्ष्मीदास पटेल** से दर्ज है, श्री/श्रीमती **पूनम यादव / विजय यादव** अधिभोगी के द्वारा रजिस्ट्री/ लिखत द्वारा/ वंशानुक्रम/ बिक्रीनामा आधार पर अधिभोग प्राप्त कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत नामांतरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त अधिभोग परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो इस प्रकाशन के 30 दिन के भीतर/अथवा दिनांक **11-05-2025** तक प्रकरण क्रमांक सहित कार्यालय नगर पालिक निगम बीरगांव में लिखित दावा-आपत्ति प्रस्तुत कर सकते हैं। निर्धारित समयावधि पश्चात किसी भी प्रकार की कोई दावा-आपत्ति स्वीकार्य नहीं होगी। दावा-आपत्ति प्राप्त नहीं होने की स्थिति में अधिभोगी के द्वारा देय राशि भुगतान उपरांत अधिभोगी के पक्ष में नामांतरण की कार्यवाही की जावेगी।

राजस्व अधिकारी
नगर पालिक निगम, बीरगांव
जिला-रायपुर (छ.ग.)

न्यायालय आतिरिक्त तहसीलदार 04 रायपुर

मामले की श्रेणी: राजस्व
संदर्भ- जिला रायपुर तहसील-रायपुर प.ह.न.-00073 देवपुरी ग्राम के नामांतरण पंजी में पंजीबद्ध प्रकरण क्रमांक- RD 202425440725700116

इश्तिहार

तहसील रायपुर के **प.ह.न. 00073** के **अंतर्गत ग्राम देवपुरी** के वर्तमान भूमिस्वामी रायपुर विकास प्राधिकरण पिता/पति- पता के द्वारा धारित भूमि खसरा **क्रमांक 346/1(0.0060)** में प्रस्तावित भूमिस्वामी/**क्रेता सुभाष कुमार जसूजा पिता/पति-हरबक्श राय जसूजा पता-निवासी तेलीबांधा रायपुर** के नाम पर पंजीयन/फ़ौती होने के उपरांत नामांतरण / अभिलेख दुरुस्ती / खाता विभाजन के लिए प्रकरण अधोहस्ताक्षरकर्ता के न्यायालय में पंजी विचाराधीन है। इस प्रकरण की सुनवाई **दिनांक 07/05/2025** को समय सुबह 11 बजे स्थान न्यायालय न्यायालय आतिरिक्त तहसीलदार 04 रायपुर पर की जावेगी।

उपरोक्त के संबंध में जिस किसी भी व्यक्ति/संस्था को कोई दावा आपत्ति हो तो ईश्तहार प्रकाशन उपरांत प्रकरण की आगामी सुनवाई के पूर्व या सुनवाई के समय अपना दावा आपत्ति स्वयं / अधिवक्ता / आममुख्त्यार के माध्यम से पेश कर सकते हैं। प्रकरण के सुनवाई के लिए निर्धारित तिथि के उपरांत प्राप्त दावा आपत्ति पर कोई विचार नहीं किया जावेगा।

यह ईश्तहार मेरे हस्ताक्षर एवं पदमुद्रा से आज **दिनांक 11/04/2025** को जारी किया जाता है।

मुहर

अतिरिक्त तहसीलदार:
Tulsi Rathore रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./19752 /न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2025
रायपुर दिनांक : 11-04-2025

इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 19752
वार्ड का नाम- 36- हवलदार अब्दुल हमीद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि **36** स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR737G00495** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **PRAFULL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O CHANDI SHARAN SARKAR** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **VIMAL CHHUGANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O JAGDISH CHHUGANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर शनिवार 12 अप्रैल 2025

हाउसिंग बोर्ड कालोनी बालको स्थित अमरदीप ज्वेलर्स को सील किया निगम ने

आयुक्त ने किया टास्क फोर्स गठित, बड़े बकायादारों की सम्पत्तियाँ सील होना प्रारंभ

कोरबा(विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम कोरबा के बड़े बकायादारों की सम्पत्तियाँ सील किए जाने की कार्यवाही अब प्रारंभ कर दी गई हैं। इसी कडी में नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 के प्रावधानों के तहत बालको के हाउसिंग बोर्ड कालोनी स्थित अमरदीप ज्वेलर्स को निगम द्वारा सील कर दिया गया है। आयुक्त श्री आशुतोष पाण्डेय ने इस दिशा में ठोस कदम उठाते हुए टास्क फोर्स का गठन किया है, जो बड़े बकायादारों को चिन्हांकित कर नियमों के तहत उनकी सम्पत्तियों को सील करने की लगातार कार्यवाही करेगा। यहाँ उल्लेखनीय है कि नगर पालिक निगम केारबा को सम्पत्तिकर, समेकित कर, भवन, दुकान किराया सहित विभिन्न करों की करोड़ों रूपये की बकाया राशि बकायादारों से प्राप्त करनी है, वर्तमान में 01 लाख रूपये से अधिक की बकाया राशि वाले लगभग 119 बड़े बकायादार तथा 50 हजार रूपये से 01 लाख रूपये के बीच की बकाया राशि के 286 बकायादार हैं, जिन्हें बार-बार नोटिस देने, वारंट जारी किए जाने के बावजूद भी उनके द्वारा करों की बकाया राशि निगम कोष में जमा नहीं कराई जा रही, जिसके परिणाम स्वरूप एक ओर जहाँ बकाया राशि बढ़ती जा रही है, वहीं दूसरी ओर निगम को आर्थिक क्षति उठानी पड़ रही है, इससे एक ओर जहाँ नगर विकास के कार्य प्रभावित होते हैं, वहीं दूसरी ओर मूलभूत सुविधाओं की बेहतरी पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना बनी रहती है। आयुक्त श्री आशुतोष पाण्डेय द्वारा मंगलवार को ली गई राजस्व वसूली की समीक्षा बैठक में राजस्व निरीक्षकों ने बताया कि इन बड़े बकायादारों के पास बार-बार जाने व बकाया राशि जमा करने का आग्रह किए जाने के बावजूद भी इनके द्वारा बकाया कर राशि जमा नहीं कराई जा रही है। आयुक्त श्री पाण्डेय ने इसे गंभीरता से लेते हुए इन बकायादारों के विरूद्ध नियमों के तहत कड़ी कार्यवाही किए जाने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिए थे। अमरदीप ज्वेलर्स पर 02 लाख रू. का बकाया - हाउसिंग बोर्ड कालोनी बालको स्थित जिस अमरदीप ज्वेलर्स को आज निगम द्वारा सील किया गया है, उसकी 04 सम्पत्तियों पर लगभग 02 लाख रूपये का कर बकाया है। निगम के राजस्व कर्मचारियों द्वारा बार-बार तगादा करने, वारंट जारी किए जाने के बावजूद भी इनके द्वारा उक्त बकाया राशि जमा नहीं कराई गई, परिणाम स्वरूप आज सीलिंग की कार्यवाही की गई। टास्क फोर्स (कार्य दल) का गठन - आयुक्त श्री आशुतोष पाण्डेय ने निगम के बड़े बकायादारों से बकाया राजस्व की शत प्रतिशत वसूली सुनिश्चित करने एवं इस हेतु ठोस कार्यवाही किए जाने हेतु टास्क फोर्स (कार्य दल) का गठन किया है, गठित दल में संबंधित जोन के जोन कमिश्नर नोडल अधिकारी होंगे, वहीं राजस्व अधिकारी अनिरूद्ध प्रताप सिंह को सहायक नोडल अधिकारी बनाया गया है, तथा सदस्य के रूप में अतिक्रमण शाखा प्रभारी व निगम के 07 जोन के जोन उप प्रभारी एवं संबंधित वार्डो के वार्ड प्रभारी कार्य दल में शामिल किए गए हैं। कार्य दल का गठन करते हुए आयुक्त श्री पाण्डेय ने दल को निर्देशित किया है कि वह बड़े बकायादारों को चिन्हांकित कर नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 के प्रावधानों के तहत संबंधित बड़े बकायादारों की वारंट किए गए सम्पत्तियों को सील बंद किए जाने की कार्यवाही सुनिश्चित करेंगे तथा की गई कार्यवाही की दैनिक रिपोर्ट समक्ष प्रस्तुत की जाएगी। बकाया राशि जमा कराएं, असुविधा से बचें - आयुक्त श्री आशुतोष पाण्डेय ने निगम के सभी बकायादारों से कहा है कि निगम के देय करों की बकाया राशि तत्काल निगम कोष में जमा कराएं तथा निगम द्वारा की जाने वाली किसी कायवाही से होने वाली असुविधा बचें। उन्होने कहा है कि निगम केा विभिन्न करों से प्राप्त होने वाली राशि के द्वारा ही नगर विकास के कार्यो के साथ-साथ मूलभूत सुविधाओं की बेहतरी व इनका निरतर उपलब्धता सुनिश्चित करने से जुड़े कार्य कराए जाते हैं, अत: आवश्यक है कि करों का भुगतान समय पर किया जाए।

संक्षिप्त समाचार

पोड़ी में भाजपा के सक्रिय सदस्यों का हुआ सम्मेलन

कोरबा(विश्व परिवार)। विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बीजेपी अपने कार्यकर्ताओं और सदस्यों के बीच समय-समय पर कोई ना कोई कार्यक्रम एवं उत्साहवर्धक सम्मेलन करती रहती है, जिससे कार्यकर्ताओं एवं सदस्यों का मनोबल बढ़ा रहे। किसी क्रम में पोड़ी स्थित सद्भावना भवन में भाजपा के सक्रिय सदस्यों का सम्मेलन आयोजित किया गया। कार्यक्रम में पोड़ी मण्डल, सिरमिना मण्डल, पसान मण्डल एवं चोटिया मण्डल के सक्रिय सदस्य गण शामिल हुए। सम्मेलन के दौरान बड़ी संख्या में सक्रिय महिला सदस्य भी नजर आई। उक्त कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में दीपका से श्री ज्योति नंद दुबे जी, कटघोरा से श्री पवन गर्ग जी एवं बालको से श्री हितानंद अग्रवाल जी ने विषय लिया। कार्यक्रम की शुरूआत अतिथियों के स्वागत से की गई। स्वागत के उपरांत सम्मेलन में पहुंचे अतिथियों द्वारा सभा को संबोधित किया गया। ज्योति नंद दुबे ने अपने उद्बोधन में भाजपा का इतिहास बात कर सभा को प्रेरित किया। पवन गर्ग ने छत्तीसगढ़ राज्य को मिल रही नव गति विषय पर बात की। जिससे सभा का मनोबल बढ़ा। हितानंद अग्रवाल ने अपने उद्बोधन में वर्तमान में पिछले 11 वर्षों से चल रही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के कार्यकाल की उपलब्धियां गिनाते हुए सभी को जनता के बीच जाकर चल रही योजनाओं एवं कार्यकलापों के बारे में जनता को बताने के बारे में बात की। जिससे जनता के बीच जागरूकता का माहौल पैदा हो। कार्यक्रम के दौरान कुछ नए लोगों ने सदस्य के रूप में उपस्थित अतिथियों के हाथों भाजपा की सदस्यता ली। कार्यक्रम के दौरान सक्रिय सदस्यों के अलावा सरपंच लखनपुर जगदीश नागवंशी, उपसरपंच एतमा नगर बीरबल मरावी, पंच लेपरा विजय चैहान, महिला मोर्चा प्रदेश मंत्री किरण मरकाम, जनपद अध्यक्ष पोड़ी उपरोड़ा माधुरी देवी, पसान मंडल अध्यक्ष प्रताप सिंह मरावी, अनुसूचित जनजाति मोर्चा जिला मंत्री विजय बहादुर जगत, पूर्व मंडल अध्यक्ष एवं जनपद सदस्य पवन पोया, पूर्व मंडल अध्यक्ष चोटिया रवि मरकाम, जिला पंचायत सदस्य राम नारायण उरेति उपस्थित रहे।'

कच्ची महुआ शराब के साथ युवक गिरफ्तार

बिलासपुर(विश्व परिवार)। जिले में नशे के खिलाफ चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत तखतपुर थाना पुलिस ने एक आरोपी को अवैध शराब बिक्री के आरोप में गिरफ्तार किया है। आरोपी के पास से 19 लीटर कच्ची महुआ शराब बरामद की गई है। गिरफ्तार आरोपी परमानंद मानिकपुरी, उम्र 40 वर्ष, निवासी ग्राम देवतरा, तखतपुर है। पुलिस ने बताया कि मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम चोरमा पुल के पास एक व्यक्ति भारी मात्रा में कच्ची शराब के साथ बिक्री हेतु ग्राहक की तलाश कर रहा है। सूचना के आधार पर घेराबंदी कर परमानंद मानिकपुरी को पकड़ा गया। उसके कब्जे से 19 लीटर कच्ची महुआ शराब बरामद की गई, जिसे तत्काल जप्त करते हुए आरोपी के विरुद्ध धारा 34(2) छत्तीसगढ़ आबकारी अधिनियम के तहत अपराध दर्ज कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

आंगनबाड़ी में मनाया गया पोषण पखवाड़ा

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले के कटघोरा तहसील अंतर्गत पोड़ी-उपरोड़ा ब्लॉक के ग्राम मोरगा के आश्रित गांव गोड़पारा में संचालित आंगनबाड़ी केंद्र में पोषण पखवाड़ा मनाया गया। इस मौके पर जिला आयुर्वेद अधिकारी डॉ. उदय शर्मा के मार्गदर्शन में एएनसी 12, बालक 47 व बालिका 52 उपस्थित रहे। कार्यक्रम में कुपोषित बच्चे 3, मध्य कुपोषित बच्चे 10 पाए गए, जिन्हें स्वस्थ रखने आयुर्वेद औषधियों का उपयोग डॉ. रामपति तिवारी व आंगनबाड़ी कार्यकर्ता अर्चना, उषा जायसवाल ने बताए।

बाराती गाड़ी अनंत्रित होकर खेत में घुसी

कोरबा(विश्व परिवार)। उरगा थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पकरिया मे भीषण सड़क हादसा रायगढ़ से बाराती गाड़ी अनंत्रित होकर बिजली खंभे से टकराते हुए खेत पर जाकर पलट गई देखते देखते लोगों की भीड़ जुट गई ओर स्थानीय लोगों ने किसी तरह कार से घायल लोग को बाहर निकला गया। जानकारी के मुताबिक पूरा मामला उरगा थाना क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम पकरिया के पास का है जहाँ रायगढ़ से बारात वापस लौटते समय कार पकरिया के पास पहुंचा और अनंत्रित होकर बिजली खंबे को टक्कर मारते खेत पर पलट गई इस घटना में बारातियों की चीख पुकार मच गई कार पर छह लोग सवार होकर आ रहे थे। किसी तरह से कार में सवार लोगों को बाहर निकला गया सभी घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उनका उपचार जारी है जिसमें दुल्हन की बहन गंभीर रूप से घायल है बताया जा रहा है कि कार चालक काफी नशे में था, इसलिए यहां हादसा हुआ है पुलिस कर रही मामले की जांच।

कलेक्टर ने काम नहीं करने वाले सीएचवो और आरएचवो का वेतन रोकने और निलंबन की कार्यवाही करने के निर्देश

जशपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर रोहित व्यास ने कलेक्टोरेट सभाकक्ष में स्वास्थ्य विभाग के जिला स्वास्थ्य समिति की बैठक लेकर स्वास्थ्य सुविधाओं की जानकारी ली। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा स्वास्थ अधिकारी जी एस जात्रा , विकास खंड स्वास्थ्य अधिकारी डीपीएम ,बीपीएम, स्वास्थ्य विभाग के अधिकारीगण उपस्थित थे। कलेक्टर ने कहा कि जो सीएचवो और आरएचवो काम नहीं कर रहे हैं तो उनके वेतन रोकने की कारवाई करें विभागीय कार्रवाई के साथ निलंबित करने के साथ ही विभागीय जांच के साथ उनकी सेवा समाप्त करने के निर्देश दिए हैं। समीक्षा के दौरान फरसाबहार विकास खंड में टी बी कार्यक्रम की आनलाइन एंट्री की गति बहुत धीमी होने के कारण कलेक्टर ने इस गंभीरता से लिया और गहरी नाराजगी व्यक्त की उन्होंने कहा कि काम नहीं करने वाले कर्मचारियों पर कारवाई करें बिना काम का उन्हें वेतन बिल्कुल भी नहीं दे और नोटिस जारी करके कारवाई जरूर करने के दिए निर्देश । कलेक्टर ने मातृ और शिशु मृत्यु दर की भी समीक्षा की उन्होंने कहा कि संस्था गत प्रसव और गर्भवती माताओं का घर में होने वाले डिलिवरी की जानकारी ली। उन्होंने कहा कि प्रत्येक सप्ताह इसकी अपडेट जानकारी देने के निर्देश दिए। मितानी के माध्यम से गर्भवती माताओं का अस्पताल में संस्थागत प्रसव कराने के लिए कहा हैं। कलेक्टर ने मातृ और शिशु मृत्यु दर का आडिट करवाने के लिए कहा है। उन्होंने कहा कि संस्था गत प्रसव होने पर मां और बच्चे को 48 घंटे अस्पताल में अनिवार्य रूप से रखना है। अस्पताल से जल्दी से छुट्टी नहीं देना है। कलेक्टर ने जिन स्वास्थ्य केन्द्र में केरडा के द्वारा विघुत आपूर्ति की जा रही है। उसको ठीक करवाने के लिए कहा उन्होंने जिन स्वास्थ्य केन्द्र में एप्रोच रोड नहीं है। उसको ठीक करवाने के निर्देश दिए हैं। पत्थलगांव विकास खंड के लुड़ेग में आयुष्मान आरोग्य मंदिर केंद्र,जोकारी, पोतेंगा जशपुर विकास खंड के भागलपुर, करबला के स्वास्थ्य केन्द्र में विघुत आपूर्ति की समस्या का समाधान करने के निर्देश दिए हैं। जशपुर जिले में 230 बिस्तर अस्पताल के कार्य को भी शीघ्र पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने स्वास्थ केन्द्र में 108 एम्बुलेंस और 102 एम्बुलेंस की सुविधा की जानकारी ली। और जरूरतमंद मरीजों को इसका लाभ देने के लिए कहा साथ ही रात्रि के समय में एमरजेंसी मरीजों को तत्काल वाहन को सुविधा उपलब्ध कराने के निर्देश दिए हैं। जशपुर जिले में गर्भवती माताओं को योग का अभ्यास भी करवाया जा रहा है।

खदानों के विस्तार में अड़चनों को दूर करने आए कोयला मंत्री

प्रदूषण निवारण की हो व्यवस्था

कोरबा(विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ के प्रदूषित शहरों में टॉप पर कोरबा जिले के खनन और पावर एरिया शामिल हैं। ऐसे में चाहे नागरिक हो, अधिकारी या मंत्री, प्रदूषण के असर से बच नहीं सकता। गेवरा प्रवास पर पहुंचे कोयला खान मंत्री जी.किशन रेड्डी का सामना ऐसी स्थिति से हुआ। इलाके की तस्वीर ने उन्हें चैकाया। हेलीकाप्टर से गेवरा पहुंचने के बाद उन्होंने कुछ समय गेवरा हाउस में बिताया और फिर खदान का निरीक्षण करने पहुंच गए। कोयला मंत्री रेड्डी के साथ एसईसीएल के सीएमडी सहित निदेशकगण और कोरबा जिले के सीजीएम भी शामिल थे। मंत्री रेड्डी अपने काफिले के साथ गेवरा माइंस के व्यू प्वाइंट पहुंचे। अधिकारियों ने उन्हें खदान के मौजूदा क्षेत्रफल के साथ-साथ विस्तार की योजना के बारे में जानकारी दी। बताया गया कि आसपास के क्षेत्र को खदान में शामिल किया जा रहा है। इससे जुड़ी अड़चनों की जानकारी भी मंत्री को दी गई। इनके समाधान के तौर-तरीके खोजने का आश्वासन मिला। कोयला मंत्री की इसी सिलसिले में कल सुबह 11 बजे मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय से चर्चा होना है। कोयला मंत्री रेड्डी आज गेवरा और दीपका माइंस के विजिट के बाद प्रबंधन के साथ बैठक करेंगे। इधर मंत्री के प्रवास के दौरान विस्थापितों के द्वारा काले झंडे दिखाने की घोषणा के मद्देनजर पुख्ता सुरक्षा व्यवस्था की गई थी ताकि ऐसा कुछ हो न पाए।

रोड पर अतिक्रमण : कबाड़ी के खिलाफ निगम-पुलिस ने चलाया अभियान

कोरबा(विश्व परिवार)। मामले का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि आवेदक जनता वार्ड क्रमांक 29 मुढ़ापार, नगर पालिक निगम कोरबा द्वारा बायपास रोड रामनगर मोड़ से आम रोड तक संचालित कबाड़ी दुकान को हटाने के संबंध में एक शिकायत प्रस्तुत की गई थी। प्राप्त शिकायत के आधार पर कोरबा पुलिस एवं नगर निगम कोरबा की संयुक्त टीम द्वारा अनावेदक तनवीर खान को पूर्व में अतिक्रमण हटाने हेतु निर्देशित किया गया था। किंतु अनावेदक द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार कोई विधिसम्मत कार्यवाही नहीं की गई और ना ही आम रोड से लगे सामानों को हटाया या व्यवस्थित किया गया। दिनांक 10.04.2025 को कोरबा पुलिस एवं नगर निगम की संयुक्त टीम द्वारा पुन: स्थल पर पहुंचकर अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही की गई। इस दौरान अनावेदक तनवीर खान के विरुद्ध छत्तीसगढ़ नगर निगम अधिनियम, 1956 की धारा 322 (सार्वजनिक मार्ग पर अतिक्रमण करने एवं बाधा उत्पन्न करने) के अंतर्गत कार्यवाही की गई। साथ ही, यह भी पाया गया कि अनावेदक द्वारा मुख्य लोक मार्ग का विधि विरुद्ध उपयोग करते हुए देशी शराब की शीशियाँ, पुट्ठा, प्लास्टिक आदि कचरा एकत्र कर सार्वजनिक स्थल पर रखकर मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते हुए पब्लिक न्यूज़ेंस की स्थिति उत्पन्न की जा रही थी। अत: बी.पी.एन.एस. अधिनियम की धारा 152(क) के अंतर्गत कार्यवाही करते हुए मामला माननीय एस.डी.एम. महोदय, कोरबा के न्यायालय में प्रस्तुत किया जा रहा है।

घट रहा भूगर्भ जल स्तर, संरक्षण के लिए रेन वाटर हार्वेस्टिंग और रिसाइकलिंग पर ध्यान देना जरूरी

जशपुर(विश्व परिवार)। पानी की कमी आज पूरे विश्व के लिए एक बड़ी चुनौती बनती जा रही है। भारत भी इसकी चपेट में है। विशाल जनसंख्या के लिए हर रोज स्वच्छ पानी उपलब्ध कराना बड़ी समस्या भी है। पानी की कमी का असर खाद्य सुरक्षा और कृषि उत्पादकता पर भी पड़ रहा है। डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों की मानें तो हर व्यक्ति को अपने रोजमर्रा के लिए करीब 25 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। भारत के कई इलाकों में लोगों को अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए विभिन्न कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। कहीं उन्हें बहुत दूर से पानी ढोकर लाना पड़ता है, तो कहीं सीमित समय के लिए की जा रही आपूर्ति पर निर्भर रहना पड़ता है। देश के कई हिस्सों में भूमिगत जल का बड़ी मात्रा में उपयोग किया जाता है, जिस वजह से देश के विभिन्न हिस्सों के जलस्तर में तीव्र गिरावट दर्ज की जा रही है। वक्त रहते उचित कदम उठाने की जरूरत पर वॉटर हीरो नीरज वानखड़े ने बताया कि आने वाले दिनों में जल की कमी से देश को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। कृषि क्षेत्र को पर्याप्त मात्रा में जल नहीं मिलने से कुल उत्पादन और खाद्य सुरक्षा पर काफी नकारात्मक असर पड़ेगा। विश्व बैंक के अनुसार जल संकट जी डी पी पर असर डालेगा और रोजगार की समस्या उत्पन्न होगी। इसके साथ ही, पर्यावरण और जैव विविधता पर इसके परिणाम देखने होंगे। पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को भारी नुकसान होगा। उन्होंने बताया यह समय की मांग है कि जल सुरक्षा पर गंभीर चिंतन करते हुए उचित कदम उठाया जाय। जल जागृति अभियान के आठवें दिन आज जनपद पंचायत मनोरा के ग्राम पंचायत घाघरा में जल जागरुकता शिविर का आयोजन किया गया. शिविर में वाटर हीरो नीरज वानखड़े ने विभिन्न रोचक जानकारी और अपने अभिनव माडल के जरिये लोगों को जल संरक्षण के संबंध में समझाया और लोगों को जल बचाने के लिए आग्रह किया और इस अभियान को जन जन का अभियान बनाने हेतु आगे आने हेतु अपनी भागीदारी प्रदान करने हेतु आग्रह किया. कार्यक्रम मे जिला पंचायत सदस्य शांति भगत ने कहा कि जल बचाना हम सभी के लिए बहुत जरूरी है. पानी बचाने के लिए हमें अपने जंगल को भी बचाना है, जल स्तर में लगातार गिरावट आ रही है।

अपनी मांगों व समस्याओं के निराकरण के लिए आमजन है पूरी तरह आशान्वित

स्वस्फूर्त शिविर में पहुंच कर उत्साह से कर रहे आवेदन

प्रदेश सरकार की सराहनीय प्रयास की कर रहे प्रशंसा

कोरबा(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के कुशल नेतृत्व में संचालित प्रदेश व्यापी सुशासन तिहार में लोगों द्वारा अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए आवेदन करने का सिलसिला शुरू हो गया है। आमजन उत्साहपूर्वक केंद्रों में आकर अपने जरूरतों, मांगो व परेशानियों के निराकरण के लिए आवेदन प्रस्तुत कर रहे हैं। जिले के ग्रामीण क्षेत्र अंतर्गत पंचायत भवन और शहरी क्षेत्रों के जोन कार्यालयों व विभिन्न वार्डो में सुशासन तिहार के तहत लगाए गए शिविर में लोग बेझिझक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु पहुँच रहे हैं। लोगों का मानना है कि सुशासन तिहार जैसी पहल से हर वर्ग के वंचित लोग निश्चित ही लाभान्वित होंगे। उनकी समस्याओं के निराकरण के लिए शासन प्रशासन द्वारा त्वरित पहल की जाएगी। कोरबा विकासखण्ड के अजगरबहार, माखूरपानी एवं सतरेंगा सहित पूरे जिले में सुशासन तिहार के तहत आमजनो से आवेदन प्राप्त किया जा रहा है। आयोजित किया गया है। माखूरपानी पंचायत अन्तर्गत श्रीमती संतरा कंवर ने अपनी खेती किसानी को उन्नत बनाने और अपनी जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए बोरव्हेल लगाने हेतु आवेदन किया। संतरा बाई ने कहा कि सरकार द्वारा लोगो के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए सार्थक प्रयास किया गया है। आमजन अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए बढ़ चढ़कर कर शिविरों में आवेदन कर रहे है। प्रशासन द्वारा गंभीरता से उनकी समस्याओं का निराकरण किया जाएगा, इस बात का उनको पूरा भरोसा है। माखूरपानी की रहने वाली मीना कंवर ने कहा कि राज्य शासन द्वारा इस आयोजन के माध्यम से शासन की योजनाओं का निर्धारित समय सीमा में क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के पुख्ता उपाय किए जा रहे हैं। जिससे आम जनता को योजनाओं का लाभ मिलने के साथ शासकीय कार्यो में पारदर्शिता भी आएगी। इसी प्रकार सतरेंगा पंचायत में प्रधानमंत्री आवास व शौचालय निर्माण हेतु आवेदन देने आए ग्रामीण सुनील कुमार कंवर व रामशरण ने विधिवत आवेदन भर कर समाधान पेटी में आवेदन जमा किया। उन्होंने बताया कि सुशासन तिहार के माध्यम से हम जैसे अनेक लोगो के समस्याओं का निराकरण होगा साथ ही हमें अनेक शासकीय जन कल्याणकारी योजनाओं का समुचित लाभ भी मिल सकेगा। अपनी जरूरतों की पूर्ति के लिए शिविर में आने वाले लोगों द्वारा प्रदेश सरकार की इस प्रयास की प्रशंसा करते हुए मुक्त कंठ से सराहना की।

संपादकीय

भारत-चीन रिश्तों में सुधार के संकेत

आजकल कूटनीतिक जगत में भारत-चीन संबंधों में सुधार को लेकर काफी चर्चा है। 2020 में लद्दाख की गलवान घाटी में हुए घटनाक्रम के बाद पिछले वर्ष अक्टूबर में रूस में आयोजित ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच मुलाकात हुई थी। इस बैठक में दोनों शीर्ष नेताओं ने सीमा पर तनाव कम करने और द्विपक्षीय संबंधों को पटरी पर लाने का प्रयास किया था। विवाद के कुछ क्षेत्रों से सैनिकों की वापसी जरूर हुई लेकिन अन्य मामलों में प्रगति नहीं हुई। इधर, अमेरिका में डोनाल्ड ट्रंप के दूसरी बार राष्ट्रपति बनने के बाद दुनिया में बहुत तेजी से बदलाव हो रहे हैं। ट्रंप प्रशासन के फैसलों से अमेरिका की घरेलू राजनीति और अंतरराष्ट्रीय राजनीति का नक्शा बदल रहा है। अमेरिका और यूरोपीय देशों के बीच तनातनी बढ़ रही है तो दूसरी ओर राष्ट्रपति ट्रंप और राष्ट्रपति पुतिन के बीच जुगलबंदी आकार ले रही है। इस बदलते अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में भारत और चीन ने कुछ लचीला रुख अपनाया है जिससे आशा बंधती है कि द्विपक्षीय संबंध पटरी पर आ सकते हैं। एक अप्रैल, 1950 को दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संबंध हुआ था। नई दिल्ली और बीजिंग के कूटनीतिक रिश्तों के 75 वर्ष पूरे होने पर दोनों देशों के राष्ट्रपतियों के बीच शुभकामनाओं और पारस्परिक रिश्तों को और बेहतर बनाने के संदेशों का आदान-प्रदान हुआ। राष्ट्रपति जिनपिंग ने भारतीय राष्ट्रपति द्रोपदी मुमरु को प्रेषित अपने संदेश में दोनों देशों के रिश्तों के द्योतक ड्रैगन और हाथी के बीच बेहतर तालमेल बनाने की बात की जबकि राष्ट्रपति मुमरु ने कहा कि भारत और चीन के बीच स्थाई, स्थिर और सौहार्दपूर्ण संबंध का फायदा नई दिल्ली और बीजिंग के अलावा पूरी दुनिया को मिलेगा। वैश्विक मामलों के जानकार किशोर मेहबुबानी का विश्वास है कि अतीत की तरह दोनों देशों के सामने फिर से दुनिया का सिरमौर बनने का अवसर है। लेकिन दोनों ने आपसी संघर्ष का रास्ता अख्तियार किया तो वे यह अवसर गंवा सकते हैं। वास्तव में यह दावा तो कोई नहीं कर सकता कि हाल-फिलहाल भारत और चीन की समस्याओं का स्थायी समाधान हो जाएगा लेकिन दोनों देश जिस रास्ते पर चल रहे हैं, उससे यह आशा जरूर बंधती है कि भविष्य में सैन्य संघर्ष की स्थिति नहीं बनेगी।

मथुरा-काशी से जुड़ी नई मुहिम का आह्वान

ललित गर्ग

दत्तात्रेय होसबले का यह साक्षात्कार महत्वपूर्ण होने के साथ दूरगामी सोच से जुड़ा है। हालांकि, होसबले ने अपने इसी इंटरव्यू में देश की सभी मस्जिदों को मुद्दा बनाने की प्रवृत्ति को सामाजिक ताने-बाने के लिए नुकसानदेह बताकर संतुलन साधने की कोशिश की है। हिंदू समूहों का दावा है कि मुस्लिम आक्रमणकारियों ने मथुरा में श्रीकृष्ण मंदिर और वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर को नष्ट करके उनके ऊपर मस्जिदें बना दीं। इसीलिये विश्व हिंदू परिषद और साधु-संतों ने 1984 में तीन मंदिरों की बात की थी, जिनमें में अयोध्या में श्रीराम मन्दिर बन चुका है। इसके बाद कई लोगों को लगने लगा था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ व उसके अन्य सहयोगी संगठन इससे संतुष्ट हो चुके हैं और काशी व मथुरा के विषय को जैसे उन्होंने त्याग दिया है या भूला दिया है। लेकिन ऐसा नहीं है, लोकसभा में वक्फविधेयक के पेश किए जाने से कुछ ही घंटे पहले संघ के सरकार्यवाह एवं महामंत्री दत्तात्रेय होसबाले ने काशी ज्ञानवापी और मथुरा की श्रीकृष्ण जन्मभूमि से जुड़े आंदोलनों-कार्यक्रमों में संघ के स्वयंसेवकों को न रोकने की बात कह कर एक नई मुहीम के आह्वान का अप्रत्यक्ष रूप से संकेत दे दिया है, जिसके गहरे राजनीतिक निहितार्थ हैं। पिछले कुछ समय से इनको लेकर एक ऊहापोह की स्थिति थी, लेकिन संघ के इस मुद्दे पर छाये धुंधलको को हटाते हुए अपने नये बयान से ऊर्जा का संचार किया है। भले ही इससे राजनीति गर्माये, लेकिन हिन्दू आस्था को इससे खुशी मिली है। संघ की कन्नड़ साप्ताहिक पत्रिका विक्रमा को दिए इंटरव्यू में होसबाले ने साफकर दिया कि उस समय यानी 1984 में विश्व हिंदू परिषद और साधु-संतों ने तीन मंदिरों की बात की थी। इसलिए अगर संघ के स्वयंसेवक इन मंदिरों के लिए काम करना चाहते हैं, तो हम उनको रोकेंगे नहीं। साफहै, इस बयान के बाद इन मथुरा-काशी दोनों स्थलों से जुड़े विवाद और इनके आंदोलनों को एक नई ऊर्जा, इन मन्दिरों के जीर्णोद्धार, स्वतंत्र अस्तित्व हासिल करने में सफलता मिलेगी। इससे एक बार फिर भाजपा की ताकत बढ़ेगी एवं हिन्दुओं को एकजुट करने का वातावरण बनेगा। बिहार में कुछ ही माह बाद विधानसभा चुनाव होने वाले हैं और साल 2027 की शुरुआत में ही उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव होंगे। बिहार एवं उत्तर प्रदेश दोनों ही प्रदेशों में जातिगत गणना और आरक्षण को बड़ा चुनावी मुद्दा बनाने की कोशिशें हो रही हैं। इन दोनों चुनावों में काशी और मथुरा बड़ा मुद्दा बने, तो कोई आश्चर्य नहीं है। दोनों मन्दिर बिहार से सटे उत्तर प्रदेश के दो छोरों पर स्थित हिंदुओं के दो बड़े पवित्र एवं पावन धर्मस्थल हैं। मथुरा में श्रीकृष्ण मंदिर भगवान कृष्ण के जन्मस्थान के रूप में और वाराणसी में काशी विश्वनाथ मंदिर भगवान शिव के ज्योतिर्लिंग के रूप में हिंदू धर्म में अत्यधिक महत्वपूर्ण आस्था-स्थल हैं, जहाँ लोग मोक्ष प्राप्ति के लिए आते हैं। दोनों मंदिर हिंदू धर्म में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं और करोड़ो भक्तों को आकर्षित करते हैं, दोनों मंदिर भारतीय संस्कृति और इतिहास का अहम हिस्सा हैं और उनकी धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाते हैं। काशी में विश्वनाथ और मथुरा में श्रीकृष्ण जन्मभूमि मंदिर का पुनरुद्धार केवल भौतिक संरचनाओं को पुनर्स्थापित करने का प्रयास नहीं है-यह भारत के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक सार को पुनर्जीवित करने एवं आहत हिन्दू आस्था पर मरहम लगाने का आह्वान है। सनातन धर्म की शाश्वत विरासत के प्रतीक ये मंदिर आक्रमणकारियों के सदियों के हमलों के बावजूद हिंदुओं की दृढ़ता और भक्ति के प्रमाण हैं। इन पवित्र स्थलों को पुन: प्राप्त करना हमारे पूर्वजों के बलिदान का सम्मान करने, हमारी विरासत को संरक्षित करने और हमारी समृद्ध परंपराओं को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का कार्य है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि हिंदू मंदिरों के बारे में सच्चाई सबके सामने है, लेकिन ये मामले अनसुलझे हैं। ऐतिहासिक और धार्मिक महत्व के ये स्थल लंबी अदालती लड़ाई के बावजूद अभी भी न्याय का इंतजार कर रहे हैं। दत्तात्रेय होसबले का यह साक्षात्कार महत्वपूर्ण होने के साथ दूरगामी सोच से जुड़ा है। हालांकि, होसबले ने अपने इसी इंटरव्यू में देश की सभी मस्जिदों को मुद्दा बनाने की प्रवृत्ति को सामाजिक ताने-बाने के लिए नुकसानदेह बताकर संतुलन साधने की कोशिश की है। इससे पहले संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा था कि हर मस्जिद के नीचे शिवलिंग तलाशना सही नहीं है। भले ही पिछले साल दिसंबर में मस्जिदों को लेकर उठ रहे विवाद को शांत करने का उन्होंने यह प्रयास किया था। लेकिन काशी और मथुरा भी उसमें शामिल रहे हो, ऐसा कैसे सोचा जा सकता है? होसबले ने इस साक्षात्कार में गौ हत्या, लव जिहाद और धर्मांतरण जैसी चिंताओं को स्वीकार किया। उन्होंने अस्पृश्यता यानी छुआछूत को खत्म करने, युवाओं में संस्कृति के संरक्षण और देशी भाषाओं की सुरक्षा जैसे समकालीन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। भाषा नीति पर होसबाले ने त्रिभाषी दृष्टिकोण का समर्थन किया और इसे 95 प्रतिशत भाषाई विवादों का समाधान बताया। उन्होंने भारतीय भाषाओं के संरक्षण और उनमें शिक्षित लोगों के लिए आर्थिक अवसर सुनिश्चित करने के महत्व पर जोर दिया। होसबोले ने कहा कि लोगों को यह समझना चाहिए कि वैश्विक भूराजनीति में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। यदि भारत में हिंदू समाज मजबूत और संगठित नहीं है, तो केवल 'अखंड भारत' के बारे में बोलने से परिणाम नहीं मिलेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि अतीत की खोज में लगे रहने से समाज अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों पर अपना ध्यान केंद्रित नहीं कर पाएगा, जैसे अस्पृश्यता को समाप्त करना, युवाओं में मूल्यों का संचार करना तथा संस्कृति और भाषाओं को संरक्षित करना। निश्चित ही होसबले के बोल से जहां हिन्दू धर्म एवं संस्कृति की रक्षा को बल मिला है, वहीं राष्ट्रीयता भी मजबूत होती हुई दिख रही है। संघ की स्थापना भी इसी उद्देश्य एवं राष्ट्रवादी आंदोलन को एक मजबूत सांस्कृतिक आधार देने के लिए की गई थी। हमारी सदियों पुरानी प्राचीन सभ्यताएं जो धर्म, अहिंसा और भक्ति के सिद्धांतों पर आधारित थी उपनिवेशवाद के शोर में अपनी आवाज खो न जाये, हिन्दू समाज पर रह-रह हो रहे हमले रूके, हिन्दू एवं सनातन संस्कृति को सलक्ष्य कुचलने के प्रयास विराम पाये-इन जटिल स्थितियों में भारत के लोगों को एक सांस्कृतिक छत्र के नीचे एकजुट करने की दृष्टि से होसबले ने जगाया है, चेताया है, संगठित होने का आह्वान किया है। निश्चित तौर पर इन दोनों मन्दिर मुद्दों को नए सिरे से हवा देने की इस कवायद ने संघ विरोधियों एवं मुस्लिम तुष्टिकरण की राजनीति करने वालों के सामने एक नई गंभीर चुनौती पेश की है। खासकर यह देखते हुए कि अयोध्या की रणनीतिक सफलता ने हिंदुत्व की राजनीति का आधार मजबूत किया है, हिन्दुओं को संगठित किया है। मंदिर-मस्जिद विवाद के बीच संघ की तरफ से पहले भी कई बयान आते रहे हैं। ये बयान दर्शाते हैं कि संघ भले ही सीधे-सीधे विवाद से खुद को भले ही अलग रखता हो, वैचारिक रूप से वह इनको पूरा समर्थन देता है। संघ का समर्थन देश को अराजक बनाने का कभी नहीं रहा, उसके सामने बड़ा लक्ष्य देश को 2047 तक विकसित राष्ट्र बनने का भी है। बांग्लादेश समेत कई पड़ोसी देशों में भारत-विरोधी शक्तियां नए सिरे से सक्रिय होने लगी हैं। उनसे लड़ने की ताकत एवं रणनीति भी संघ चाहता है। संघ सामंजस्यपूर्ण और संगठित भारत के आदर्श को आकार देने के लिये प्रतिबद्ध है। श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति जैसे आंदोलनों ने भारत के सभी वर्गों और क्षेत्रों को सांस्कृतिक रूप से संगठित किया। राष्ट्रीय सुरक्षा से लेकर सीमा सुरक्षा, शासन में सहभागिता से लेकर ग्रामीण विकास तक, राष्ट्रीय जीवन का कोई भी पहलू संघ के स्वयंसेवकों से अछूता नहीं है।

आलेख

वक्फ अधिनियम में संशोधन

विनीत नारायण

वक्फ संशोधन बिल, जिसे हाल में भारतीय संसद में पेश किया गया और 2-3 अप्रैल, 2025 को लोक सभा और राज्य सभा से पारित किया गया, देश में गहन बहस का विषय बन गया है। यह बिल 1995 के वक्फ अधिनियम में संशोधन करने और वक्फ संपत्तियों के प्रबंधन को अधिक पारदर्शी और समावेशी बनाने का दावा करता है। सरकार इसे प्रगतिशील कदम के रूप में पेश कर रही है, जबकि विपक्ष और कई मुस्लिम संगठन इसे धार्मिक स्वायत्तता पर हमला मानते हैं। इस लेख में हम इस बिल के समर्थन और विरोध के तकरे को तटस्थ दृष्टिकोण से देखेंगे और इसके संभावित प्रभावों का आकलन करेंगे। वक्फ इस्लामी परंपरा है जिसमें कोई व्यक्ति अपनी संपत्ति को धार्मिक, शैक्षिक या परोपकारी उद्देश्यों के लिए समर्पित कर देता है। भारत में वक्फ संपत्तियों का प्रबंधन 1995 के वक्फ अधिनियम के तहत होता है, जिसके अंतर्गत राज्य वक्फ बोर्ड और केंद्रीय वक्फ परिषद कार्य करते हैं। वक्फ संशोधन बिल, 2024 में कई बदलाव प्रस्तावित हैं, जैसे वक्फ बोर्ड में गैर-मुस्लिम और महिला सदस्यों की अनिवार्यता, संपत्ति सर्वेक्षण के लिए कलेक्टर की भूमिका और विवादों में हाई कोर्ट की अपील का प्रावधान। सरकार का कहना है कि यह बिल वक्फ पञ्राली में पारदर्शिता और जवाबदेही लाएगा जबकि विरोधी इसे वक्फ की मूल भावना के खिलाफ मानते हैं। इस बिल का समर्थन करने वालों का कहना है कि वक्फ बोडरे में भ्रष्टाचार और कुप्रबंधन की शिकायतें लंबे समय से चली आ रही हैं। देश में 8.7 लाख से अधिक वक्फ संपत्तियां हैं, जिनकी कीमत लगभग 1.2 लाख करोड़ रु पये आंकी गई है, लेकिन इनका उपयोग गरीब मुस्लिम समुदाय के कल्याण के लिए प्रभावी ढंग से नहीं हो पा रहा। कलेक्टर द्वारा संपत्ति सर्वेक्षण और रिकॉर्ड डिजिटलीकरण जैसे प्रावधानों से इन संपत्तियों का बेहतर प्रबंधन संभव होगा। बिल में वक्फ बोर्ड में कम से कम दो महिलाओं और गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करने का प्रावधान भी है। समर्थकों का तर्क है कि इससे बोर्ड में लैंगिक और सामाजिक समावेशिता बढ़ेगी। विशेष रूप से पसमांदा मुस्लिम समुदाय, जो सामाजिक-आर्थिक रूप से पिछड़ा है, इस बिल का समर्थन करता है, क्योंकि उनका मानना है कि मौजूदा व्यवस्था में धनी और प्रभावशाली लोग वक्फ संपत्तियों पर कब्जा जमाए हुए हैं। पहले वक्फ ट्रिब्यूनल का फैसला अंतिम माना जाता था, जिसे अदालत में चुनौती नहीं दी जा सकती थी। नये बिल में हाई कोर्ट में अपील का अधिकार दिया गया है, जिसे समर्थक संविधान के अनुरूप और न्यायसंगत मानते हैं। उनका कहना है कि इससे वक्फ बोर्ड के मनमाने फैसलों पर अंकुश लगेगा। बिल में यह शर्त भी जोड़ी गई है कि बिना दान के कोई संपत्ति वक्फ की नहीं मानी जाएगी। समर्थकों का कहना है कि इससे उन मामलों में कमी आएगी जहां वक्फ बोर्ड बिना ठोस सबूत के संपत्तियों पर दावा करता था, जिससे आम लोगों को परेशानी होती थी। वहीं इस बिल के विरोध में ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और विपक्षी दलों का कहना है कि यह बिल वक्फ की मूल भावना को कमजोर करता है। वक्फ धार्मिक परंपरा है और इसमें गैर-मुस्लिम सदस्यों को शामिल करना इसकी पवित्रता को नुकसान पहुंचाएगा। बिल में कलेक्टर को वक्फ संपत्तियों का सर्वेक्षण करने और उनकी स्थिति तय करने का अधिकार दिया गया है। विरोधियों का कहना है कि यह सरकारी हस्तक्षेप है, जो वक्फ बोर्ड की स्वायत्तता को खत्म कर देगा। उनका तर्क है कि कलेक्टर, जो ज्यादातर गैर-मुस्लिम हो सकता है, वक्फ के धार्मिक महत्त्व को नहीं समझ पाएगा। विपक्ष का दावा है कि यह बिल संविधान के अनुच्छेद 25 और 26 का उल्लंघन करता है, जो धार्मिक स्वतंत्रता और धार्मिक संस्थाओं के प्रबंधन का अधिकार देता है। उनका कहना है कि वक्फ एक इस्लामी परंपरा है, और इसमें सरकारी दखल अल्पसंख्यक अधिकारों पर हमला है। ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड और अन्य संगठनों ने बिल के खिलाफ देशव्यापी विरोध प्रदर्शन किए हैं। ईद और जुमातुल विदा जैसे अवसरों पर काली पट्टी बांध कर नमाज पढ़ने की अपील इसका उदाहरण है। विरोधियों का कहना है कि यह बिल मुस्लिम समुदाय को अपने ही धर्म से दूर करने की साजिश है। वक्फ संशोधन बिल के लागू होने से कई सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव देखने को मिल सकते हैं। यदि यह पारदर्शिता और समावेशिता को बढ़ाता है, तो वक्फ संपत्तियों का उपयोग गरीब मुस्लिमों, विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के कल्याण के लिए बेहतर तरीके से हो सकता है।

शराबबंदी मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति बड़ी मिसाल

ओपी सांस्कृत्यायन

सार्वजनिक जीवन में नैतिक शुचिता और पारदर्शिता बड़ी दरकार है। इस मूल्यबोध की समझ दुनिया में चाहे जब बनी-बिगड़ी हो भारत में राष्ट्रीय आंदोलन के दिनों से इसे महत्त्व मिला। महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वाधीनता आंदोलन की तो कसौटी ही यह रही कि इसने अहिंसक मूल्य-निष्ठा को सर्वोपरि माना। 1917 में गांधी जब चंपारण में नील किसानों पर जुल्म के खिलाफ सत्याग्रह की सैद्धांतिकी का जमीनी परीक्षण कर रहे थे, तब उन्होंने कहा था कि बिहार की धरती पर उन्हें अहिंसा देवी के दर्शन हुए। दर्शन का यह बोध जहां आगे चल कर उनके नेतृत्व में चले स्वाधीनता संघर्ष में दिखा वहीं सेवा से जुड़े रचनात्मक कार्यक्रमों को लेकर भी उन्होंने एक गंभीर तकाजे को देश-समाज के सामने रखा। दुर्भाग्य रहा देश का कि आजादी के करीब आते-आते ये सारे बोध और तकाजे कमजोर पड़ते गए। आजाद भारत में अहिंसक मूल्य-निष्ठा की आखिरी गूंज बिहार आंदोलन के दौरान सुनाई पड़ी। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में आरंभ हुए आंदोलन की नाटकीय राजनीतिक परिणिति की चर्चा आज खूब होती है, पर ज्यादा जरूरी है यह समझना कि इस आंदोलन की वैचारिकी जेपी ने क्या तय की थी। कांग्रेस की समाजवादी धारा के पुरोधा रहे जेपी के मन में गांधी को लेकर असंदिग्ध आस्था थी। इसलिए जब संपूर्ण क्रांति की अलख के साथ वे सड़कों पर उतरे तो उन्होंने अपने साथ चल रही जमात के सामने अहिंसक मूल्य-निष्ठा की कसौटी सबसे पहले रखी। यह और बात है कि आपातकाल की घोषणा के बाद संपूर्ण क्रांति सीधे-सीधे लोकतंत्र और संविधान को बचाने की फौरी लड़ाई के रूप में तब्दील हुई और देश में प्रचलित राजनीतिक संस्कृति में बदलाव की मुराद दम तोड़ गई। इतिहास का यह भी दिलचस्प चक्र है कि आज बिहार सत्ता और राजनीति में ऐसे ही कुछ अहिंसक मूल्यों को लेकर फिर से चर्चा में है। बिहार में शराबबंदी के नौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। राज्य में शराबबंदी का फैसला ऐसा है, जो राजनीतिक नफा-नुकसान को छोड़कर इस निर्णय को लेने के नीतीश कुमार के नैतिक साहस को तारीखी अहमियत देता है। यह अहमियत तब ज्यादा समझ में आती है जब हम देखते हैं कि एक तरफ दिल्ली के मुख्यमंत्री के पद पर बैठा व्यक्ति शराब घोटाले में जेल की हवा खाता है, तो वहीं अपने राज्य में शराबबंदी का फैसला लेने वाला राजनेता नौ साल बाद भी अपनी नैतिकता पर कायम है। गांधी की वैचारिक चेतना और दृष्टि में मद्य निषेध को लेकर एक गंभीर आग्रह रहा है। आज आजादी के इतने समय बाद इस तरह के किसी नैतिक जोर या संकल्प की बात बेमानी लगती है। खास तौर पर बीते कुछ दशकों में समय और समाज ने जिस जीवन-दृष्टि को तेजी से अंगीकार किया है, उसमें न तो निजी और न ही सार्वजनिक जीवन में किसी नैतिक दरकार के लिए जगह छोड़ी है। सभ्यता और संस्कृति के इतिहास में यह एक ऐसा दौर है, जिसके नैतिक पराभव ने मनुष्य को विश्व युद्ध के बाद एक नई अधोगति तब पहुंचा दिया है। बहरहाल, बात अकेले शराबबंदी की करें तो इस फैसले का नैतिक के साथ सामाजिक आधार काफी बड़ा है। बिहार में नीतीश कुमार के इस बड़े फैसले की नींव उस संवाद से पड़ी जब वे जीविका दीदियों से बात कर रहे थे। नीतीश भारतीय राजनीति में उस समाजवादी परंपरा से आते हैं, जिसने अपने वैचारिक तेज को जहां सामाजिक-राजनीतिक स्तर पर नई वैचारिकी में ढाला, वहीं गांधी के अहिंसावादी विचारबोध को भी समान रूप से अपनाया। शराबबंदी लागू करने के उनके फैसले को इस लिहाज से देखें-समझें तो इसका सिरा सीधे समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार से जुड़ता है। बिहार ने देश और दुनिया के आगे सुशासन का वह मॉडल रखा है, जिसमें महिलाएं न सिर्फ आत्मविश्वास से भरी हैं, बल्कि शिक्षा और स्वावलंबन के क्षेत्र में भी तेजी से आगे बढ़ रही हैं। शराबबंदी का फैसला इस बदलाव के रकबे को और बढ़ा देता है। गौरतलब है कि नीतीश सरकार ने बिहार में शराबबंदी का फैसला अप्रैल, 2016 में जरूर लिया पर इससे पहले महिला सशक्तीकरण के लिहाज से कई बड़े फैसले ले चुके थे। 2006 में बिहार में पंचायती राज संस्थाओं में 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया। तब ऐसा करने वाला बिहार देश का पहला राज्य था। 2006 में ही बिहार सरकार ने प्रारंभिक शिक्षक नियुक्ति में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण देने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। इसी तरह 2007 से नगर निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण मिला। 2013 से बिहार पुलिस में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण का मार्ग प्रशस्त हुआ। प्रदेश में महिलाओं के बीच बहाल हुए आत्मविश्वास का नतीजा है कि बिहार आज सबसे ज्यादा 10.81 लाख स्वयंसहायता समूह बना कर देश में पहले स्थान पर है। इससे 1.35 करोड़ से अधिक महिलाएं आत्मनिर्भर बनी हैं। बिहार में नौ वर्षों से लागू शराबबंदी की सफलता के नैतिक और सामाजिक मूल्यांकन करते हुए जान लेना जरूरी है कि इस फैसले के प्रशासनिक पेचोखम भी कम नहीं हैं। इसलिए चुनावी मौसम में इस फैसले को हटाने तक की अनैतिक पराकाष्ठा तक कई सियासी जमातें पहुंच जाती हैं। बात करें पूरे देश की तो 1960 में बॉम्बे से अलग होकर जब गुजरात बना तभी से वहां शराबबंदी लागू है। पूर्वोत्तर के कई राज्यों में भी शराबबंदी है। अलबत्ता, मणिपुर से हरियाणा तक ऐसे कई प्रदेश भी हैं, जो इस बड़े फैसले पर अटल नहीं रह सके। आज जब भारत सॉफ्ट पावर के तौर पर दुनिया में अपनी चमक बिखेर रहा है तो इस नैतिक और सांस्कृतिक मूल्य-निष्ठा पर ज्यादा गंभीर होने की जरूरत है। आखिरकार, शराबबंदी का फैसला महज नैतिक फैसला भर नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का बड़ा आधार भी है। याद रहे कि हमारे संविधान में भी इस बात पर जोर दिया गया है।

गंभीर खतरे की घंटी है माइक्रोप्लास्टिक

विजय शर्मा

वैज्ञानिकों ने पाया है कि प्लास्टिक हम सबके शरीर में किसी-न-किसी के रूप में पहुंच रहा है। कैसे पहुंच रहा है, इसे जानने के लिए हमें पिछले दिनों अमेरिका के कोलोराडो में हुए एक अध्ययन के नतीजों को समझना होगा। प्रकृति को पस्त करने, वायु एवं जल प्रदूषण, कृषि फसलों पर घातक प्रभाव, मानव जीवन एवं जीव-जन्तुओं के लिये जानलेवा साबित होने के कारण समूची दुनिया में बढ़ते प्लास्टिक एवं माइक्रोप्लास्टिक के कण एक बड़ी चुनौती एवं संकट है। पिछले दिनों एक अध्ययन में मनुष्य के मस्तिष्क में प्लास्टिक के नैनो कणों के पहुंचने पर चिंता जतायी गई थी। दावा था कि प्रतिदिन सैकड़ों माइक्रोप्लास्टिक कण सांसों के जरिये हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। ऐसे तमाम नये राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय शोध-सर्वेक्षण-अध्ययन चेतावनी दे रहे हैं कि हमारी सांसों, पेयजल व फसलों में घातक माइक्रोप्लास्टिक की मौजूदगी एक गंभीर संकट है। विश्व की कई शोध पत्रिकाओं में छपे शोध-लेख समय-समय पर विभिन्न अध्ययनों के चेताने वाले निष्कर्ष प्रकाशित करते रहते हैं। संकट तो यहां तक बढ़ गया है कि प्लास्टिक के कण पौधों की प्रकाश संश्लेषण प्रक्रिया को प्रभावित करने लगे हैं, जिससे खाद्य श्रृंखला में शामिल कई खाद्यान्नों की उत्पादकता में गिरावट आ रही है। ऐसा निष्कर्ष अमेरिका-जर्मनी समेत कई देशों के साझे अध्ययन के बाद सामने आया है। दरअसल, प्लास्टिक कणों के हस्तक्षेप के चलते पौधों के भोजन सृजन की प्रक्रिया बाधित हो रही है। इस तरह माइक्रोप्लास्टिक की दखल भोजन, हवा व पानी में होना न केवल प्रकृति, कृषि, पर्यावरण वरन मानव अस्तित्व के लिये गंभीर खतरे की घंटी ही है। जिसे बेहद गंभीरता से लिया जाना चाहिए और सरकारों को इस संकट से मुक्ति की दिशाएं उद्घाटित करने के लिये योजनाएं बनानी चाहिए। माइक्रोप्लास्टिक हमारे वातावरण का एक हिस्सा बन चुके हैं। प्लास्टिक की बहुलता एवं निर्भरता के कारण मौत हमारे सामने मंडरा रही है। हम चाहकर भी प्लास्टिकमुक्त जीवन की कल्पना नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि माइक्रोप्लास्टिक जीवन में हैं, हवा में हैं, पानी में हैं, नदी में हैं, समुद्र में हैं, बारिश में हैं, और इन सबके चलते वे हमारे भोजन में भी हैं, हम मनुष्यों के भी, पशुओं के भी और शायद सभी प्राणियों के जीवन में भी हैं। लगातार दूषित होते जल, जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता और भूमि क्षरण जैसे मुद्दों पर सरकार की

जागरूकता एवं सहयोग का भरोसा दिलाया जाता रहा है। प्लास्टिक प्रदूषण के खतरों को देखते हुए सरकार ने ठान लिया है कि भारत में सिंगल यूज प्लास्टिक के लिए कोई जगह नहीं होगी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पूर्व में ही देश को स्वच्छ भारत मिशन के तहत प्लास्टिक कचरे से मुक्त करने की अपील करते हुए एक महाभियान का शुभारंभ कर चुके हैं। प्लास्टिक के कारण देश ही नहीं, दुनिया में विभिन्न तरह की समस्याएं पैदा हो रही हैं। इसके सीधे खतरे दो तरह के हैं। एक तो प्लास्टिक में ऐसे बहुत से रसायन होते हैं, जो कैंसर का कारण माने जाते हैं। इसके अलावा शरीर में ऐसी चीज जा रही है, जिसे हजम करने के लिए हमारा शरीर बना ही नहीं है, यह भी कई तरह से सेहत की जटिलताएं पैदा कर रहा है। इसलिए आम लोगों को ही इससे मुक्ति का अभियान छेड़ना होगा, जागृति लानी होगी। चिंता की बात यह भी है कि विकासशील देशों में सरकारें रोटी, कपड़ा व मकान जैसी मूलभूत सुविधाओं के जुगाड़ में लगे रहने और गरीबी की समस्या से जूझते हुए, स्वास्थ्य के उन उच्च गुणवत्ता मानकों को वरीयता नहीं दे पाती, जो अंतर्राष्ट्रीय मापदंडों के अनुरूप हों। शोधकर्ताओं ने केरल में दस प्रमुख ब्रांडों के बोतलबंद पानी को अध्ययन का विषय बनाया है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि प्लास्टिक की बोतल के पानी का इस्तेमाल करने वाले व्यक्ति के शरीर में प्रतिवर्ष 153 हजार प्लास्टिक कण प्रवेश कर जाते हैं। निश्चय ही यह चिंता का विषय है। हालांकि, सर्वेक्षण के लिये केरल को ही चुनना और बोतलबंद पानी बेचने वाली भारतीय कंपनियों को चुनने को लेकर कई सवाल पैदा हो सकते हैं। पिछली सदी में जब प्लास्टिक के विभिन्न रूपों का अविष्कार हुआ, तो उसे विज्ञान और मानव सभ्यता की बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया था, अब जब हम न तो इसका विकल्प तलाश पा रहे हैं और न इसका उपयोग ही रोक पा रहे हैं, तो क्यों न इसे विज्ञान और मानव सभ्यता की सबसे बड़ी असफलता एवं त्रासदी मान लिया जाए? वैज्ञानिकों ने पाया है कि प्लास्टिक हम सबके शरीर में किसी-न-किसी के रूप में पहुंच रहा है। कैसे पहुंच रहा है, इसे जानने के लिए हमें पिछले दिनों अमेरिका के कोलोराडो में हुए एक अध्ययन के नतीजों को समझना होगा। अमेरिका के जियोलॉजिकल सर्वे ने यहां बारिश के पानी के नमूने जमा किए। ये नमूने सीधे आसमान से गिरे पानी के थे, बारिश की वजह से सड़कों या खेतों में बह रहे पानी के नहीं। जब इस पानी का विश्लेषण हुआ, तो पता चला कि लगभग 90 फीसदी नमूनों में प्लास्टिक के बारीक कण या रेशे थे, जिन्हें माइक्रोप्लास्टिक कहा जाता है। ये इतने सूक्ष्म होते हैं कि हम इन्हें आंखों से नहीं देख पाते।

भगवान महावीर स्वामी के जन्मकल्याणक महोत्सव में निकाली गई भव्य शोभा यात्रा

भाटापारा (विश्व परिवार)। भगवान महावीर स्वामी जी का जन्म कल्याणक महोत्सव सकल जैन समाज द्वारा बड़े ही हर्षोल्लास से मनाया गया। हिंदू पंचांग के अनुसार चैत्र मास के 13वें दिन महावीर स्वामी का जन्म बिहार के कुंडग्राम में हुआ था। इन्हें जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर के रूप में माना जाता है। महावीर स्वामी जी जैन 24 तीर्थंकरों में से हैं जिन्होंने तपस्या से आत्मज्ञान की प्राप्ति की थी। कहा जाता है कि तीर्थंकर वह लोग होते हैं जो इंद्रियों और भावनाओं पर पूरी तरह से विजय प्राप्त कर लेते हैं। महावीर स्वामी ने आत्मज्ञान की तलाश में 30 वर्ष की उम्र में ही अपना घर-द्वार छोड़ दिया था। उन्होंने 12 वर्ष तक कठोर तपस्या की और दीक्षा ग्रहण की। तप के पश्चात ही भगवान महावीर को कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति हुई और वो तीर्थंकर कहलाए और सभी को जियो और जीने दो का संदेश दिया।

दिगंबर जैन समाज अध्यक्ष पीयूष जैन ने बताया कि श्वेताम्बर समाज श्री संघ के तत्वाधान एवं राजकुमार चोपड़ा जी के नेतृत्व में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा संघ द्वारा रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें 51 रक्त वीरों ने अपना बहुमूल्य रक्त का दान किया तथा श्वेताम्बर मंदिर जी से श्री जी की भव्य शोभायात्रा निकाली गयी।जो नगर के प्रमुख मार्गों से होते हुए वापिस श्री संकलेश्वर पार्श्वनाथ श्वेताम्बर मंदिर जी में संपन्न हुई।शोभा यात्रा का जगह जगह समाज के सभी लोगों ने भव्य स्वागत किया तथा भक्ति करते हुए पालकी उठाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

श्री दिगंबर जैन परिवार पंचायती मंदिर जी में महिला मंडल के तत्वाधान में 9 अप्रैल सुबह 8 बजे णमोकार महामंत्र का डेढ़ घंटे का पाठ एवं रात्रि में भजन संध्या तथा महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव के दिन प्रात:काल 7 बजे मंगलाष्टक व भगवान महावीर स्वामी की शांति धारा, आरती व पूजनविधि सम्पन्न की गई, जिसमें मूलनायक भगवान महावीर स्वामी जी का महामाष्तकाभिषेक करने का सौभाग्य सुभाष, कैलाश, प्रकाश जैन परिवार एवं वीणा, गौरव, सौरव गदिया परिवार को तथा शिखर पर ध्वजा फहराने का सौभाग्य समाज के अध्यक्ष सवाई सिंघई अशोक, पीयूष रेखा बैग परिवार को प्राप्त हुआ।इसके पश्चात् श्री मति रेखा, ऋषभ जैन परिवार के द्वारा वात्सल्य भोज का आयोजन किया गया।शाम को महावीर स्वामी जी का अति मनमोहक पालना झूलाने एवम आरती तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम रखा गया। **-पीयूष जैन**

डोंगरगढ़ में भगवान महावीर स्वामी का जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया

डोंगरगढ़ (विश्व परिवार)। श्री दिगम्बर जैन समाज डोंगरगढ़ के तत्वाधान में भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव बहुत हर्षोलास के साथ धूमधाम से मनाया गया। तीन दिन पूर्व से ही प्रात: 6 बजे से प्रतिदिन भक्तों द्वारा भगवान का भजन किर्तन करते हुए प्रभात फेरी निकाली गयी। दिनांक 10 अप्रैल 2025 दिन गुरुवार को प्रात: 7 बजे भगवान का अभिषेक, पूजन एवं मंगल आरती हुई तत्पश्चात प्रात: 9 बजे भगवान महावीर स्वामी जी की भव्य शोभा यात्रा गाजे ड्ड बाजे के साथ छत्तीसगढ़ गौरव निखिल जैन के मधुर भजनों के साथ सभी भक्त नृत्य करते हुए श्री दिगम्बर जैन मंदिर से निकले एवं बुधवारी, रेलवे चौक, जय स्तम्भ चौक, गोल बाजार होते हुए वापस श्री दिगम्बर जैन मंदिर पहुचे। इस दौरान जगह ड्ड जगह भगवान की अगवानी के लिए उनके भक्तों द्वारा रंगोली, आरती एवं श्रीफल चढ़ाकर उनका वंदन किया। शोभा यात्रा के बाद मंदिर जी मे भगवान का पुन: अभिषेक, पूजन एवं मंगल आरती कि गयी तत्पश्चात समाज का सामूहिक भोज जैन भवन बूटी बड़ा में संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में शोभा बैग हाउस, हैप्पी कलेक्शन एवं सिंघई बुक डिपो द्वारा अपने प्रतिष्ठान के सामने आम जनों को भंडारा, छाज एवं शरबत वितरण किया गया एवं जाग्रति महिला मंडल के द्वारा वृद्धाश्रम एवं अस्पताल में मरीजों को फल वितरण किया गया। इस मांगलिक कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए श्री दिगम्बर जैन समाज के अध्यक्ष श्री अनिल जैन, कोषाध्यक्ष श्री जय कुमार जैन एवं सचिव श्री यतीश कुमार जैन ने सम्पूर्ण समाज को धन्यवाद ज्ञापित किया।उक्त जानकारी निशात जैन (निशु) द्वारा दी गयी है।

जियो और जीने दो के सूत्र प्रदाता भगवान महावीर का जन्मकल्याणक पर्व मनाया, निकाली गई शोभायात्रा

गौरेला (विश्व परिवार)। जियो और जीने दो के सूत्र प्रदाता भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महापर्व श्रद्धा और भक्ति के साथ मनाया गया। ढाई हजार वर्ष पूर्व संसार को शांति और अहिंसा की राह दिखाकर भगवान महावीर ने सहीअस्तित्व से जीवन जीने की कला सिखाई।

श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में प्रात: काल विशेष पूजन अभिषेक किया गया। शांति धारा के प्रथम कलश का सौभाग्य ललित जैन सुबोध जैन परिवार को व द्वितीय कलश का सौभाग्य वेदचन्द जैन राहुल गौरव सौरभ जैन परिवार को प्राप्त हुआ।पूजन अभिषेक के उपरांत नगर में शोभायात्रा निकाली गई। शोभायात्रा में विशेष विमान में भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा के साथ वृद्ध बाल महिलाओं ने वाद्ययंत्रों के साथ नृत्य करते हुए जियो और जीने दो के नारे लगाये। स्थान स्थान पर भगवान महावीर स्वामी की प्रतिमा की आरती उतारी गई।

शोभायात्रा में पंच्चानवे वर्षीय वरिष्ठ सदस्य श्री विट्ठल भाई, ज्ञान चंद जैन, अशोक कुमार, वेद चंद जैन, अजीत जैन, किशोर जैन, सुधीर जैन, उत्तम चंद जैन अध्यक्ष जैन समाज गौरेला, अमित जैन, विमल जैन, संदीप सिंघई, सपनिल जैन, सुकांत जैन, ललित जैन, सुबोध जैन, नरेश गोयल उदयपुर, सचिन सोनल जैन, अनुज जैन, संजय जैन, जयदीप गोहलिया, बंटी गोहलिया, नीरज जैन, रमेश राजेश जैन, अनिल जैन, अभिषेक जैन, गौरव सौरभ जैन सहित जैन समाज की महिलाएं सम्मिलित थीं। शोभायात्रा, मंदिर जी से आरंभ होकर गांधी चौक, मंगली बाजार, रेस्टहाउस रोड, मुख्य मार्ग से होती हुई मंदिर जी पहुंची।

सर्व कालिक, प्रासांगिक शांति और अहिंसा के माध्यम से संसार को समस्याओं का स्थाई समाधान देने वाले परम उपयोगी जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्मकल्याणक के शुभ दिन जैन समाज गौरेला के युवाओं ने गांधी चौक में नगर वासियों को स्वादिष्ट खीर वितरित कर शांति सौहार्द सद्भावना की प्रेरणा दी।

रात्रि में अहिंसा भवन में समाज की महिलाओं और विद्यासागर पाठशाला के बच्चों ने अपनी मोहक प्रस्तुतियों से दर्शकों को प्रभावित किया। महिलाओं द्वारा प्रस्तुत माता त्रिसला के सोलह स्वप्नों का मंचन बहुत सुंदर प्रभावी था। श्रीमती आकांक्षा जैन के निर्देशन व श्रीमती अंजलि जैन के संचालन में प्रस्तुत नृत्य के मंचन ने मन मोह लिया। **-वेदचन्द जैन**

पाण्डुकशिला पर श्रद्धालुओं ने किया श्री जी का अभिषेक

अभिनंदनोदय तीर्थ से विमान जी में विराजित निकली श्रीजी की शोभायात्रा

ललितपुर (विश्व परिवार)। भगवान महावीर स्वामी के 2625 वें जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में अभिनंदनोदय तीर्थ से श्री जी की भव्य शोभायात्रा वर्णी जैन कालेज की भूमि पाण्डुकशिला पर पहुंची जहां श्रद्धालुओं ने श्री जी का अभिषेक कर धर्मलाभ लिया।आज प्रात:काल अभिनंदनोदय तीर्थ से विमान जी में विराजित श्री जी की शोभायात्रा गाजे बाजे के साथ निर्धारित मार्ग से होते हुए श्री वर्णी जैन कालेज की भूमि स्थित पाण्डुकशिला पर पहुंची। जहां प्रतिष्ठाचार्य पं0 संतोष अमृत के मार्गदर्शन में अभिषेक आदि की मांगलिक कियाए हुई।जिसमें सौधर्म इन्द्र आकाश जैन, ईशान इन्द्र विमल चंद्र डुगारसा, सानतकुमार इन्द्र शिक्षक पुष्पेन्द्र जैन मडावरा, माहेन्द्र इंद्र इजी0 कलश जैन, शान्तिधारा उत्तमचंद्र जैन एडवोकेट धनगौल, पवन जैन झरावटा द्वारा किया गया जिसमें छत्र स्थापन विमल जैन रेमण्ड एवं चवर स्थापन पूर्व अध्यक्ष जैन पंचायत अनिल जैन अंचल एवं चौ0 सनत जैन खनियाधाना ने किया। श्री जी के अभिषेक के उपरान्त आरती सुधा कलश महिला मण्डल ललितपुर ने भक्तिपूर्वक की। कार्यक्रम के प्रारम्भ में पंचायत समिति के पदाधिकारियों ने आचार्य श्रेष्ठ विद्यासागर महाराज के चित्र अनावरण करके दीपप्रज्जवलित किया। इस मौके पर जैन पंचायत के अध्यक्ष डा0 अक्षय टडैया ने वर्णी कालेज की भूमि पर भव्य शिक्षा के आलय स्थापना का संकल्प दोहराया। उन्होने वर्णी कालेज भूमि की विवादित स्थिति से अवगत कराते हुए कहा शीघ्र ही जैन समाज इस भूमि पर जनहित में कल्याणकारी योजनाए शिक्षा का केन्द्र बनाकर सर्व समाज के हित में कार्य करेगी। इस मौके पर दिगम्बर जैन श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर द्वारा संचालित संत सुधासागर आवासीय कन्या महाविद्यालय की अधिष्ठात्री श्रीमति शीला डोंडिया, निर्देशक डॉ. बंदना जैन ने बालिका शिक्षा उन्नयन के लिए मुनि श्री सुधासागर महाराज के आशीर्वाद से चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी। अभिनंदनोदय तीर्थ के प्रबंधक मोदी पंकज जैन ने आयोजन की सफलता में सहयोगियों का आभार व्यक्त किया। इस मौके पर पाठशाला परिवार के बच्चों ने रोचक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। जिस पर उन्हें पुरस्कृत कर सम्मानित किया गया।

भगवान महावीर की जन्मभूमि कुण्डलपुर में बिहार सरकार द्वारा दो दिवसीय महोत्सव का आयोजन झंडारोहण के साथ प्रारम्भ

भव्य श्रीजी की शोभा यात्रा व महामस्तकाभिषेक सम्पन्न

कुण्डलपुर/नालन्दा (विश्व परिवार)। भगवान महावीर स्वामी की जन्म भूमि कुण्डलपुर, नालन्दा, बिहार में भगवान महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक महोत्सव परम पूज्य गणिनी प्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी, प्रज्ञा श्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी के आशीर्वाद, पीठाधीश स्वस्ति श्री रवीन्द्र कीर्ति स्वामीजी के निर्देशन व झंडारोहण के साथ में 10 अप्रैल को प्रात: 7.30 बजे से शुभारंभ हुआ। अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने अवगत कराया कि झंडारोहण के पश्चात श्रीजी की भव्य शोभायात्रा नंद्यावर्त महल, कुण्डलपुर से श्री जी की आरती उदयभान जैन, दिलीप जैन, बसन्त बाकलीवाल - जयपुर द्वारा करके, प्रारंभ हुई।

रथ के सारथी विनोद- शकुंतला जैन उत्तम नगर, दिल्ली, खवास जी स्वस्ति, शोभित जैन मवाना, रत्न वृष्टि पूजा, अजय, अनिल, स्वस्ति जैन उत्तम नगर दिल्ली, मवाना, चंवर ढुलाने का सोभाग्य मुन्नी वाई, महावीर जैन केकड़ी, वरुण जैन सिकन्दराबाद को प्राप्त हुआ। शोभायात्रा प्राचीन जैन मन्दिर, कुंड ग्राम, नालन्दा पुरातत्व संग्रहालय तक गयी, उक्त शोभायात्रा में भक्त नृत्य करते, भजन व जयकारे लगाते चल रहे थे। महोत्सव समिति द्वारा रास्ते में ग्रामवासियों को मिठाई बांटी गई, वापिस रथयात्रा नंद्यावर्त महल कुण्डलपुर आयी।

तत्पश्चात भगवान महावीर स्वामी जी की 7.15 फुट अवगाहन, मूल नायक, गौरवर्ण, अतिशयकारी प्रतिमा जी पर महामस्तकाभिषेक के अवसर पर बसन्त कुमार, अतीव, अतुल जैन बाकलीवाल महारानी फार्म, जयपुर परिवार ने प्रथम कलश के साथ अभिषेक किये साथ में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री दिलीप जैन जयपुर थे। पंचामृत अभिषेक के अन्तर्गत नारियल रस का अभिषेक रवीश, पूनम, सुमति जैन दिल्ली, ईक्षुरस के अभिषेक गुन्नी लाल जैन बैंगलोर, घी के अभिषेक चंद्रशेखर कासलीवाल चांदवड, महाराष्ट्र, दूध के अभिषेक शकुंतला विनोद जैन उत्तम नगर दिल्ली, हल्दी के कलश संजय जैन हस्तिनापुर, केसर के कलश प्रमोद जैन कासलीवाल औरंगाबाद, शांति धारा प्रकाश जैन, कनकमाला, कुसुम, अजय, पूजा जैन उत्तम नगर दिल्ली द्वारा की गई। **-उदयभान जैन जयपुर**

महावीर जन्मकल्याणक पर ढाई वर्ष के दिसान महानन्द को जयपुर पैर लगाकर चलाया

श्री विनय मित्र मण्डल जयपुर पैर वर्कशॉप ने 40वे वर्ष में प्रवेश किया, 30 हजार वाँ जयपुर पैर दिया

जयपुर (विश्व परिवार)। श्री विनय मित्र मण्डल द्वारा भगवान महावीर जन्मकल्याणक के अवसर पर ढाई साल के दिसान महानन्द को जयपुर पैर लगाकर खड़ा किया।

जीसान का 1 माह की उम्र में पैर काटना पड़ गया था अब 28 माह की उम्र में वह खड़े होने लायक हो गया है, पिता किशन व माता पिंकी अपनी प्रथम संतान को लेकर पचपेड़ी नाका जयपुर पैर के वर्कशॉप में जांच कराने आए। दिसान की माताजी पिंकी ने कहा कि हमें श्री विनय मित्र मण्डल से काफी उम्मीद है क्योंकि अब दिसान की जिन्दगी अब जयपुर पैर पर ही चलनी है परन्तु हमें विश्वास है की जयपुर पैर पहनकर दिसान दौड़ने लगेगा। श्री विनय मित्र मण्डल के संस्थापक महेन्द्र कोचर व अध्यक्ष महावीर मालू ने बताया कि दिसान के कटे पैर का नाप लेकर कृत्रिम पैर कारीगर अब्दुल वहिद कुरैशी बनाकर तैयार किया। श्री विनय मित्र मण्डल ने राजधानी में जयपुर पैर वितरण को 39 वर्ष पूर्ण होने व 40 वे वर्ष में प्रवेश के अवसर पर 30 हजारवाँ पैर दिसान को लगाकर खड़ा किया गया। पूर्व अध्यक्ष दीपचंद कोटड़िया ने आगे बताया कि संस्था द्वारा 1986 से पैर कटे दिव्यांगों को पचपेड़ी नाका स्थित स्थायी वर्कशॉप में नि:शुल्क जयपुर पैर वितरण किया जाता है। दिव्यांगों व साथ परिजनों के आवास व भोजन की व्यवस्था भी नि:शुल्क रखी गई है। अध्यक्ष महावीर मालू ने बताया कि विगत 40 वर्षों में अनेक नि:शुल्क विशाल विकलांग शिविर में जयपुर पैर के अतिरिक्त कृत्रिम हाथ, ट्राइसिकल, व्हीलचेयर, कैलिपर्स, श्रवण यंत्र, वैसाखी का वितरण किया गया है।संस्था द्वारा 40 वर्षों में 50 हजार से ज्यादा दिव्यांगों को लाभान्वित किया गया है।

भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया

महानगर में निकली श्रीजी की विशाल रथयात्रा, हुआ जलाभिषेक, भगवान महावीर के जयकारों और संदेशों से गूंजा झांसी महानगर

झाँसी (विश्व परिवार)। समूचे विश्व को जियो और जीने दो एवं अहिंसा परमो धर्म: का संदेश देने वाले जैन दर्शन के चौबीसवें तीर्थंकर, वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी का जन्मकल्याणक (जयंती) वीरभूमि झाँसी महानगर में आर्यिकारत्न अकम्पमति माताजी एवं अचलमति माताजी के मंगल सान्निध्य एवं सांसद अनुराग शर्मा के मुख्य आतिथ्य व बबीना विधायक राजीव सिंह पारीछा, समाजसेविका शालिनी भार्गव के विशिष्ट आतिथ्य एवं पंचायत अध्यक्ष अजित कुमार जैन के अध्यक्षता जैन समाज द्वारा बड़े ही धूमधाम से श्रद्धा भक्ति पूर्वक मनाई गई। इस अवसर पर गांधी रोड स्थित श्री दिगम्बर जैन पंचायती बड़ा मन्दिर से श्रीजी की विशाल रथयात्रा भव्य शोभायात्रा के साथ परवारन, कटरा रोड, सुभाषगंज, रानीमहल, सिन्धी तिराहा, कोतवाली, पचकुंइया, खण्डेराव गेट होकर गांधी भवन पहुंची जहां धर्मसभा में पूज्य आर्यिकारत्न अकम्पमति माताजी ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भगवान महावीर स्वामी के उपदेशों को पालन करने से ही विश्वशांति स्थापित हो सकती है। मुख्य अतिथि के रूप में भगवान महावीर के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन कर संबोधित करते हुए सांसद अनुराग शर्मा ने मोदीजी के द्वारा विश्व नवकार मंत्र दिवस के अवसर पर उल्लेखित नौ संकल्पों को दोहराते हुए सभा में उपस्थित जन समूह से जीवन में धारण करने का हाथ उठवाकर वचन लिया। तत्पश्चात समाजसेविका शालिनी भार्गव ने भगवान महावीर जयंती की बधाई देते हुए भारतीय सांस्कृतिक विरासत एवं मूल्यों को बच्चों के द्वारा स्कूल के माध्यम से सांस्कृतिक कार्यक्रम करने का आह्वान किया। तत्पश्चात बाल ब्रह्मचारी दीपक भैया जी के मंत्रोच्चार निर्देशन में सनी जैन चैनू, इंजी विकल्प जैन, रविन्द्र जैन पीएनबी, इंजी. मनीष जैन ने इंद्रों के स्वरूप में भगवान महावीर के जलाभिषेक किया। प्रथम शांतिधारा करने का पुण्यार्जक सांसद अनुराग शर्मा को प्राप्त हुआ उनके प्रतिनिधि के रूप में पंचायत महामंत्री वरुण जैन ने भगवान के मस्तक पर शांतिधारा की। द्वितीय शांतिधारा का सौभाग्य पीके जैन पीएनबी को प्राप्त हुआ।

भगवान ने मनुष्य को विशेष जीवन निर्माण का अवसर दिया है : मुनि श्री अविचल सागर जी

सागर डी आई जी सुनील जैन का जैन समाज ने किया सम्मान, जीव दया के क्षेत्र में किया जा रहा काम बहुत सराहनीय है- डीआईजी

अशोक नगर (विश्व परिवार)। इस संसार में जो भी विशेष ज्ञान है वह मात्र मनुष्यो को दिया गया है मनुष्य अपने गुणों को और अधिक उज्जवल बनाते हुए प्रभु परमात्मा के निकट पहुंच सकता है इसी संसार में देव नारकी और तिरियच भी रहते हैं फिर भी भगवान ने मनुष्य को अपने जीवन के निर्माण का अवसर दिया है यदि कोई व्यक्ति अपने जीवन में सुख समृद्धि बैभव को प्रकट करने प्रयास कर सकता है उक्त आश्य केउद्गार सुभाष गंज में धर्म सभा को सम्बोधित करते मुनिश्री अविचल सागर जी महाराज ने व्यक्त किए।

इसके पहले जैन समाज के मंत्री विजय धुर्रा ने कहा कि कल सभी संगठनों महिला मंडलों व युवा मंडलों ने बहुत ही सुन्दर प्रस्तुति दी जिनका जैन समाज सम्मान करेगी आज हमारे बीच हमारे जिले में एस पी के रूप में सेवाऐं देने वाले सागर डी आई जी सुनील कुमार जैन परम पूज्य गुरुदेव का आशीर्वाद प्राप्त करने पधारे हैं आज शाम को सभी को जैन पंचायत कमेटी द्वारा पुरस्कृत किया जाएगा इसके पहले गंज मन्दिर में विराजमान दया भावना प्रेरक मुनि श्री अविचल सागर जी के दर्शनार्थ पधारे सागर डी आई जी का जैन समाज अध्यक्ष राकेश कासंल महामंत्री राकेश अमरोद मंत्री विजय धुर्रा पंचायत कमेटी के सदस्य विपिन सिंघई हरीश जैन वल्ला टिंकल जैन सुलभ अखाई सचिन एन एस ने उनका साल श्री फल भेंट कर सम्मान किया।

इस दौरान डी आई जी सुनील जैन ने कहा कि अशोक नगर जैन समाज द्वारा दया भावना फाउण्डेशन के माध्यम से श्री राम पक्षी उपचार अस्पताल का निर्माण किया जा रहा है ये पक्षी उपचार अस्पताल एक माडल के रूप में विकसित हो जिससे की अन्य लोग भी प्रेरणा ले सकें जैन समाज गौशाला के क्षेत्र में बहुत काम कर रहा है गुरु देव आपने गौ चिकित्सालय की प्रेरणा दी है ये बहुत ही अच्छी बात है आप सागर पधारे तो सागर में गो अस्पताल खोलने में जैन समाज पीछे नहीं रहेगा अभी सागर में जैन समाज द्वारा विशाल भाग्योदय अस्पताल चला जा रहा है आप पधारेंगे तो सबसे पहले श्री राम पक्षी अस्पताल केन्द्र स्थापित किए जाएगा।

भगवान महावीर जयंती पर महिला मंडलों के साथ ही श्री विद्यासागर सर्वोदय पाठशाला के वच्चो दारा भगवान के पंच कल्याणक को प्रदर्शित करती झांकियां सजाई गई इसके साथ ही श्री दिगम्बर जैन महिला महा समिति द्वारा संस्कृतिक कार्यक्रम की भव्य प्रस्तुति दी गई। **-विजय धुर्रा**

भगवान महावीर स्वामी के 'जियो और जीने दो' का सिद्धान्त जन-जन तक पहुँचाना है : विशाल जैन पवा

तालबेहट (विश्व परिवार)। श्री दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र पावागिरि के उपाध्यक्ष एवं अहिंसा सेवा संगठन के संस्थापक विशाल जैन पवा ने बताया वर्तमान शासन नायक भगवान महावीर स्वामी जैन धर्म के चौंबीसवें (24वें) तीर्थंकर थे। भगवान महावीर का जन्म 2625 वर्ष पहले (599 ईसा पूर्व) वैशाली गणराज्य के क्षत्रियकुंड के नाथ वंश में हुआ था। युवा अवस्था में बाल ब्रह्मचारी महावीर स्वामी ने संसार से विरक्त होकर राज वैभव त्याग दिया और सन्यास धारण कर आत्मकल्याण के पथ पर निकल गये। 12 वर्षो की कठिन तपस्या के बाद उन्हें केवलज्ञान प्राप्त हुआ, जिसके पश्चात् उन्होंने समवशरण में ज्ञान प्रसारित किया जिसे वीर शासन जयंती के नाम से जानते हैं। 72 वर्ष की आयु (527 ईसा पूर्व) में उन्हें पावापुरी से मोक्ष की प्राप्ति हुई। इस दौरान महावीर स्वामी के कई अनुयायी बने जिसमें उस समय के प्रमुख राजा बिम्बिसार, कुणिक और चेटक भी शामिल थे। जैन समाज द्वारा महावीर स्वामी के जन्म दिवस को महावीर-जयंती तथा उनके मोक्ष दिवस को दीपावली के रूप में धूम धाम से मनाया जाता है। कार्तिक अमावस्या को निर्वाण लाडू चढ़ाया जाता हैं। जैन ग्रन्थों के अनुसार समय-2 पर धर्म तीर्थ के प्रवर्तन के लिए तीर्थंकरों का जन्म होता है, जो सभी जीवों को आत्मिक सुख प्राप्ति का उपाय बताते है। त्रिकाल में तीर्थंकरों की संख्या चौबीस ही कही गयी है। भगवान महावीर वर्तमान अवसर्पिणी काल की चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर थे। उन्होंने दुनिया को सत्य, अहिंसा का पाठ पढ़ाया। तीर्थंकर महावीर स्वामी ने अहिंसा को सबसे उच्चतम नैतिक गुण बताया। उन्होंने दुनिया को जैन धर्म के पंचशील सिद्धांत बताए, जो हैड्ड अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य (अस्तेय) ब्रह्मचर्य। उन्होंने अनेकांतवाद, स्यादवाद और अपरिग्रह जैसे अद्भुत महाव्रती सिद्धान्त दिए। भगवान महावीर के 'जियो और जीने दो' का सिद्धान्त जन -जन तक पहुँचाना है।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शनिवार 12 अप्रैल 2025

संक्षिप्त समाचार

कलेक्टर ने गरियाबंद, छुरा फिंगेश्वर और राजिम क्षेत्र का किया सघन दौरा

गरियाबंद(विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के निर्देशानुसार सुशासन तिहार 2025 के तहत पहले चरण में 08 से 11 अप्रैल तक ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवासरत आवेदकों से उनकी शिकायतों व मांगों को लेकर आवेदन प्राप्त किए जा रहे हैं। सुशासन तिहार के प्रथम चरण के तीसरे दिन कलेक्टर दीपक कुमार अग्रवाल ने आज जिले के गरियाबंद, छुरा, फिंगेश्वर और राजिम क्षेत्र का सघन दौरा कर विभिन्न ग्राम पंचायतों, जनपद पंचायत एवं नगरीय निकायों में रखी गई समाधान पेटी का निरीक्षण किया, साथ ही मौके पर मौजूद आवेदकों से उनकी मांगों व शिकायतों की जानकारी भी ली। कलेक्टर ने लोगों से चर्चा कर समस्याओं के निराकरण के लिए बेझिझक आवेदन करने कहा। अधिकारियों को निर्देश दिए कि लोगों को आवेदन देने में किसी प्रकार की दिक्कत न हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाए। सुशासन तिहार के पहले चरण में आम लोगों की समस्याओं के निराकरण के लिए 11 अप्रैल तक जिले के सभी ग्राम पंचायतों, जनपद पंचायत, नगरीय निकायों और जिला मुख्यालयों में आवेदन लिए जा रहे हैं। कलेक्टर अग्रवाल ने आज सबसे पहले जनपद पंचायत गरियाबंद पहुंचे, जहां सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदनों की ऑनलाईन एन्ट्री के कार्यों का अवलोकन किया। उन्होंने कहा कि प्राप्त आवेदनों को सही तरीके से विभागवार एन्ट्री सुनिश्चित कराये। कोई भी आवेदन नहीं छुटना चाहिए। प्राप्त आवेदनों को एन्ट्री पश्चात संबंधित विभागों में अनिवार्यत: भेजे और संबंधित कार्यालय से उसका पावती ले। जिससे कि संबंधित विभाग समय-सीमा में उन आवेदनों का निराकरण कर सके। इसके पश्चात कलेक्टर अग्रवाल ने ग्राम पचांयत कोचवाय में चल रहे सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदनों का जायजा लेते हुए ग्रामीणों से चर्चा की। उन्होंने सुशासन तिहार के अंतर्गत ड्यूटी में लगाये गये शिक्षिका दिप्ती यादव बिना अनुमति के अनुपस्थित रहने पर कारण बताओं नोटिस जारी करने के निर्देश दिये। इसी तरह ग्राम पंचायत सड़क परसुली के सुशासन तिहार में पहुंचकर ग्रामीणों द्वारा किये जा रहे आवेदनों तथा गांव के मांग एवं समस्याओं के संबंध में जानकारी ली। इसके अलावा शासकीय उचित मूल्य के दुकान पहुंचकर हितग्राहियों से चर्चा करते हुए उन्हें मिलने वाले राशन सामग्री की जानकारी ली। साथ ही राशन दुकान पर मूल्य सूची अंकित करने कहा। ग्रामीणों ने बताया कि शासकीय उचित मूल्य की दुकान का नया निर्माण किया जा रहा है। इस पर कलेक्टर ने निर्माणाधीन भवन का अवलोकन करते हुए शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिये। साथ ही प्राइमरी स्कूल पसिर में बाउंड्रीवाल कराने के निर्देश दिये। कलेक्टर अग्रवाल ने ग्राम पंचायत खरखरा के सुशासन तिहार पहुंचकर वहां किये गये व्यवस्थाओं की जानकारी ली। इस दौरान सुशासन तिहार के कार्यो में सेक्टर ऑफिसर पीटर मिंज द्वारा सही तरीके से आवेदन नहीं लेने पर साथ ही फिंगेश्वर के सीएमओ चंदन मानकर बिना बताये मुख्यालय से अनुपस्थित रहने पर उन्हें कारण बताओ नोटिस देने के निर्देश दिये।

बोर्ड के परीक्षार्थियों को साइबर ठग बना रहे निशाना

डेटा लिक को लेकर पालक चिंतित, उठे सवाल

गरियाबंद (विश्व परिवार)। साइबर ठगों ने बोर्ड परीक्षाएं दे रहे छात्रों और पालको को निसाना बनाना प्रारम्भ कर दिया है। बोर्ड परीक्षाओं में पास कराने फ्लां पेपर ने नंबर बढ़ाने का झांसा देकर साइबर ठग ठगी का प्रयास कर रहे है। जिले के कई छात्र छात्राओं को परीक्षा में पास कराने के लिए मोटी रकम उनके परीक्षा फार्म के रजिस्टर नम्बर पर फोन द्वारा मांगा जा रहा है। ख़ासकर ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले बच्चो को टारगेट किया जा रहा है ।

बोर्ड परीक्षा में परीक्षा दे रहे छात्र छात्राओं को बकायदा यह ठग अपने ऊपर विश्वास दिलाने के लिए छात्राओं से सम्बधित सभी जानकरी जो उन्होंने ऑन लाइन भरा था उसे विद्यार्थी को बताया जाता है और बकायदा शिक्षा विभाग के रायपुर कार्यालय के कम्प्यूटर ऑपरेटर यह ठग अपने आप को बताते । कहते है आप का पेपर ठीक नहीं बना है मैं आपको पास करा सकता हूँ। इसके लिए आपको हमारे एकाउंट में रूपये ट्रांसफर करना होगा।

आखिर कंहा से बॉर्ड के फार्म का डाटा लिक हुआ : इन कॉल को लेकर पालको में उहा पोह की स्थिति निर्मित हो गई है पालको का कहना है कि हमारे बच्चों ने जो जन्मतिथि फोन नंबर अपना नाम अपने पालक का पिता का नाम दिया था यह कॉल करने वाले को कैसे पता यह लोग रजिस्ट्रेशन नंबर तक बता रहे हैं। कंही न कंही शिक्षा विभाग के लोग भी इस रैकेट से जुड़े हो सकते हैं क्योंकि यह जानकारी

गुप्त होती है और कंप्यूटर में ही लोड होती है फिर भी यह जानकारी इन फर्जी कॉल करने वालों तक कैसे पहुंची यह एक जांच का विषय है।

कभी शिक्षा अधिकारी तो कभी डाटा ऑपरेटर बताकर ठगी : ठगों द्वारा खुद को शिक्षा मंडल का अधिकारी या डाटा ऑपरेटर की पहचान बताकर नंबर बढ़ाने, पास कराने या कम्प्यूटर में डेटा चेंज का झूठा दावा करते हुये, फीस या चार्ज के नाम पर बैंक एकाउंट या यूपीआई डिटेल्स प्राप्त कर ठगी को अंजाम दिया जा रहा है।

छत्तीसगढ़ पुलिस ने एडवाइजरी जारी की : इन सब के बीच छत्तीसगढ़ पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर विद्यार्थियों और पालकों से कहा की ठगों के बहकावे में नहीं आना है। अगर ऐसे कॉल आते है तो तो ऐसे कॉल्स का जवाब न दें और पुलिस को सूचित करें। साथ ही इस संबंध में यदि कोई लिंक प्राप्त होता है तो लिंक को न खोलें।

छ ग पुलिस ने भी जारी जारी किया प्रेस नोट : छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल एवं केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित बोर्ड की परीक्षाएं अभी हाल ही में सम्पन्न हुई हैं, जिसका मूल्यांकन कार्य जारी है। प्राप्त जानकारी अनुसार इन परीक्षाओं में बच्चों को उत्तीर्ण कराने व बेहतर परिणाम का झांसा देकर साइबर ठगों द्वारा ठगने का प्रयास किया जा सकता है।

अपनी बैंकिंग जानकारी ओटीपी, यूपीआई डिटेल्स आदि किसी के साथ साझा न करें। ऐसे सूचनाओं की पुष्टि स्कूल या परीक्षा केन्द्र से करें। त्रुटिवश कॉल्स रिसिव कर लेने या लिंक खोलने पर ठगी का शिकार होने की स्थिति में इसकी शिकायत तत्काल साइबर हेल्पलाईन नंबर 1930 पर दर्ज कराते हुए निकटतम पुलिस थानें में इसकी सूचना दें।

बोतल से फिर बाहर निकल आया कांग्रेस सरकार के दौरान हुए तेंदूपत्ता बोनस घोटाले का जिन्न

पूर्व विधायक मनीष कुंजाम समेत कई लोगों के ठिकानों पर एसीबी और ईओडब्ल्यू का छापा

जगदलपुर(विश्व परिवार)। बस्तर संभाग में हुए करोड़ों के तेंदूपत्ता घोटाले का जिन्न फिर बोतल से बाहर निकल आया है। इसे लेकर राज्य की जांच एजेंसियां एसीबी और ईओडब्ल्यू फिर एक्शन मोड में आ गई हैं। एसीबी और ईओडब्ल्यू की टीमें बस्तर संभाग के सुकमा जिले में आज पूर्व विधायक मनीष कुंजाम और तेंदूपत्ता संग्रहण से जुड़े प्रबंधकों के ठिकानों पर आज छापेमारी कर रही हैं। सुकमा जिला मुख्यालय और कोंटा में गुरुवार सुबह से एसीबी और ईओडब्ल्यू की छापामार करवाई चल रही है। पूर्व विधायक मनीष कुंजाम के अलावा तेंदूपत्ता प्रबंधकों के यहां छापा मार करवाई की गई। तेंदूपत्ता प्रबंधकों के खिलाफ तेंदूपत्ता बोनस वितरण की गड़बड़ी की शिकायतें आ रही थी। गुरुवार सुबह 6 बजे से जिले में फिर एकबार फिर एसीबी और ईओडब्ल्यू की छापेमार कार्रवाई चल रही हैं। प्रबंधकों के घरों में रेड की गई है। साथ की पूर्व विधायक सीपीआई नेता मनीष कुंजाम के घर में भी छापेमारी चल रही है। सुकमा जिले में तेंदूपत्ता बोनस राशि मामले घोटाले के आरोप लगे थे। ग्रामीण आदिवासी तेंदूपत्ता संग्राहकों को बोनस के लगभग 6 करोड़ 54 लाख रुपए से भी ज्यादा की राशि के गबन के आरोप लगे हैं। तेंदूपत्ता बोनस की यह राशि वर्ष 2021 और 2022 की बताई जा रही है। इस तेंदूपत्ता बोनस मामले को लेकर मनीष कुंजाम बार बार जांच और कार्रवाई के लिए प्रशासन को आवेदन देते आए हैं। जिसके बाद जांच में सुकमा डीएफओ अशोक पटेल पर कार्रवाई करते हुए उन्हें निलंबित भी किया गया था। उसके बाद उनके घर पर एसीबी और ईओडब्ल्यू की रेड पड़ी थी। अब सुकमा जिले के कांग्रेस नेता और सीपीआई नेताओं ने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार बदले भी कार्रवाई कर रही हैं। जिला पंचायत अध्यक्ष चुनवा में सीपीआई के भाजपा का समर्थन नहीं करने के कारण मनीष कुंजाम के घर पर जांच टीमें भेजी गई हैं और उनको बदनाम करने की तैयारी की हैं। छापेमारी एवं जांच पूर्व विधायक एवं सीपीआई नेता मनीष कुंजाम, कोंटा प्रबंधक शरीफ खान, गोलापल्ली प्रबंधक सत्यनारायण पयाम व तेलंगाना मरईगुड़ा प्रबंधक सत्यनारायण पयाम के घरों पर चल रही है।

सुशासन तिहार 2025 : कलेक्टर ने अधिकारियों को सुशासन तिहार शिविरों का निरीक्षण करने के दिये निर्देश

दूसरे दिन भी आमजनों ने समाधान पेटी में उत्साह के साथ डाले आवेदन'

धमतरी(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री अबिनाश मिश्रा ने आज जिला स्तरीय अधिकारियों को सुशासन तिहार को बेहतर तरीके से लोगों तक पहुंचाने और उनसे मांग, समस्या और शिकायतों संबंधी आवेदन समाधन पेटियों के माध्यम से लेने के निर्देश दिये है। कलेक्टर ने सुशासन तिहार के बेहतर संचालन हेतु लोगों की मांग एंव समस्याओं को लेने हेतु लगायी गयी पेटियों के स्थल का निरीक्षण करने के निर्देश अधिकारियों को दिये है, जिसके परिपालन में आज धमतरी, कुरूद और नगरीय विकासखंड के अधिकारियों ने विभिन्न गांवों एवं कार्यालयों में जाकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों के द्वारा ग्राम पंचायत में लगे शिविरों का जायजा लिया और वहां की व्यवस्थाओं की जानकारी ली। उन्होंने उपस्थित कर्मचारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए ताकि जनसुविधाओं से जुड़े कार्यों में किसी प्रकार की देरी न हो। उपस्थित कर्मचारियों ने बताया कि आवास ,जॉब कार्ड, पानी की व्यवस्था, साफ़ सफ़ाई, नाली, सड़क निर्माण जैसे मुद्दों से संबंधित आवेदन कर रहे। सुशासन तिहार के दूसरे दिन भी आवेदन लेने का सिलसिला जारी है। लोगों में अपनी समस्या-शिकायतों को शासन-प्रशासन तक पहुंचाने में खासा उत्साह देखने को मिल रहा है। जिले के आम जनों ने अपने माँग, शिकायत और समस्याओं के समाधान हेतु ग्रामों और शहर के वार्डों और कार्यालयों में स्थापित समाधान पेटीयों में आवेदन डाले। कलेक्टर श्री अबिनाश मिश्रा के मार्गदर्शन में सुशासन तिहार के तहत प्राप्त आवेदनों का पोर्टल में अपलोड करने की प्रक्रिया भी सतत् रूप से की जा रही है। कलेक्टर श्री मिश्रा ने सभी अधिकारियों को निर्देशित किया है कि सभी ब्लाकों से प्राप्त आवेदनों का विभाग वार चिन्हांकित कर उन्हें प्रेषित किया जाये। साथ ही संबंधित विभागों के अधिकारियों को गुणवत्ता पूर्ण निराकरण के निर्देश भी दिए गए हैं।

जवानों ने चार नग प्रेशर आईइडी किया बरामद

बीजापुर(विश्व परिवार)। शुक्रवार को कोबरा 204 की टीम ने जिले के भीमाराम से 02 किमी की दूरी पर पुसगुफा के पास जवानों को नुकसान पहुंचाने के लिए माओवादियों के द्वारा बिछाये चार नग प्रेशर आईइडी बरामद कर नक्सलियों के नापाक मंसूबों को विफल कर दिया है। मिली जानकारी के अनुसार जेटीएफ कैंप भीमाराम से कोबरा 204 की टीम जेटीएफ कैम्प भीमाराम से पुसगुफा की ओर एरिया डॉमिनेशन ड्यूटी पर निकली थी। ड्यूटी के दौरान भीमाराम से 02 किमी की दूरी पर पुसगुफा की ओर माओवादियों के द्वारा जवानों को नुकसान पहुंचाने के लिए बीयर बॉटल में 04 नग प्रेशर आईइडी बिछाया गया था जिसे जवानों ने बरामद किया है। 204 कोबरा की बीडी टीम के द्वारा मौके पर आईइडी को सुरक्षित तरीके से नष्ट किया गया।

नक्सलियों ने शांति वार्ता के लिए अनुकूल माहौल बनाने की उठाई मांग

प्रवक्ता रुपेश ने जारी किया लंबा चौड़ा पर्चा

गृहमंत्री विजय शर्मा के बयान का किया जिक्र

जगदलपुर(विश्व परिवार)। नक्सली संगठन भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) उत्तर पश्चिम सब जोनल ब्यूरो ने शांति वार्ता के लिए अनुकूल माहौल बनाने की मांग राज्य सरकार से की है। संगठन का कहना है कि बिना हिंसा रुके शंति वार्ता संभव नहीं है। संगठन ने बड़े नक्सली नेताओं के पलायन की बात को भी खारिज किया है। पर्चे में राज्य के उप मुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री विजय शर्मा के बयान का भी जिक्र है। नक्सली संगठन के प्रवक्ता रुपेश ने कहा है कि हम शांति वार्ता के लिए तैयार हैं, मगर इसके लिए सरकार को अनुकूल माहौल तैयार करना होगा। इसके लिए सबसे पहले जरूरी है बस्तर में हो रहे हत्याकांड को रोकना। रुपेश ने कहा है कि इन हत्याकांडों से आम बस्तर वासी दहशत के साये में जीवन यापन करने मजबूर हैं। ग्रामीण पलायन कर रहे हैं। कथित हत्याकांड को लेकर रुपेश का उद्देश्य संभवत: मुठभेड़ों में मारे जा रहे नक्सलियों से है। रुपेश ने ने गृहमंत्री विजय शर्मा के बयान का हवाला देते हुए इंकार किया कि उनके संगठन की केंद्रीय कमेटी अनुकूल माहौल बनाने की मांग की है, लेकिन रुपेश ने यह भी कहा है कि बगैर अनुकूल माहौल बनाए शांति वार्ता हो नहीं सकती।रुपेश ने कहा है कि सरकार ने अभी जो रुख अपनाया हुआ है उसका और आत्मसमर्पण को समस्या का हल मानने का विरोध होना चाहिए।रुपेश ने कहा है कि शांति वार्ता की प्रक्रिया को लेकर नेतृत्वकर्ता साथियों और स्थानीय नेतृत्व की राय लेना जरूरी है, मगर सरकार की ओर से चलाए जा रहे अभियानों के बीच यह संभव नहीं होगा। इसलिए ऐसे अभियानों पर रोक लगनी चाहिए। इसका संकेत मिलते ही हम शांति वार्ता के लिए तैयार हो जाएंगे और उप मुख्यमंत्री एवं गृहमंत्री विजय शर्मा द्वारा उठाए गए मुद्दों को भी हम अपने एजेंडे में शामिल कर सकते हैं। रुपेश ने अनुकूल माहौल निर्माण हेतु जनवादी संगठनों, बुद्धिजीवियों और पत्रकारों से भी आगे आने की अपील नक्सली संगठन ने की है। बस्तर से शीर्ष नक्सली नेतृत्व के भाग जाने की बात को गलत बताते हुए रुपेश ने कहा है कि अगर ऐसा होता तो हमारी एसजेडसी मेंबर कामरेड रेणुका उर्फ चैते ने अस्वस्थता के बावजूद अपनी जान कुर्बान कर दी। जबकि उसके सैकड़ों मददगार हैं। रुपेश ने कहा कि हत्याकांडों को जायज ठहराने के लिए हमें विकास विरोधी करार दिया जाता है, जबकि हम स्कूल, सड़क, बिजली, पानी, चिकित्सा जैसी बुनियादी सुविधाएं बस्तर के लोगों को मिले इस बात के पक्षधर शुरू से रहे हैं। हम यहां के मूल निवासियों को जल जंगल जमीन के अधिकार से बेदखल किए जाने का विरोध करते हैं। अंत में रुपेश ने सब जोन की कमेटियों, कमांडोज और कमांडरों से शांति वार्ता के बारे में सजगता से काम करने को कहा है। रुपेश ने पुलिस जवानों को अपना ही भाई बताते हुए कहा है कि हमें आपस में लड़ाने की स्थिति पैदा की गई है, इसलिए शांति वार्ता के हमारे प्रयास का समर्थन करें।

जगदलपुर विधानसभा के बीजापुट पहुंचे भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक किरण देव

ग्रामीणजनों की सुनी समस्या, समस्याओं का होगा जल्द समाधान किरण देव

जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र के नगरनार मंडल के बीजापुट एवं नगरनार के वार्षिक मेला (मंडई) में शामिल हुयें भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव

जगदलपुर (विश्व परिवार)। जगदलपुर विधानसभा क्षेत्र के नगरनार मंडल के बीजापुट में कोदई माता मंदिर की पूजा एवं नगरनार के वार्षिक मेला (मंडई) में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव पहुंचे। उपनपाल के बीजापुट में कोदई माता मंदिर पहुंच विधिवत पूजा अर्चना कर प्रदेश व बस्तर की सुख समृद्धि की माता से कामना किया। क्षेत्रीय विधायक श्री किरण देव के बीजापुट पहुंचने पर क्षेत्र की जनता ने

भव्य आतिशबाजी व पारंपरिक रूप से स्वागत व अभिनंदन किया । वहीं बीजापुट में देवतुल्य जनता से भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव ने भेंट मुलाकात कर उनकी समस्याओं व बातों को सुनकर उसका समाधान किया। साथ ही क्षेत्रीय विधायक श्री किरण देव के समक्ष जनमानस ने कोदई माता मंदिर के विकास , सड़क एवं गांव के विकास के संबंध में मांग रखी । जिसपर विधायक श्री किरण देव ने सभी विषयों को गंभीरता से लेते हुए गांव के विकास के सभी कार्यो को जल्द पूरा करने की बात कही। कोदई माता मंदिर का भी विकास होगा। सभी गांवों का चौमुखी विकास होगा। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के नेतृत्व में लगातार विकास होगा। जिससे ग्रामवासियों में हर्ष व्याप्त है ।

नगरनार के वार्षिक मेला में शामिल हुयें भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव- उसके पश्चात प्रतिवर्ष नगरनार में वार्षिक मेला का आयोजन होता है जिसमें क्षेत्रीय विधायक श्री किरण देव के पहुंच माता मंदिर पहुंच पूजा अर्चना करते सभी के सुख समृद्धि की माता से कामना किया। वहीं नगरनार ग्रामवासियों ने भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव का बस्तर के पारंपरिक रूप से ग्रामवासियों ने स्वागत किया । नगरनार के वार्षिक मेला में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष एवं विधायक श्री किरण देव ने कहा कि नगरनार के ऐतिहासिक वार्षिक मेला में शामिल होकर आप सभी के बीच आकर अभिभूत हूं। वहीं आज आयोजित वार्षिक मेला का अपना ऐतिहासिक महत्व है । हमारी बस्तर की पहचान संस्कृति ,मेला, मंडई से है। हम आज भी पारंपरिक तरीके से मेला बनाते है जिसका अपना महत्व है। मेला में आयें सभी क्षेत्र की देवतुल्य जनमानस को बधाई एवं शुभकामनाएं । वहीं मेला में प्रमुख रूप से पूर्व विधायक डा सुभाऊ कश्यप, विजित देव ,सरपंच वासुदेव , पूर्व सरपंच त्रिपती नागेश ,हरि साहू , मंडल अध्यक्ष महेन्द्र सेठिया,गंगाधर पुजारी ,कमलेश बधेल ,मोहन नाईक, राजेश शर्मा,राधे पन्दें,रूपेश समरथ,,व अन्य देवतुल्य जनमानस उपस्थित थे।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर शनिवार 12 अप्रैल 2025

व्यापार समाचार

ईपीएफओ कर्मचारियों के लिए वरदान बनी ये एप, जानिए क्या-क्या कर सकेंगे

नई दिल्ली(एजेंसी)। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने बुधवार को कहा कि उसके सदस्य अब उमंग मोबाइल ऐप के जरिए आधार फेस ऑथेंटिकेशन टेक्नोलॉजी (एफएटी) का उपयोग करके अपना यूनिवर्सल अकाउंट नंबर (यूएएन) जनरेट और एक्टिव कर सकते हैं। इस संपर्क रहित और सुरक्षित सर्विस से ईपीएफओ के करोड़ों लोगों को राहत मिलेगी। इससे पहले यूएएन को मुख्यत: नियोक्ताओं द्वारा ईपीएफओ को प्रस्तुत कर्मचारी डेटा का उपयोग करके जनरेट किया जाता था। श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अनुसार,आधार डिटेल्स को सत्यापित किया गया है, लेकिन पिता का नाम, मोबाइल नंबर या जन्मतिथि जैसी जानकारियों में गलतियां आम थीं। इन गलतियों को अकसर क्लेम प्रोसेस के दौरान या अन्य ईपीएफओ सेवाओं का उपयोग करते समय सुधार की आवश्यकता होती है। अकेले वित्त वर्ष 2024-25 में आवंटित 1.26 करोड़ यूएएन में से केवल 44.68 लाख (35.30 प्रतिशत) ही सदस्यों द्वारा सक्रिय किए गए। ईपीएफओ के अनुसार, कर्मचारियों को आधार ओटीपी का उपयोग करके अपने यूएएन को सक्रिय करने के लिए नियोक्ताओं को कई रिमाइंडर दिए गए थे, जिससे भविष्य में रोजगार लिंक्ड स्कीम के तहत कोई भी लाभ डीबीटी का उपयोग करके प्रदान किया जा सके। ईपीएफओ ने आगे कहा कि कई मामलों में, यूएएन को कर्मचारी को बताया ही नहीं गया था और कई के मोबाइल नंबर गायब या गलत थे, जिससे सीधा संवाद मुश्किल हो गया। इसके अलावा, ईपीएफओ सदस्य पोर्टल पर आधार ओटीपी सत्यापन के माध्यम से यूएएन एक्टिवेशन एक अलग प्रक्रिया थी जिसे सदस्य द्वारा पूरा किया जाना था, जिससे भ्रम की स्थिति पैदा हुई। इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए, ईपीएफओ ने अब उमंग ऐप के माध्यम से फेस ऑथेंटिकेशन का उपयोग करके सीधे यूएएन बनाने और सक्रिय करने की सुविधा शुरू कर दी है। इस सर्विस का उपयोग कर्मचारी और नियोक्ता दोनों ही कर सकते हैं। यह फेस ऑथेंटिकेशन का उपयोग करके आधार और उपयोगकर्ता की 100 प्रतिशत वैधता प्रदान करता है और उपयोगकर्ता का डेटा सीधे आधार डेटाबेस से पहले से ही भरा जाता है। ईपीएफओ के अनुसार, उपयोगकर्ता के मोबाइल नंबर का मिलान आधार के साथ पंजीकृत मोबाइल नंबर से किया जाता है, और जनरेशन प्रक्रिया के दौरान ईपीएफओ पोर्टल पर यूएएन एक्टिवेशन का कार्य भी पूरा हो जाता है। नौकरी मिलने के समय, कर्मचारी ईपीएफओ में शामिल होने के लिए नियोक्ता को ई-यूएएन कार्ड की पीडीएफ और यूएएन की कॉपी सौंप सकता है।

भारत और यूके के बीच फ्री ट्रेड एग्रीमेंट पर बातचीत जारी

नई दिल्ली(एजेंसी)। दुनिया में बदलते वर्ल्ड ट्रेड ऑर्डर के बीच, भारत और यूके ने दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने और फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (एफटीए) और द्विपक्षीय निवेश संधि (बीआईटी) के लिए बातचीत जारी रखने की प्रतिबद्धता जताई है। यह जानकारी लंदन में आयोजित '13वें इकोनॉमिक एंड फाइनेंशियल डायलॉग' में दी गई, जिसकी सह-अध्यक्षता केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और ब्रिटेन की चांसलर ऑफ एक्सचेकर रेचल रीव्स ने की। इवेंट के बाद जारी किए गए साझा बयान में कहा गया कि ब्रिटिश पक्ष को अपनी आगामी औद्योगिक रणनीति के बारे में जानकारी देने में खुशी हुई, जिसके तहत यह साझेदारी औद्योगिक रणनीति के प्राथमिकता वाले विकास को बढ़ावा देने वाले क्षेत्रों, जैसे उन्नत विनिर्माण और लाइफ साइंस, को सपोर्ट कर सकती है, जहां ब्रिटिश विशेषज्ञता और रिसर्च क्षमता भारत को एक वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में उभरने में मदद कर सकती है। साथ ही स्वच्छ ऊर्जा, पेशेवर और व्यावसायिक सेवाओं, वित्तीय सेवाओं, क्रिएटिव उद्योगों और रक्षा में नौकरियों और आर्थिक विकास को समर्थन दे सकती है। दोनों पक्ष औद्योगिक क्षेत्रों के बीच संबंधों को मजबूत करने और सप्लाई चेन को सपोर्ट करने के लिए 'भारत-ब्रिटेन रक्षा औद्योगिक रोडमैप' पर हस्ताक्षर करने पर विचार कर रहे हैं। भारत और यूके ने हाल के वर्षों में हुए फाइनेंशियल सर्विसेज ट्रेड का स्वागत किया, इसे और आगे बढ़ाने के लिए मिलकर काम करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। संयुक्त बयान के अनुसार, दिसंबर 2024 में भारत की गिफ्ट सिटी आईएफएससी में आयोजित फाइनेंशियल मार्केट्स डायलॉग (एफएमडी) ने बैंकिंग, इंश्योरेंस, पेंशन, कैपिटल मार्केट्स और सस्टेनेबल फाइनेंस में हमारे सहयोग को गहरा करने का अवसर प्रदान किया और हमारी टीमें इस वर्ष के अंत में लंदन में अगले एफएमडी के लिए मिलेंगी।

राजस्थान रॉयल्स की पूरी टीम पर लगा भारी जुर्माना

अहमदाबाद(एजेंसी)। राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन पर बुधवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में गुजरात टाइटन्स के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के मैच में धीमी ओवर गति बनाए रखने के लिए 24 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया है. आईपीएल ने एक मीडिया बयान में कहा, राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन पर अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में गुजरात टाइटन्स के खिलाफ इंडियन प्रीमियर लीग 2025 के मैच नंबर 23 के दौरान धीमी ओवर गति बनाए रखने के लिए जुर्माना लगाया गया है. इसमें कहा गया, चूंकि यह आईपीएल की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 के तहत उनकी टीम का सीजन का दूसरा अपराध था, जो न्यूनतम ओवर-रेट अपराधों से संबंधित है, इसलिए सैमसन पर 24 लाख रुपये का जुर्माना लगाया गया. बयान में आगे कहा गया है, इम्पैक्ट प्लेयर सहित प्लेइंग इलेवन के बाकी सदस्यों पर 6 लाख रुपये या उनकी संबंधित मैच फीस का 25 प्रतिशत, जो भी कम हो, जुर्माना लगाया जाएगा. मैच की बात करें तो, यह कुल मिलाकर राजस्थान रॉयल्स के लिए एक खराब प्रदर्शन था क्योंकि टीम को मैच में 58 रनों से बड़ी हार का सामना करना पड़ा. टॉस गंवाने के बाद गुजरात टाइटन्स ने पहले बल्लेबाजी करते हुए निर्धारित 20 ओवरों में 6 विकेट पर 217 रन का स्कोर बनाया. जिसमें साई सुदर्शन ने 53 गेंदों में 82 रन बनाकर शीर्ष स्कोर बनाया. वहीं, जोस बटलर और शाहरुख खान ने 36-36 रनों का योगदान दिया.गुजरात द्वारा दिए गए 218 रन के विशाल लक्ष्य के जवाब में राजस्थान रॉयल्स की टीम 19.2 ओवर में सिर्फ 159 रनों पर ढेर हो गई.

गुजरात ने राजस्थान को चटाई धूल, साईं सुदर्शन ने खेली अर्धशतकीय पारी

प्रसिद्ध कृष्णा ने लिए 3 विकेट

अहमदाबाद(एजेंसी)। आईपीएल 2025 के 23वें मैच में गुजरात टाइटन्स ने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में राजस्थान रॉयल्स के बीच को 58 रनों से हरा दिया है. इस जीत के साथ गुजरात की टीम ने प्वाइंट्स टेबल में शीर्ष पर कब्जा कर लिया है. जीटी 5 मैचों में 4 जीत और 1 हार के साथ 8 प्वाइंट्स लेकर नंबर 1 पर पहुंच गई है, जबकि आरआर 5 मैचों में 2 जीत और 2 हार के साथ 7वें स्थान पर पहुंच गई हैं. इस मैच में राजस्थान रॉयल्स के कप्तान संजू सैमसन ने टॉस जीता और पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया. गुजरात की टीम ने पहले खेलते हुए 20 ओवर में 6 विकेट खोकर 217 रन बनाए. इस लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान की पूरी टीम 19.2 ओवर में 159 रन पर ऑल आउट हो गई और 58 रनों से मैच हार गई. यह गुजरात की लगातार चौथी जीत है. राजस्थान रॉयल्स के गुजरात टाइटंस से जीत के लिए मिले 218 रनों के लक्ष्य का पीछा करते हुए शिमरोन हेटमायर ने सबसे ज्यादा रन बनाए. उन्होंने 32 बॉल में 4 चौके और 3 छक्के के साथ 52 रनों की पारी खेली. संजू सैमसन ने 28 बॉल में 4 चौके और 1 छक्के के साथ 41 रनों की पारी खेली. उनके अलावा रियान पराग ने 26 रनों का योगदान दिया, लेकिन अपनी टीम को जीत नहीं दिला पाए. गुजरात के लिए प्रसिद्ध कृष्णा ने सबसे ज्यादा 3 विकेट चटकाए. राशिद खान और साईं किशोर ने 2 विकेट लिए. मोहम्मद सिराज, आवेश खान और कुलवंत खेजरोलिया ने 1-1 विकेट हासिल किया. इससे पहले गुजरात टाइटंस ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 217 रन बनाए. साईं सुदर्शन ने 53 बॉल में 8 चौके और 3 छक्कों की मदद से 82 रनों की पारी खेली. जोस बटलर और शाहरुख खान ने 36-36 रनों की पारी खेली और राहुल तेवतिया ने 20 रनों की पारी खेली. राजस्थान के लिए महेश तीक्षाणा और तुषार देशपांडे ने 2-2 विकेट हासिल किए.

ओलंपिक खेलों में होगी क्रिकेट की वापसी, पुरुष और महिला दोनों इवेंट में 6-6 टीमें भाग लेंगी

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के लाखों-करोड़ों प्रशंसक 2028 लॉस एंजिल्स ओलंपिक खेलों का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं. क्योंकि, अंतरराष्ट्रीय ओलंपिक समिति (आईओसी) ने पुष्टि की है कि क्रिकेट 128 वर्षों में पहली बार ओलंपिक खेलों में वापसी करेगा. आगामी ओलंपिक में क्रिकेट की पुरुष और महिला स्पर्धा को लेकर अब एक बड़ा अपडेट सामने आया है. खेलों के महाकुंभ ओलंपिक में क्रिकेट का खेल टी20 फॉर्मेट में खेला जाएगा, जो 2028 में लॉस एंजिल्स में होने वाला है. जब क्रिकेट 128 साल बाद 2028 में ओलंपिक खेलों में वापस आएगा, तो केवल 6 टीमें ही प्रतिष्ठित गोल्ड मेडल के लिए दावेदार होंगी. पिछली बार 1900 में पेरिस में एक मैच के रूप में ओलंपिक में खेला गया क्रिकेट, एलए 2028 खेलों से वापसी करेगा और चार साल बाद 2032 में ब्रिस्बेन में भी खेला जाएगा. आयोजकों ने बुधवार को पुष्टि की कि एलए टूर्नामेंट टी20 फॉर्मेट में खेला जाएगा जिसमें पुरुष और महिला दोनों इवेंट में 6-6 टीमें भाग लेंगी. प्रत्येक स्पर्धा में कुल 90 खिलाड़ी भाग लेंगे. जिससे प्रत्येक टीम को 15 सदस्यीय टीम का नाम देने की अनुमति मिलेगी. क्रिकेट स्पर्धा के लिए 2028 खेलों में क्वालिफिकेशन कैसे मिलेगा. इसकी पुष्टि होना अभी बाकी है. अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद के अंतर्गत 12 फुल मेंबर नेशन हैं, जबकि 90 से अधिक देश एसोसिएट मेंबर के रूप में टी-20 क्रिकेट खेलते हैं. संयुक्त राज्य अमेरिका के मेजबान होने के नाते खेलों में सीधे क्वालिफिकेशन पाने की संभावना के साथ, बची हुई टीमों में से सिर्फ 5 टीमें ही खेलों में जगह बना पाएंगी. बता दें कि, क्रिकेट आगामी ओलंपिक खेलों में शामिल होने वाले 5 नए खेलों में से एक है. आईओसी ने बेसबॉल/सॉफ्टबॉल, फ्लैग फुटबॉल, लैक्रोस (सिक्स) और स्क्वैश के साथ 2023 में एलए28 खेलों के लिए क्रिकेट को शामिल करने को मंजूरी दी थी.

एलए 2028 ओलंपिक में कंपाउंड तीरंदाजी का होगा डेब्यू, भारत की मेडल जीतने की बढ़ीं उम्मीदें

नई दिल्ली(एजेंसी)। कंपाउंड तीरंदाजी आगामी 2028 लॉस एंजिल्स खेलों में ओलंपिक में पदार्पण करने के लिए पूरी तरह तैयार है, एक ऐसा खेल जिसमें भारत पदक जीतने की अपनी संभावनाओं को तलाशेगा. भारत ने तीरंदाजी में कभी ओलंपिक पदक नहीं जीता है - एक ऐसा खेल जिसमें उसके कंपाउंड तीरंदाजों ने हाल के वर्षों में अपने रिकर्व साथियों को लगातार पछाड़ दिया है. ओलंपिक खेलों में अब मौजूदा 5 रिकर्व स्पर्धाओं: मेंस सिंगल्स, विमेंस सिंगल्स, पुरुष टीम, महिला टीम और मिक्सड टीम के अलावा एक कंपाउंड मिक्सड टीम पदक स्पर्धा भी होगी. भारत के सबसे सफल कंपाउंड तीरंदाज अभिषेक वर्मा ने विश्व कप स्टेज 1 में टीम कांस्य जीतने के बाद फ्लोरिडा से कहा, हम इस दिन का लंबे समय से इंतजार कर रहे थे. यह निश्चित रूप से हमारी ओलंपिक पदक की उम्मीदों को बहुत बढ़ावा देगा. वर्मा, जो इस खेल के एक अनुभवी खिलाड़ी हैं और 16 साल पहले विश्व कप में डेब्यू करने के बाद से भारतीय ध्वज को ऊंचा उठा रहे हैं ने कहा, उम्मीद है कि भारत के लिए तीरंदाजी का पहला ओलंपिक पदक कंपाउंड सेक्शन से आएगा. वर्मा ने विश्व कप में मिश्रित टीम स्पर्धा में अकेले 2 स्वर्ण, 2 रजत और 6 कांस्य पदक जीते हैं - वही फॉर्मेट जो अब लॉस एंजिल्स खेलों में शामिल होगा. वर्मा, जो विश्व तीरंदाजी एथलीट समिति के सदस्य भी हैं ने कहा, यह निराशाजनक था जब कंपाउंड तीरंदाजी ओलंपिक में शामिल होने की अपनी पिछली बोलियों में चूक गई, लेकिन हमने कभी उम्मीद नहीं खोई. उन्हें यह भी उम्मीद है कि 2032 ओलंपिक तक कंपाउंड तीरंदाजी में तीनों स्पर्धाएं शामिल होंगी - व्यक्तिगत, टीम और मिश्रित. वर्मा ने इस बात पर जोर दिया कि सामूहिक सफलता पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए. उन्होंने कहा, हम भारत के ओलंपिक मिशन को बढ़ावा देने के लिए अपने रिकर्व तीरंदाजों के साथ मिलकर काम करेंगे. आखिरकार, हम एक ही सपने वाली एक टीम हैं.

अदाणी समूह के विझिनजाम पोर्ट ने भारतीय जलक्षेत्र में अब तक के सबसे बड़े कंटेनर जहाज का किया स्वागत

तिरुवनंतपुरम(एजेंसी)। अदाणी पोर्ट्स एंड एसईजेड लिमिटेड द्वारा विकसित और संचालित विझिनजाम इंटरनेशनल सीपोर्ट ने बुधवार को दुनिया के सबसे बड़े और सस्टेनेबल कंटेनर जहाजों में से एक एमएससी तुर्किये का स्वागत किया। यह भारत के समुद्री उद्योग के लिए एक ऐतिहासिक घटना रही। यह किसी भी भारतीय बंदरगाह पर इस जहाज का पहला आगमन है। 399.9 मीटर लंबाई, 61.3 मीटर चौड़ाई और 33.5 मीटर गहराई में फैले एमएससी तुर्किये में 24,346 ट्वेंटी-फुट इक्विवेलेंट यूनिट (टीईयू) की विशाल क्षमता है, जो इसे भारतीय बंदरगाह पर बर्थ करने वाला सबसे बड़ा कंटेनर जहाज बनाता है। मेडिटेरेनियन शिपिंग कंपनी (एमएससी) द्वारा संचालित और लाइबेरियाई फ्लैग के तहत पंजीकृत, यह जहाज ईंधन-कुशल, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार और समुद्री इंजीनियरिंग में बेहतरीन इनोवेशन का प्रतिनिधित्व करता है। यह मील का पत्थर विझिनजाम की एक प्रमुख वैश्विक ट्रांसशिपमेंट हब के रूप में बढ़ती स्थिति को पुष्ट करता है, जो रणनीतिक रूप से प्रमुख पूर्व-पश्चिम अंतरराष्ट्रीय शिपिंग मार्ग से केवल 10 समुद्री मील (19 किमी) की दूरी पर स्थित है। बंदरगाह का 20 मीटर का प्राकृतिक ड्राफ्ट इसे व्यापक ड्रेजिंग के बिना अल्ट्रा-लार्ज कंटेनर वेसल (यूएलसीवी) को अकोमोडेट करने की अनुमति देता है। यह ऐतिहासिक डॉकिंग सितंबर 2024 में एमएससी क्लाउड गिरार्डेट द्वारा रिकॉर्ड-सेटिंग कॉल के बाद हुई है, जिसने अपनी 24,116 टीईयू क्षमता के साथ पिछले बेंचमार्क को बनाए रखा था। एमएससी तुर्किये ने अब उस रिकॉर्ड को भी पीछे छोड़ दिया है। विझिनजाम भारत का पहला मेगा ट्रांसशिपमेंट कंटेनर टर्मिनल है, जो एडवांस ऑटोमेशन, स्टेट ऑफ द आर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर और रैपिड वेसल टर्नअराउंड क्षमताओं से लैस है। चरण 1 वर्तमान में 1 मिलियन टीईयू का समर्थन करता है, जिसमें 2028 तक 5.5 मिलियन टीईयू का लक्ष्य रखने वाली विस्तार योजनाएं हैं। एपीएसईजेड के पास बंदरगाह को विकसित करने और संचालित करने के लिए केरल सरकार के साथ 40 साल की रियायत है।

सैमसंग ने भारत में पहली बार ग्लासेस-फ्री 3D और 4K 240Hz OLED ओडिसी गेमिंग मॉनिटर्स लॉन्च किए

गुरुग्राम: सैमसंग, भारत के सबसे बड़े कंज्यूकमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड, ने आज ओडिसी गेमिंग मॉनिटर्स के 2025 लाइन-अप की उपलब्धता की घोषणा की। इसमें क्रांतिकारी ग्लासेस-फ्री ओडिसी 3D, उद्योग का पहला 4K 240Hz ओडिसी ओएलईडी G8, और बेहद शानदार कर्व्ड ओडिसी G9 शामिल हैं। ये मॉनिटर गेमिंग को मजेदार और शानदार बनाने के लिए डिजाइन किए गए हैं, साथ ही ये गेमर्स, कंटेंट क्रिएटर्स और प्रोफेशनल्स की जरूरतों को पूरा करते हैं जो बेहतरीन विजुअल क्वॉलिटी चाहते हैं। नया 27 इंच का ओडिसी 3D (G90XF मॉडल) भारतीय बाजार के लिए एक बड़ा बदलाव लाने वाला है, क्योंकि ये बिना चश्मे के 3D गेमिंग का अनोखा अनुभव देता है। 27 इंच और 32 इंच के आकार में उपलब्ध, ओडिसी ओएलईडी G8 (G81SF मॉडल) दुनिया का पहला 4K ओएलईडी मॉनिटर है जिसने 240Hz रिफ्रेश रेट के साथ उद्योग में एक नया मानक स्थापित किया है। ओडिसी G9 (G91F मॉडल) 49 इंच के डुअल क्यूमएचडी डिस्प्ले और 1000क्र कर्व्ड स्क्रीन के साथ एक बेजोड़ अल्ट्रा-वाइड अनुभव प्रदान करता है। यह 32:9 या 21:9 गेम खेलते समय उच्च-गुणवत्ता के विजुअल्स दिखाता है। पुनीत सेठी, वाइस प्रेसिडेंट, एंटरप्राइज़ बिजनेस, सैमसंग इंडिया ने कहा, सैमसंग में, हमारा लक्ष्य है कि सबसे आधुनिक डिस्प्ले टेक्नोरलॉजी को सभी के लिए आसान बनाया जाए और भारतीय ग्राहकों को दुनिया की बेहतरीन तकनीक दी जाए। ओडिसी 3D, ओडिसी ओएलईडी G8 और ओडिसी G9 मॉनिटर्स की पेशकश के साथ, हम न सिर्फ दुनिया की पहली तकनीक को भारत ला रहे हैं, बल्कि गेमर्स के लिए मजेदार अनुभव, तेज स्पीरड और शानदार विजुअल क्वॉलिटी को भी नए स्तर तक पहुंचा रहे हैं।

शब्द सामर्थ्य -014

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं
1. जल छिड़कना, राजा के सिंहासन रोहन का अनुष्ठान 4. मवाद, पीब (अं) 6. जाति 7. हाथ से धीरे-धीरे ठोंकना, थपकना 9. कमल रोग से ग्रसित व्यक्ति (उ.) 11. किरण 12. छौंक, तड़का 13. दुखदायी, दर्दनाक 15. विवाद, कहासुनी, तकरार 18. समूह, दल, समुदाय 19. दण्ड 20. काजल 22. अनाथ, निराश्रित, यतीम 24. दुख, शोक 25. एक प्रसिद्ध सफेद पक्षी, वक 26. राज्य का विदेश में प्रतिनिधि।

ऊपर से नीचे
1. विचित्र, अद्भूत 2. अंदर ही अंदर हानि पहुंचाना 3. वचन, वाणी 4. गुमराह, जो रास्ते से भटक गया हो 5. मुलायम सिंह की पार्टी का संक्षिप्त नाम 8. ब्रह्मापुत्र एक प्रसिद्ध देवर्षि 10. कार्यावली, करस्तानी, प्रशंसनीय कार्य 13. दासी, नौकरानी, बांदी, गुलाम स्त्री 14. प्रवृत्त करने वाला, प्रेरित करने वाला, आविष्कारक 16. श्रीकृष्ण के बड़े भाई, हलधर 17. सामान (उ.) 21. संसार, दुनिया 22. समय, चमेली की जाति का एक पौधा और फूल 23. पराजित, परास्त।

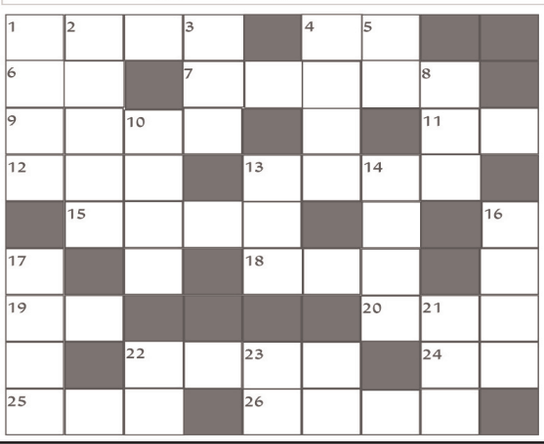

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 013 का हल

दि	क्र	त	■	आ	सा	न	■	आ
ल	■	मी	■	खि	■	सी	ख	ना
■	म	ज	बू	र	■	ह	■	जा
स	र्द	■	■	का	■	त	रा	ना
र	■	■	■	र	वि	■	ह	■
प	ह	ना	ना	■	ना	रा	ज	■
ट	■	■	क	शि	श	■	नी	ला
■	र	■	■	का	■	रा	■	य
खा	ति	र	दा	री	■	त	क्ष	क

सू- दोकू क्र.014

	6	3		8		1		4
8			3		4		7	
	4			5		8		
3		8			1		4	
	1			4		9		7
		4			2		1	
1				3		4		8
	8		2		9		3	
		9		1		2		5

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.013 का हल

6	7	9	2	4	5	3	1	8
2	1	8	3	7	6	9	5	4
7	6	4	5	2	8	1	3	9
3	8	1	6	9	7	2	4	5
9	2	5	4	1	3	8	6	7
8	3	7	9	6	4	5	2	1
5	4	2	8	3	1	7	9	6
1	9	6	7	5	2	4	8	3
4	5	3	1	8	9	6	7	2

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शनिवार 12 अप्रैल 2025

आईटीआई, डिप्लोमा और इंजीनियरिंग के छात्रों के लिए प्लेसमेंट कैंप 12 अप्रैल को

रायपुर (विश्व परिवार)। शासकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्था, सङ्कू में आईटीआई, डिप्लोमा और इंजीनियरिंग उत्तीर्ण छात्रों के लिए विक्टोरिया ऑटो प्राइवेट लिमिटेड की ओर से 12 अप्रैल को सुबह 11 बजे प्लेसमेंट कैंप का आयोजन किया गया है।

नन्द कुमार साहू ने संभाला रायपुर विकास प्राधिकरण का कार्य

आरडीए के पुनर्गठन के बाद बने छठवें अशासकीय अध्यक्ष

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष पद पर आज नन्द कुमार साहू ने छठवें अशासकीय अध्यक्ष के रुप में कार्यभार संभाल लिया। इसके पूर्व उन्होंने अपने कक्ष में पूजा-अर्चना की गई। इस मौके पर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री अरुण साव, आवास एवं पर्यावरण मंत्री ओ.पी. चौधरी, सांसद बृजमोहन अग्रवाल, रायपुर पश्चिम के विधायक राजेश मूणत, विधायक सुनील कुमार सोनी, रायपुर उत्तर के विधायक पुरन्दर मिश्रा, धरसींवा के विधायक अनुज शर्मा, छत्तीसगढ़ विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल, छत्तीसगढ़ भवन एवं अन्य सन्निर्माण कर्मकार क्ल्याण मंडल के अध्यक्ष राम प्रताप सिंह छत्तीसगढ़ नागरिक आपूर्ति निगम के अध्यक्ष संजय श्रीवास्तव, छत्तीसगढ़ स्टेट इंडस्ट्रीयल डेवलेपमेंट कार्पोरेशन लिमिटिड के अध्यक्ष राजीव अग्रवाल, छत्तीसगढ़ नि:शक्तजन वित्त एवं विकास निगम के अध्यक्ष लोकेश कावडिया, छत्तीसगढ़ राज्य वक्फ बोर्ड के अध्यक्ष डॉ. सलीम राज छत्तीसगढ़ राज्य तेलघानी विकास बोर्ड के अध्यक्ष जितेन्द्र कुमार साहू, छत्तीसगढ़ लौहशिल्पकार विकास बोर्ड के अध्यक्ष प्रफुल्ल विश्वकर्मा, छत्तीसगढ़ राज्य अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष अमरजीत सिंह छाबड़ा, नगर पालिक निगम रायपुर के सभापति सूर्यकांत राठौर, रायपुर विकास प्राधिकरण के पूर्व अध्यक्ष श्याम बैस, पूर्व उपाध्यक्ष रमेश ठाकुर, नगर निगम रायपुर के की पार्षद और पूर्व पार्षद सहित कई पदाधिकारी और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

चुनौतियों का सामना कर आरडीए को अच्छी स्थिति में पहुंचाएंगे : ओ.पी. चौधरी

कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से चर्चा में आवास एवं पर्यावरण मंत्री ओ. पी. चौधरी ने कहा कि आज से हम नन्दकुमार साहू के नेतृत्व में हम आरडीए के माध्यम से रायपुर की विकास योजनाओं को आगे बढ़ाने का कार्य करेंगे। तमाम चुनौतियों का सामना करने के बाद भी हम आरडीए को एक अच्छी स्थिति में पहुंचाएंगे।

कार्यक्रम में रायपुर विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्यपालन अधिकारी कुन्दन कुमार ने स्वागत भाषण दिया तथा प्राधिकरण की गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम के बाद सैक्ड़ों लोगों ने नन्द कुमार साहू को माला पहना कर उनके साथ फोटो ली। इस अवसर पर प्राधिकरण की अतिरिक्त सीईओ श्रीमती शिम्मी नाहिद सहित कई अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे।

नमामि महावीर, जैन यूनिटी कॉन्सर्ट का हुआ भव्य आयोजन

भिलाई (विश्व परिवार)। भगवान महावीर स्वामी जन्म कल्याणक के अवसर पर बधाई हो इंडिया इवेंट कंपनी के प्रोपराइटर निशांत जैन एवं जैन युवा संघ, भिलाई की अभूतपूर्व पहल से दुर्ग भिलाई में छत्तीसगढ़ का अब तक का सबसे बड़ा जैन यूनिटी लाइव कॉन्सर्ट का आयोजन भगवान महावीर जन्म कल्याणक समिति दुर्ग के सहयोग से गंज मंडी दुर्ग में हुआ।

भगवान महावीर के संदेशों, जियो और जीने दो, जीव दया, जैन एकता, शाकाहार आदि अनेक सामाजिक संदेशों को जन जन तक पहुंचाने के लिए एवं युवाओं को युवा तरीके से धर्म से जोड़ने के उद्देश्य से यह कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें इंदौर से पधारे प्रसिद्ध जैन भजन गायक दो भाई ऋषभ और संभव जैन ने आकर समां बांधा।

जैन एकता कॉन्सर्ट में छत्तीसगढ़ के दुर्ग, भिलाई, रायपुर, राजनांदगांव, भाटापारा, धमतरी, राजिम, डोंगरगढ़, डोंगरगांव के अलावा महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश के अनेक शहरों से श्रोता एवं श्रावक आकर भगवान महावीर के भजनों की भक्ति झूमते रहे।

जैन एकता की अद्भुत मिसाल पेश करते हुए लगभग पांच हज़ार से भी अधिक श्रोताओं में इस लाइव कॉन्सर्ट का भरपूर आनंद लेते हुए भगवान महावीर के जन्म कल्याणक का उत्सव मनाया।

कार्यक्रम की शुरुआत भगवान महावीर के तैल चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन कर हुआ। उसके उपरांत डोंगरगढ़ से पधारे भजन गायक श्री निखिल जैन एवं टीम के द्वारा मंगलाचरण किया गया। अंतरराष्ट्रीय भारतनाट्यम नृत्यांगना कुमारी नैनिका जैन कासलीवाल ने अपने साथियों के साथ मिलकर अद्भुत भाव भंगिमाओं द्वारा भगवान के पूर्व भवों को प्रस्तुत किया। बधाई हो इंडिया इवेंट कं. के द्वारा समस्त प्रायोजकों का सम्मान किया गया एवं कार्यक्रम की अभूतपूर्व सफलता के लिए सभी को धन्यवाद एवं आभार व्यक्त किया गया।

भगवान महावीर जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में

जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन परिवार के जे.बी.एन. अचीवर्स रायपुर चैप्टर ने पर्यावरण संरक्षण के लिए किया अनोखा आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। जैन इंटरनेशनल ट्रेड ऑर्गनाइजेशन (जीतो) परिवार के जे.बी.एन. अचीवर्स रायपुर चैप्टर ने भगवान महावीर जन्मोत्सव के उपलक्ष ने एक हजार आठ पौधों का वितरण कपड़ों के थैले में रखकर किया। यह पर्यावरण संरक्षण के लिए किया अनोखा आयोजन रहा।

प्रधानमंत्री मोदी जी के नौ संकल्पों में से एक संकल्प पेड़ लगाव को पूरा करने में जे.बी.एन. अचीवर्स की टीम ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस आयोजन में टीम ने न केवल पौधों का वितरण किया, बल्कि पेड़ को रखरखाव के बारे में भी बताया ताकि उस पेड़ को सही समय पर बड़ा किया जा सके।

इस आयोजन के कोऑर्डिनेटर राजीव जैन और लोकेश चंद्रकांत जैन रहे, जिन्होंने बताया कि इस प्रोग्राम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण और पौधों के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। जीतो परिवार के अध्यक्ष श्री तिलोकचंद जी बरड़िया और जीतो की पूरी टीम मौजूद रही। इसके अलावा जे.बी.एन. अचीवर्स के हेड टेबल और जे.बी.एन. अचीवर्स की पूरी टीम भी मौजूद रही।

इस आयोजन को एक सराहनीय कार्य माना जा रहा है, जिसमें जे.बी.एन. अचीवर्स की टीम ने पर्यावरण संरक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है। इस आयोजन से लोगों को पौधों के महत्व और उनकी देखभाल की जिम्मेदारी के बारे में जागरूक किया गया है।

आयोजन के मुख्य बिंदु- एक हजार आठ पौधों का वितरण कपड़ों के थैले में रखकर किया गया। प्रधानमंत्री मोदी जी के नौ संकल्पों में से एक संकल्प पेड़ लगाव को पूरा करने में जे.बी.एन. अचीवर्स की टीम ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। जीतो परिवार के अध्यक्ष और जे.बी.एन. अचीवर्स की टीम मौजूद रही।

इस आयोजन से लोगों को पौधों के महत्व और उनकी देखभाल की जिम्मेदारी के बारे में जागरूक किया गया है।

राज्यपाल श्री डेका द्वारा राजा चक्रधर सिंह सम्मान के लिए असम नाट्य सम्मेलन को दी गई आर्थिक सहायता

रायपुर। भारतीय कला एवं संगीत को प्रोत्साहन एवं संरक्षण देने के उद्देश्य से राज्यपाल श्री रमेन डेका द्वारा अपने स्वेच्छानुदान मद से असम नाट्य सम्मेलन जिला नौगांव असम को 2 लाख रूपये की आर्थिक सहायता स्वीकृत की गई है। इस राशि को एक संयुक्त फिक्स डिपाजिट खाते में रख कर उससे प्राप्त ब्याज से प्रतिवर्ष 'छत्तीसगढ़ के राजा चक्रधर सिंह' के नाम पर उत्कृष्ट अभिनेता को सम्मानित किया जाएगा। उल्लेखनीय है कि रायगढ़ के राजा चक्रधर सिंह ने भारतीय संगीत एवं नृत्य कला को एक नई पहचान दी। उन्होंने कला के क्षेत्र में रायगढ़ घराना नाम से एक नई शैली की स्थापना की। उनके नाम पर दिया जाना वाला यह सम्मान असम नाट्य सम्मेलन जैसी संस्था को संबल प्रदान करेगा।

पुलिस उप महानिरीक्षक-एएसपी ने ली जनरल परेड की सलामी

रायपुर (विश्व परिवार)। आज पुलिस लाईन रायपुर में आयोजित जनरल परेड के दौरान पुलिस उप महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा परेड की सलामी ली गई। जनरल परेड में जिला रायपुर के पुलिस राजपत्रित अधिकारी, थाना/लाईन/यातायात/डॉग स्वायड/एम टी शाखा के अधिकारी/कर्मचारी सहित विशिष्ट व्यक्तियों के निवास स्थल में लगे गार्ड कमाण्डर सम्मिलित थे। सलामी पश्चात् जनरल परेड के दौरान उपस्थित अधिकारी/ कर्मचारियों के वेशभूषा का निरीक्षण करने के साथ ही एम टी शाखा के वाहनों का भी निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान अच्छी वेश भूषा धारण करने वाले 15 अधिकारी/ कर्मचारी के उत्साहवर्धन के लिए पुरूस्कार एवं निर्धारित वेश भूषा संतोषजनक न पाये जाने वाले अधि0/ कर्म को चेतावनी दिया गया। पुलिस उप महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा गार्ड कमाण्डरों को आवश्यक दिशा निर्देश व समझाईश देने के साथ ही समस्त अधि./कर्म. को अनुशासित रहने के निर्देश दिये गये। इसके पश्चात् बिना किसी सूचना के कर्त्तव्य से अनुपस्थित रहने वाले 09 कर्मचारियों की ओ. आर. पेशी लिया जाकर प्रकरण का निराकरण भी पुलिस लाईन परेड ग्राउण्ड में किया गया एवं 17 अधिकारियों/ कर्मचारियों की गुजारिश सुनी गयी। जनरल परेड अंतर्गत पुलिस के व्यवसायिक ज्ञान तथा क्षमता का विकास हो इस दृष्टि से उनकी बारिकियों को बताया गया। जनरल परेड में नगर पुलिस अधीक्षक आजाद चौक अमन कुमार झा(भा.पु.से.), नगर पुलिस अधीक्षक सिविल लाईन अजय कुमार (भा.पु.से.), नगर पुलिस अधीक्षक कोतवाली केशरी नंदन नायक, नगर पुलिस अधीक्षक नवा रायपुर करण उके, उप पुलिस अधीक्षक आई.यू.सी.ए.डब्ल्यू रूचि वर्मा, उप पुलिस अधीक्षक लाईन निलेश द्विवेदी, रक्षित निरीक्षक अनीश सारथी, थानों के थाना प्रभारीगण सहित कुल 270 अधिकारी/ कर्मचारीगण सम्मिलित हुये।

भारतीय सिन्धू सभा छत्तीसगढ़ का सिन्धी भाषा दिवस एवं डॉ. हेडगेवार जयंति कार्यक्रम सिंधू पैलेस में हुआ सम्पन्न

रायपुर (विश्व परिवार)। दिनांक 10 अप्रैल भारतीय सिन्धू सभा छत्तीसगढ़ का सिन्धी भाषा दिवस एवं डॉ. हेडगेवार जयन्ति पर सिंधू पैलेस शंकर नगर रायपुर में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में व्याख्यान के मुख्य वक्ता नागपूर से पधारे डॉ श्री विनोद आसूदानी रहे। नेत्रहीन (सूरदास) श्री आसूदानी जी ने अपने ओजस्वी उदबोधन से मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने श्रद्धेय डॉ हेडगेवार जी द्वारा संस्थापित राष्ट्रीयस्वयंसेवक संघ की परिकल्पना का सम्पूर्ण सार स्वरूप प्रस्तुत किया।

कायक्रम के मुख्य अतिथि श्री उदयलाल शादानी जी थे मुख्य वक्ता श्री डॉ विनोद आसुदानी नागपुर, श्री साई मुरलीधर उदासी थे अध्यक्षता श्री लधाराम नैनवानी जी ने की विशेष अतिथि के रूप में श्री रामू रोहरा महापौर धमतरी, सी ए श्री चेतन तारवानी जी, महिला विंग राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमती विनीता भावनानी प्रदेश अध्यक्ष श्रीमती सुषमा जेठानी जी नेहा अश्पलिया, नवनिर्वाचित पार्षद एवं एमआईसी सदस्य श्री अमर गिदवानी, पार्षद एवम जो 10 अध्यक्ष श्री सचिन मेघानी जी छत्तीसगढ़ सिंधी पंचायत के अध्यक्ष श्री महेश दरयानी जी बीएसएस संरक्षक श्री अशोक नैनवानी जी मुरली केवलानी अशोक माखीजा, प्रहलाद शादीजा,राजकुमार बजाज राजेश वासवानी, राजेश पोपटानी, राजेश गुरनानी, प्रताप पोपटानी, टीकम नागवानी आदि उपस्थित थे मंच संचालन बीएसएस प्रदेश महासचिव मुरलीधर शादीजा ने किया और आभार श्री टीकम नागवानी शहर अध्यक्ष ने किया।

भविष्य निधि कार्यालय रायपुर में क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त (छ.ग.), जयवदन इंगले ने किया पदभार ग्रहण

रायपुर (विश्व परिवार)। केन्द्रीय कार्यालय के आदेशानुसार कर्मचारी भविष्य निधि संगठन के क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर में श्री जयवदन इंगले, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-1 ने आज दिनांक 11.04.2025 को नए क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त वर्ग-1 के रूप में पदभार ग्रहण किया।

एक औपचारिक कार्यक्रम के दौरान क्षेत्रीय कार्यालय, रायपुर के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने नए भविष्य निधि आयुक्त के पदभार ग्रहण करने पर उनका स्वागत करते हुए श्री जयवदन इंगले के मुख्यालय एवं अन्य कार्यालयों के कार्य अनुभव का लाभ लेते हुए इस कार्यालय को सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित करने के संबंध में शुभकामनाएँ दी। इस अवसर पर श्री जयवदन इंगले, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-1 का कार्यालय के अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा स्वागत किया गया एवं श्री जयवदन इंगले, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त को कर्मचारी भविष्य निधि के क्षेत्रीय कार्यालय की कार्यप्रणाली एवं अन्य जानकारियों से अवगत कराया गया साथ ही कार्यालय कर्मचारियों से परिचय भी करवाया गया जिसमें श्री जयवदन इंगले ने कर्मचारियों के साथ चर्चा की तथा कार्य निष्पादन में आने वाली समस्याओं के संबंध में जानकारी ली। अपने संक्षिप्त उद्बोधन में श्री जयवदन इंगले ने पूर्व आयुक्त श्री अभिषेक कुमार के कार्यकाल में प्राप्त सफलताओं को आधार बनाकर क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर में संसाधनों को मजबूत करते हुए अंशदाताओं को बेहतर सेवाएँ देने के संबंध में आशा व्यक्त की और सहयोग एंव सहकारिता से कार्यालय को सफलता की नवीन ऊंचाईयों पर ले जाने के संबंध में विश्वास व्यक्त किया।

इस अवसर पर श्री गौरव डोगरा, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त-।। एवं श्री सुनील कुमार, श्री सुधांशु निकेतन मिश्रा, सहायक भविष्य निधि आयुक्त एवं श्री विकास शुक्ल, सहायक निदेशक (राजभाषा) उपस्थित थे।

समीक्षा बैठक में पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने नगर पालिका पंडरिया अंतर्गत विकास कार्यों की समीक्षा की

बैठक में विधायक ने अधोसंरचना निर्माण और विकास कार्यों को गुणवत्तापूर्ण एवं तय समय पर पूर्ण करने दिए निर्देश

पंडरिया (विश्व परिवार)। आज जनपद पंचायत सभागार, पंडरिया में विधायक भावना बोहर ने विभिन्न विभागों द्वारा किये जा रहे कार्यों की समीक्षा की और नगर में हो रहे विकास कार्यों और अधोसंरचना निर्माण को गुणवत्तापूर्ण एवं तय समय में पूरा करने तथा जनता द्वारा प्राप्त शिकायतों का त्वरित निराकरण करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया। इसके साथ ही उन्होंने केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं के क्रियान्वयन की भी समीक्षा की और जनता को उसका लाभ समय पर दिलाने एवं पूर्ण पारदर्शिता के साथ कार्य करने के लिए अधिकारियों को दिशा-निर्देश दिए। उन्होंने गर्मी को देखते हुए नगर में पर्याप्त जल आपूर्ति एवं बिजली आपूर्ति के प्रशासन द्वारा की गई तैयारियों का भी जायजा लिया एवं जनता को बिजली व पानी को लेकर किसी भी प्रकार की समस्या न हो इसलिए व्यवस्थाओं को भी दुरुस्त करने की बात अधिकारियों को कही है।

इस अवसर पर पंडरिया विधायक भावना बोहरा ने कहा कि माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय जी के कुशल नेतृत्व में छत्तीसगढ़ विकास के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। हमारे पंडरिया विधानसभा में भी पांच वर्षों तक कांग्रेस के शासनकाल में जो विकास कार्य ठप्प पड़े थे वह अब तीव्र गति से हो रहें हैं। सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है तो जनता की मूलभूत सुविधाओं का विस्तार भी उनकी आकाँक्षाओं के अनुरूप किया जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में अधोसंरचना विकास से लेकर सौन्दर्यीकरण व प्रकाश व्यवस्था की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित की जा रही है। ऐसे में जनता को इन सुविधाओं एवं विकास कार्यों का लाभ सुचारू एवं गुणवत्तापूर्ण मिल सके इसके लिए समय-समय पर कार्यों की समीक्षा करना एवं उनके सुचारू क्रियान्वयन हेतु एक जनप्रतिनिधि के रूप में उनका अवलोकन करना हमारी जिम्मेदारी बनती है। उन्होंने बताया कि पंडरिया नगर को एक आदर्श नगर बनाने के लिए हम प्रतिबद्ध हैं, विगत 15 महीनों में पंडरिया नगर के लिए लगभग 24 करोड़ रुपए के विकास कार्यों की सौगात डबल इंजन भाजपा सरकार के सुशासन में मिली है। वर्षों से नगरवासियों की बहुप्रतीक्षित मांग हरिनाला पुल निर्माण के लिए 76 लाख रुपए से अधिक की स्वीकृति मिली है और निर्माण कार्य भी शुरू हो चुका है। नए अवास्सों की स्वीकृति मिली है महतारी वंदन योजना के माध्यम से नगर की लगभग 5000 महिलाओं को प्रतिमाह 1000 रुपए की आर्थिक सहयता मिल रही है, लगभग 2400 लोगों को आवास मिले हैं, 5200 से अधिक राशन कार्ड वितरित किया गया है, लगभग 5300 लोगों को आयुष्मान योजना से 5 लाख रुपए तक नि:शुल्क उपचार मिल रहा है। इन सभी योजनाओं का सफल क्रियान्वयन एवं पूर्ण पारदर्शिता के साथ जमीनी स्टार पर उनका सञ्चालन किया जा रहा है जिससे नगरवासियों को लाभ मिल रहा है।

भावना बोहरा ने कहा कि डबल इंजन भाजपा सरकार के नेतृत्व में पंडरिया नगर को विकसित एवं समृद्ध बनाने के लिए लगातार अधोसंरचना निर्माण, सड़कों का निर्माण, सड़क, बिजली, पानी की पर्याप्त व्यवस्था की जा रही है।

युवाओं के लिए रोजगार का सुनहरा अवसर, जॉब फेयर 15 अप्रैल को

रायपुर। जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र द्वारा स्थानीय शिक्षित बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए 15 अप्रैल 2025 को जिला रोजगार एवं स्वरोजगार मार्गदर्शन केन्द्र, रायपुर में सुबह 11 बजे से दोपहर 02 बजे तक जॉब फेयर का आयोजन किया जाएगा। इस जॉब फेयर के माध्यम से निजी क्षेत्र के नियोजक मोनेट टॉक बिजनेस एवं पीवीआर इनोक्स लिमिटेड रायपुर द्वारा 12वी उत्तीर्ण, स्नातक (बी.कॉम) और आईटीआई (इलेक्ट्रॉनिक) आवेदकों की भर्ती सेल्स जॉब, बैक ऑफिसर, टेली कॉलर, सर्विस एसोसिएट, टेक्निशियन एवं एक्सिक्यूटिव एकाउंट आदि के 34 पदों पर रू. 15, 000/- से 26, 000/- प्रतिमाह वेतनमान पर भर्ती होगी। इस जॉब फेयर में सम्मिलित होने योग्य एवं इच्छुक आवेदक निर्धारित तिथि एवं स्थल पर अपने बॉयोडाटा /आधार कार्ड एवं शैक्षणिक, तकनीकी योग्यता के प्रमाण पत्रों की छायाप्रति के साथ उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगे।

रेलवे स्टेशनो पर स्टेशन एवं ट्रेन में समस्याओं के निस्तारण हेतु जनदर्शन कार्यक्रम का आयोजन

रायपुर एवं दुर्ग स्टेशनों पर रेलवे स्टेशन एवं ट्रेन में समस्याओं के निस्तारण हेतु जनदर्शन कार्यक्रम का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। यात्रियों की समस्याओं को सुनने और रेलवे सेवाओं को और अधिक प्रभावशाली बनाने के उद्देश्य से आज रायपुर रेल मंडल के मुख्य रेलवे स्टेशन रायपुर एवं दुर्ग में जनदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अवधेश कुमार त्रिवेदी सहित अन्य रेलवे अधिकारी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के दौरान यात्रियों, वेंडर्स, कुलियों, पार्सल लीज होल्डर्स ने अपनी शिकायतें और सुझाव अधिकारियों के समक्ष रखी। प्रमुख मुद्दों में रायपुर स्टेशन पर दो मोबाइल चोरी की घटनाओं का जिक्र आया आवेदकों ने बताया कि उनके मोबाइल चोरी हुए उसे पर तुरंत संज्ञान लेते हुए डार्क एरिया में भी सीसीटीवी लगाने एवं ट्रेनों में आरपीएफ जीआरपी की गश्त बढ़ाने एवं टीटीई स्टाफ को भी निर्देशित किया कि वह चोरी की घटनाओं के प्रति सतर्क रहे।

महिलाओं को स्टेशनों पर बने अक्षिता सेफ में सुरक्षा की अनुभूति रहे। पुरुषों का बैठना उसमें वर्जित है इसका शक्ति से पालन हो इसके लिए रेलवे सुरक्षा बल सहित संबंधितों को निर्देशित किया गया। साथ ही ट्रेनों की समयपालनता के लिए रेल परिचालन के अधिकारियों से चर्चा की गई, थर्ड जेंडर की समस्या, मोबाइल चोरी की घटना, स्टेशन एवं ट्रेनों में साफ-सफाई, पेयजल की व्यवस्था, खानपान सेवाओं की गुणवत्ता जैसे विषय शामिल रहे।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक ने यात्रियों को आश्वस्त किया उनकी शिकायतों पर गंभीरतापूर्वक विचार कर तत्काल आवश्यक कदम उठाए संबंधित अधिकारियों से तुरंत वास्तविक स्थिति की जानकारी ली कार्य में कोताही के लिए संबंधितों को डांट भी लगाई। उन्होंने बताया कि रेलवे यात्रियों की संतुष्टि के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है और इस तरह के जनदर्शन कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाएंगे। जनदर्शन कार्यक्रम के अंत में अधिकारियों ने यात्रियों का धन्यवाद किया और कहा कि यात्रियों से प्राप्त फीडबैक रेलवे सेवाओं में सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354